वार्षिक रिपोर्ट 1977-78

1.01 भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद की यह वित्त वर्ष 1977-78 के लिए नवीं वार्षिक रिपोर्ट है।

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद का गठन

1.02 भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् की स्थापना भारत सरकार द्वारा सन् 1969 में की गई थी, यह एक स्वायत संगठन है। इसके 26 सदस्य हैं : एक अध्यक्ष, 16 समाज विज्ञानी, सरकार के छः प्रतिनिधि (सभी सरकार द्वरा मनोनीत) और एक सदस्य-सचिव (सरकार की स्वीकृति से भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् द्वारा नियुक्त)।

1.03 आलोच्य वर्ष के दौरान, (1) प्रोफेसर सत्य भूषण, (2) प्रोफेसर वी० बी० सिंह, (3) प्रोफेसर सुरजीत सिन्हा, (4) डा० वी० ए० पाई पनन्डीकर, (5) प्रोफेसर तपस मजुमदार, और (6) प्रोफेसर एस० मंजूर आलम की कार्यविधि समाप्त हो गई। इन रिक्त स्थानों पर सरकार ने, (1) प्रोफेसर (कुमारी) अलू जे० दस्तूर, (2) प्रोफेसर बलवंत रेड्डी, (3) प्रोफेसर एम० एन० श्रीनिवास, (4) प्रोफेसर मोहम्मद शफी, (5) डा० डी० के० दत्त, और (6) श्री आर० के० पटिल की नियुक्ति की।

1.04 आलोच्य अवधि के दौरान, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् के नेतृत्व में दो प्रमुख परिवर्तन हुए। प्रोफेसर एम० एस० गोरे ने, जो 11 जून 1971 को अध्यक्ष बने थे, जुलाई 1977 में अपना कार्यभार छोड़ दिया जबकि प्रोफेसर रजनी कोठारी ने भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद के अध्यक्ष का कार्यभार संभाल लिया तथा श्री जे० पी० नायक जो 1969 में परिषद की शुरूआत से ही इसके सदस्य-सचिव थे, 31 मार्च 1978 को सेवानिवृत हो गए।

1.05 प्रोफेसर एम० एस० गोरे, जो एक विख्यात समाज विज्ञानी हैं, काफी लम्बे समय तक, प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद से सम्बद्ध रहे। वह, वी० के० आर० वी० राव समिति के सदस्य थे, जिसने भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद की स्थापना की सिफारिश की थी। यह पहली परिषद (1969-72) के सदस्य भी थे, तथा भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद के प्रथम

अध्यक्ष, प्रोफेसर डी० आर० गाडगिल की मृत्यु हो जाने पर, अध्यक्ष पद पर नियुक्त किए गए। अध्यक्ष के रूप में अपनी लम्बी कार्य अवधि के दौरान उन्होंने परिषद को एक स्वतन्त्र, कल्पनाशील और गतिशील नेतृत्व प्रदान किया तथा इसके कार्यक्रमों को वर्तमान स्तर तक विकसित करने में काफी सहायता दी। भारत में समाज विज्ञान समुदाय तथा भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, देश में समाज विज्ञान अनुसंधान के विकास में उनके महत्वपूर्ण योगदान को बहुत सम्मान और आभार के साथ याद रखेगी।

1.06 आलोच्य वर्ष के दौरान, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद की शुरूआत से ही इससे सदस्य-सचिव श्री जे० पी० नायक ने भी (31 मार्च 1978 को) अपना कार्यभार छोड़ दिया। परिषद् ने 21 मार्च 1978 को हुई अपनी बैठक में एक प्रस्ताव पारित किया और श्री नायक के प्रति सम्मान प्रकट किया तथा परिषद् की स्थापना करने और अपनी "गहरी कर्त्तव्यनिष्ठा" "कठिन परिश्रम और दक्षता" तथा शैक्षिक विकास और संस्था निर्माण में विस्तृत रुचि" द्वारा परिषद् के शुरू के दिनों में इसे सुदृढ़ और आत्मनिर्भर बनाने के लिए उनके महत्वपूर्ण योगदान की अत्यंत सराहना की। इस बात की सराहना की गई कि श्री नायक ने भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् के लिए राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता दिलाने में पर्याप्त सफलता प्राप्त की। अन्त में, परिपद् ने यह उल्लेख किया कि श्री नायक ने परिषद् को उसके परिपक्व स्तर तक ला दिया है जबकि इसे नई तथा महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उन्होंने एक ऐसी पद्धति का निर्माण भी किया है जो इन चुनौतियों का सामना कर सके। उनके महान योगदान की दिशा में सही कदम है।

1.07 भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् का गठन, 31 मार्च 1978 तक की स्थिति, परिशिष्ट I में दिखाया गया है।

कार्यक्रम

1.08 भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् के कार्यक्रम निम्न-लिखित 9 प्रमुख श्रेणियों के अन्तर्गत आते हैं :

(1) अनुसंधान प्रोन्नति;
(2) प्रलेखन;
(3) प्रकाशन;
(4) आंकड़े अभिलेखागार;

(5) अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग तथा क्षेत्र अध्ययन;
(6) अनुसंधान संस्थान;
(7) क्षेत्रीय केन्द्र;
(8) अन्य एजेंसियों के साथ सहयोग; और
(9) अन्य कार्यक्रम ।

अध्याय II से X में इनके बारे में कुछ विस्तार से चर्चा की गई है ।

परामर्श भूमिका

1.09 आलोच्य अवधि के दौरान, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् ने भारत सकार को, उन विदेशी समाज विज्ञानियों के 18 प्रस्तावों के संबंध में परामर्श दिया जो भारत में अध्ययन करना चाहते थे ।

आयकर से छूट

1.010 आयकर अधिनियम 1961 की धारा 35 (i) (iii) के अन्तर्गत किन संस्थाओं/संगठनों को आयकर से छूट दी जाए, इस सम्बन्ध में सरकार की सलाह देने के लिए, भारत सरकार ने, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् को एक निर्धारित प्राधिकारी के रूप में नामजद किया है । भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् की सिफारिशों के आधार पर, आलोच्य अवधि के दौरान, 21 संस्थाओं/संगठनों को ऐसी छूट स्वीकृत की गई । इन संस्थाओं/संगठनों की सूची परिशिष्ट II के दी गई है ।

प्रशासन और वित्त

1.11. 31 मार्च 1978 को, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् के कुल स्टाफ में 187 पद थे, जिनका ब्यौरा परिशिष्ट III में दिया गया है । इनमें से 18 पद रिक्त थे ।

1.12 आलोच्य अवधि के दौरान, परिषद् तथा इसकी वित्तीय समितियों की बैठकों की संख्या निम्नलिखित तालिका में दी गई है :

	बैठकों की संख्या
1. भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्	5
2. नीति योजना तथा प्रशासन समिति	3
3. अनुसंधान समिति	8

4. अनुसंधान संस्थान विषयक समिति	3
5. प्रलेखन सेवाओं तथा सनुसंधान सूचना से संबंधित समिति	1
6. क्षेत्र अध्ययन संबंधी समिति	3
7. अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग संबंधी समिति	2
8. आंकड़े अभिलेखागार संबंधी समिति	1

1.13 आलोच्य अवधि के दौरान विदेश भेजे गए भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् के सदस्यों और स्टाफ का ब्यौरा परिशिष्ट IV में दिया गया है।

1.14 आलोच्य अवधि के दौरान, भारतीय साकाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् को सभी साधनों से कुल प्राप्तियां 1,07,53,192 रुपये की थी। सभी मदों पर होने वाला कुल खर्च 1,07,53,192 रुपये था। इसके अतिरिक्त भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् को फोर्ड फाउन्डेशन से 11,91,849 रुपये का अनुदान प्राप्त हुआ।

1.15 इसके अतिरिक्त, समाज विज्ञानों के क्षेत्र में अनुसंधान कर रहीं राष्ट्रीय महत्व की अनुसंधान संस्थाओं के लिए अनुरक्षण और विकास अनुदान के वास्ते भारत सरकार से 60 लाख रुपये प्राप्त हुए। इस मद पर होने वाला खर्च 60 लाख रुपये था।

1.16 मेसर्स ठाकुर वैद्यनाथ अय्यर एण्ड कम्पनी द्वारा जंचा हुआ सामान्य लेखाविवरण, रिपोर्ट के अन्त में दिया गया है। वर्ष के दौरान प्राप्तियों और अदायगियों का सारांश-विवरण नीचे दिया गया है :

प्राप्तियों और अदायगियों का सारांश-विवरण

(1977-78)

प्राप्तियां

विभागीय प्राप्तियां	राशि	जोड़
	रु०	रु०
केन्द्रीय सरकार स्वास्थ्य योजना	288	
वाहन पेशगी की वसूली	5230	
त्यौहार पेशगी की वसूली	2975	
जोड़		8,493

भारत सरकार से प्राप्त सहायक अनुदान

योजनेतर	34,48,000	
योजनागत	65,00,000	
		99,48,000

अन्य स्रोतों से आय

अन्य एजेंसियों की ओर से पेशगी	70,635	
समूल्य प्रकाशन	31,841	
प्रकाशकों से रायल्टी	1,27,188	
यूनियन केटेलाग की बिक्री	21,643	
सरकारी प्रकाशनों की बिक्री	10,822	
फोटो-प्रतियां प्राप्तियां	3,316	
विविध प्राप्तियां, उदाहरणार्थ खर्च न हुए सहायक-अनुदान का बकाया, पिछले वर्षों की अदायगियां	2,31,254	
समनुरूपी अनुदान	2,00,000	
महाराष्ट्र सरकार भवन की बिक्री (क्षेत्रीय केन्द्र, कलकत्ता)	1,00,000	
		7,96,699
कुल जोड़		1,07,53,192*

*इस राशि में फोर्ड फाउन्डेशन अनुदान तथा भारत सरकार से अनुसंधान संस्थाओं के लिए प्राप्त 60 लाख रुपये का अनुदान शामिल नहीं है ।

अदायगियां

क्रम सं०	लेखा शीर्ष	योजनेतर	योजनागत	जोड़
क—	प्रशासन**	9,80,000	4,29,516	14,09,556
ख—	अनुसंधान अनुदानφ	5,33,855	33,13,252	38,47,107
ग—	अनुसंधान फैलोशिप	6,79.964	9,55,451	16,35,415
घ—	प्रशिक्षण	—	2,60,295	2,60,295
ङ—	अध्ययन केन्द्र	—	64,902	64,902
च—	क्षेत्रीय केन्द्र	3,94,983	8 01,155	11,96,138
छ—	प्रलेखन	3,55,179	4,68,187	8,23,366
ज—	आंकड़े अभिलेखागार	1,04,141	40,477	1,44 618
झ—	प्रकाशन	3,01,972	5,75,649	8,77,621
	अन्य कार्यक्रम	—	3,17,209	3,17,209
ट—	ऋण जमा और पेशगी	3,228	12,050	15,278
ठ—	फर्नीचर तथा उपस्कार	—	66,906	66,906
ड—	पुस्तकालय पुस्तकें	94,821	—	94,821
		34,48,143	73,05,049	1,07,53,192*

*इस राशि में भारत सरकार से अनुसंधान संस्थाओं के लिए प्राप्त अनुदान रु० 60 लाख के संबंध में की गई अदायगियां शामिल नहीं हैं।

**इस राशि में किराया रु० 1,30,222/- जो कि अग्रिम राशि के रूप में आई० आई० पी० ए० नई दिल्ली को दिया गया है भी शामिल है।

φइस राशि में अग्रिम राशि जो कि अनुसंधान सर्वेक्षण रु० 62,708/- के रूप में दी गई है भी शामिल है।

II

अनुसंधान प्रौन्नति

2.01 भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् का सबसे महत्वपूर्ण कार्य समाज विज्ञानों में अनुसंधान को प्रोत्साहित करना है। इस कार्य को पूरा करने के लिए अनेक योजनाएं चलाई जा रही है।

समाज विज्ञानों में अनुसंधान का सर्वेक्षण

2.2 भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् द्वारा अपनी स्थापना के प्रारम्भ में शुरू की गई इस एक प्रमुख परियोजना का उद्देश्य, समाज विज्ञानों में (मोटे तौर पर 1969 की अवधि तक) अनुसंधान का एक सर्वेक्षण आयोजित करना था ताकि प्रवृत्तियों तथा अनुसंधान कमियों का पता लगाया जा सके, प्राथमिकताएं निर्धारित की जा सकें और भविष्य में विशेष प्रोत्साहन प्रयासों के लिए कार्यक्रम चुने जा सकें। 1976-77 के अन्त तक, मनोविज्ञान (एक खण्ड), भूगोल (एक खण्ड), समाज विज्ञान तथा समाज मानव विज्ञान (तीन खण्ड)' लोक प्रशासन (दो खण्ड), प्रबन्ध (कुल दो खण्डों में से एक), लेखा सिद्धान्त (एक खण्ड), जनांकिकी (एक खण्ड) और अर्थशास्त्र (कुल सात खण्डों में से चार खण्ड) में सर्वेक्षण, प्रकाशित किए गए।

2.03 वर्ष के दौरान, अनुसंधान सर्वेक्षणों के निम्नलिखित खण्ड प्रकाशित किए गए :

(1) अर्थशास्त्र में अनुसंधान का सर्वेक्षण, खण्ड-I—पद्धतियां तथा तकनीक।

(2) प्रबन्ध में अनुसंधान का सर्वेक्षण, खण्ड II

वर्ष के अन्त में, अर्थशास्त्र के दो खण्ड तथा राजनीति विज्ञान में एक खण्ड छप रहे थे और राजनीति विज्ञान में चार खण्डों को अन्तिम रूप दिया जा रहा था।

अनुसंधान सर्वेक्षण : द्वितीय श्रृंखला

2.04 भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् ने, पांचवीं और छठी पंचवर्षीय योजनाओं के लिए अपने कार्यक्रम के एक भाग के रूप में, इस योजना को 1969 से आगे जारी रखने तथा अनुसंधान सर्वेक्षणों की द्वितीय

शृखला निकालने का निर्णय किया। 1977-78 के अन्त तक पूरे हुए कार्य का ब्योरा इस प्रकार है :

(1) **मनोविज्ञान :** पिछले सर्वेक्षण के क्रम में दूसरे खण्ड का सम्पादन कार्य प्रोफेसर उदय पारीक द्वारा किया गया है। इसे छपने के लिए प्रैस में भेज दिया गया है।

(2) **भूगोल :** पिछले सर्वेक्षण के क्रम में दूसरे खण्ड (1969-72) का सम्पादन कार्य प्रोफेसर मूनिस रज़ा द्वारा किया गया है। यह भी छप रहा है। इस के तीसरे खन्ड का सम्पादन (1973-75) प्रोफेसर मंजूर आलम द्वारा किया जा रहा है और उसे अन्तिम रूप दिया जा रहा है।

(3) **समाज विज्ञान और समाज मानव-विज्ञान :** समाज विज्ञान और समाज मानव-विज्ञान में अनुसंधान के सर्वेक्षण के अगले खण्डों (दो अथवा तीन) के लिये कार्य आरम्भ हो गया है। इस का सम्पादन कार्य प्रोफेसर एस० सी० दूबे द्वारा किया जायेगा है।

(4) **लोक प्रशासन :** प्रोफेसर कुलदीप माथुर को दूसरे सर्वेक्षण का सम्पादक नियुक्त किया गया है।

2.05 भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् और वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद् के संयुक्त तत्वाधान में, 1968 से 1977 तक की अवधि के लिए भौतिक भूगोल में अनुसंधान का एक सर्वेक्षण प्रारम्भ किया गया है। इस प्रमुख क्षेत्र के अन्तर्गत विभिन्न उप-क्षेत्रों के लिए अनेक दस्तावेज तैयार किए गए हैं। आशा है कि रिपोर्ट को 1978-1979 में अन्तिम रूप दे दिया जाएगा और छपने के लिए प्रेस में भेज दिया जाएगा।

अन्य अनुसंधान सर्वेक्षण :

2.06 भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् ने, "भारतीय परिस्थितियों के विशेष संदर्भ में असमानता" पर कुछ अध्ययन कार्य आरंभ किया है। इस सर्वेक्षण के समन्वयकर्ता, दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर एन्ड्रे बेटेली हैं।

2.07 "स्वतन्त्रता के पश्चात् की अवधि के विशेष संदर्भ में भारत में शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन" पर शुरू किया गया एक अन्य सर्वेक्षण प्रोफेसर एम०एस०ए० राव (दिल्ली विश्वविद्यालय के) द्वारा पूरा किया गया।

2.08 सागर विश्वविद्यालय के अपराध विज्ञान तथा न्यायालयीय विज्ञान विभाग के डा० डी० पी० जटर के पर्यवेक्षण में, "अपराधविज्ञान" पर अनुसंधान में एक सर्वेक्षण आरंभ किया गया है।

अनुसंधान परियोजनाएं :

2.09 अनुसंधान परियोजनाएं (अध्यापकों को पुरस्कार सहित), भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् द्वारा अनुसंधान प्रौन्नति के लिए प्रयुक्त किए जाने वाले प्रमुख साधन है ।

2.10 आलोच्य अवधि के प्रारंभ में, समाज विज्ञानियों से प्राप्त 114 अनुसंधान-प्रस्ताव विचाराधीन थे । वर्ष के दौरान 381 नए प्रस्ताव प्राप्त हुए । इन कुल 495 अनुसंधान प्रस्तावों में से 154 को स्वीकृति दी गई (ब्योरे परिशिष्ट VI में दिए गए है), 239 को विभिन्न कारणों से निकाल दिया गया अथवा रिकार्ड कर दिया गया और वर्ष के अन्त में 102 प्रस्ताव विचाराधीन थे ।

2.11 31 मार्च 1978 तक स्वीकृत अनुसंधान परियोजनाओं की कुल संख्या 862 है । वर्ष के अन्त तक की उनकी प्रगति नीचे दी गई है :

(1) **आर०पी०सी० से हस्तान्तरित अनुसंधान परियोजनाएं :** कुल 45 परियोजनाओं में से परिषद् ने सभी मामलों में अन्तिम रिपोर्टें स्वीकार कर ली है ।

(2) **1969-70 के दौरान स्वीकृत अनुसंधान परियोजनाएं :** स्वीकृति 13 परियोजनाओं में से, परिषद् को 10 मामलों में अन्तिम रिपोर्टें प्राप्त हुई हैं । दो रिपोर्टों की प्रतिक्षा है तथा एक परियोजना को रद्द कर दिया गया है ।

(3) **1970-71 के दौरान स्वीकृत अनुसंधान परियोजनाएं :** स्वीकृत 74 परियोजनाओं में से 58 मामलों में परिषद् को अन्तिम रिपोर्ट प्राप्त हो गई है । पचास रिपोर्टों को स्वीकार कर लिया गया है तथा आठ मामलों में, रिपोर्ट के मसौदों की जांच व उन्हें संशोधित किया जा रहा है, सात परियोजनाओं को रद्द कर दिया गया है । नौ मामलों में अभी रिपोर्ट प्राप्त होनी बाकी है ।

(4) **1971-72 के दौरान स्वीकृत अनुसंधान परियोजनाएं :** स्वीकृत 103 परियोजनाओं में से, 52 रिपोर्टें प्राप्त हो गई हैं ; 48 रिपोर्टों को परिषद् ने स्वीकार कर लिया है ; आठ रिपोर्टों की जांच व उन्हें संशोधित किया जा रहा है; और पांच परियोजनाओं को रद्द कर दियो गया है/वापस ले लिया गया है । 42 परियोजनाओं के संबंध में रिपोर्टों की प्रतीक्षा है ।

(5) **1972-73 के दौरान स्वीकृत अनुसंधान परियोजनाएं :** स्वीकृत परियोजनाओं में से 59 रिपोर्टों को स्वीकार कर लिया गया है,

आठ रिपोर्टों की जांच व उन्हें संशोधित किया जा रहा है और सात परियोजनाओं को रद्द कर दिया गया है/वापस ले लिया गया है। 30 परियोजनाओं के संबंध में अभी रिपोर्टों की प्रतीक्षा है।

(6) **1973-74 के दौरान स्वीकृत अनुसंधान परियोजनाएं :** स्वीकृत 88 परियोजनाओं में से 34 रिपोर्टों को स्वीकार कर लिया गया है, 15 रिपोर्टों की जांच व उन्हें संशोधित किया जा रहा है और दो परियोजनाओं को रद्द कर दिया गया है। 37 परियोजनाओं के संबंध में रिपोर्टों की प्रतीक्षा की जा रही है।

(7) **1974-75 के दौरान स्वीकृत अनुसंधान परियोजनाएं :** स्वीकृत 69 परियोजनाओं में से 19 रिपोर्टों को स्वीकार कर लिया है, 14 रिपोर्टों की जांच और उन्हें संशोधित किया जा रहा है और चार परियोजनाओं को रद्द कर दिया गया है। शुरू नहीं किया गया है। 32 परियोजनाओं के संबंध में अभी रिपोर्टें प्राप्त नहीं हुई हैं।

(8) **1975-76 के दौरान स्वीकृत अनुसंधान परियोजनाएं :** स्वीकृत 105 परियोजनाओं में से, सात रिपोर्टों को स्वीकार कर लिया गया है, 13 रिपोर्टों की जांच और उन्हें संशोधित किया जा रहा है और तीन परियोजनाओं को रद्द कर दिया गया है। शुरू नहीं किया है। 82 परियोजनाओं के संबंध में रिपोर्टों की प्रतीक्षा है।

(9) **1976-77 के दौरान स्वीकृत अनुसंधान परियोजनाएं :** स्वीकृत 107 परियोजाओं में से, दो रिपोर्टों को स्वीकार कर लिया गया है, आठ रिपोर्टों की जांच व उन्हें संशोधित किया जा रहा है और तीन परियोजनाओं को रद्द कर दिया गया है। शुरू नहीं किया गया है। शेष 94 परियोजनाओं पर कार्य चल रहा है।

1977-78 के दौरान स्वीकृत अनुसंधान परियोजनाओं के सम्बन्ध में अभी कुछ कहना जल्दबाजी होगी।

यह पता चलेगा कि अनुसंधान परियोजनाओं की प्रगति सन्तोषजनक नहीं है और इस संबंध में काफी कार्य किया जा सकता है। इस स्थिति को सुधारने के लिए आवश्यक उपचारात्मक कदमों के बारे में भारतीय समाजविज्ञान अनुसंधान परिषद् सक्रिय रूप से विचार कर रही है।

फैलोशिप

2.12 किए गए वित्तीय निवेश के आधार पर, अनुसंधान परियोजनाओं के बाद, अनुसंधान प्रोन्नति के एक साधन के रूप में, फैलोशिपों का दूसरा नम्बर है ।

2.13 आलोच्य वर्ष के दौरान, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् ने फैलोशिपों के कार्यक्रम का काफी विस्तार किया । कुल 213 फैलोशिप प्रदान की गई, जिनमें निम्नलिखित शामिल हैं :-

राष्ट्रीय फैलोशिप	5
वरिष्ठ फैलोशिप	20
युवा समाज विज्ञानियों कौ फैलोशिप	11
डाक्ट्रेट उपाधि उपरान्त फैलोशिप	2
डाक्टोरल फैलोशिप (सामान्य)	60
अल्पावधि डाक्टोरल फैलोशिप	17
डाक्टोरल छात्रों को फुटकर अनुदान	81
भारतीय समाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् के अनुसंधान संस्थानों में डाक्टोरल फैलोशिप	12
उपरोक्त में एम० फिल० वृत्तिकाएं	5
जोड़	213

इन सभी फैलोशिपों के ब्योरे (जिनमें अनुसंधान संस्थानों में शुरू की गई पांच एम० फिल० वृत्तिकाएं तथा 12 डाक्टोरल फैलोशिप शामिल हैं) परिशिष्ट VII में दिए गए हैं ।

2.14 भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् की स्थापना से लेकर अब तक स्वीकृत की गई कुल फैलोशिपों की संख्या पृष्ठ 12 पर तालिका में दी गई हैं :—

2.15 वर्ष के दौरान प्रदान की गई डाक्टोरल फैलोशिपों के लिए चयन में, उम्मीदवारों का दिल्ली में साक्षात्कार करके प्रक्रियाओं के चयन में सुधार करने और प्रादेशिक दृष्टि से फैलोशियों का और अधिक न्यायपूर्ण वितरण सुनिश्चित करने के लिए, एक सावधानीपूर्वक प्रयास किया गया, जिसमें कुछ सफलता प्राप्त हुई ।

	1969-74	1974-75	1975-76	1976-77	1977-78	जोड़
1. राष्ट्रीय फैलोशिप	5	2	—	3	5	15
2. वरिष्ठ फैलोशिप	39	6	7	14	20	86
3. डाक्ट्रेट उपाधी उपरान्त फैलोशिप	7	4	2	9	2	24
4. युवा समाज विज्ञानियों के लिए फैलोशिप	—	—	—	—	11	11
5. डाक्टोरल फैलोशिप	182	50	56	71	67	426
6. अल्पावधि डाक्टोरल फैलोशिप	—	—	7	20	17	44
7. फुटकर अनुदान	67	23	54	80	81	305
8. एम० फिल वृत्तिकाएं	—	—	20	3	5	28
9. यात्रा अनुदान	8	2	3	2	—	15
10. भारत में कार्य करने के लिए विदेशी समाज विज्ञानियों को फैलोशिप	10	2	1	1	—	14
जोड़	318	89	150	203	208	968

प्रायोजित अनुसंधान कार्यक्रम :

2.16 पांचवीं पंचवर्षीय योजना में सम्मिलित मूल प्रस्ताव, प्रायोजित अनुसंधान के 15 कार्यक्रमों का विकास करने के संबंध में था। तथापि, पांचवीं योजना के प्रथम तीन वर्षों के अनुभव से पता चला कि यह एक महत्वाकांक्षी लक्ष्य था और भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् के पास इस प्रयोजन के लिए वित्तिय अथवा संगठनात्मक साधन उपलब्ध नहीं हैं। इसके अतिरिक्त, यह भी सन्देहपूर्ण था कि क्या सभी 15 चुने हुए क्षेत्रों में अन्तर-विषयक आधार पर, बड़े पैमाने पर व्यापक कार्यक्रम शुरू करना संभव हो सकेगा। इसलिए, केवल कुछेक कार्यक्रमों पर, किसी भी हालत में पांच अथवा छः से अधिक नहीं, प्रयासों को केन्द्रित करने का निर्णय किया गया। इस बात को ध्यान में रखते हुए, पहले से शुरू किए गए कुछ प्रायोजित अनुसंधान कार्यक्रमों को बन्द करने अथवा उन्हें अन्य कार्यक्रमों के साथ मिलाने का निर्णय किया गया तथा यह भी निर्णय किया गया कि अगले वर्ष के लिए प्रस्तावित प्रायोजित अनुसंधान के पांच नए कार्यक्रमों में मन्द गति से कार्य किया जाए। आलोच्य वर्ष के दौरान घटनाओं की इसी नीति को ध्यान में रखते हुए व्याख्या की जाएगी।

2.17 पिछले वर्षों के दौरान शुरू किए गए प्रायोजित अनुसंधान के 10 कार्यक्रमों की प्रगति का अगले अनुच्छेदों में संक्षेप में उल्लेख किया गया है :

(1) **निर्धनता और बेरोजगारी :** निर्धनता और बेरोजगारी संबंधी सलाहकार समिति का पुनर्गठन किया गया और प्रोफेसर एम० एल० दांतवाला को इसका अध्यक्ष मनोनीत किया गया। वर्ष दौरान समिति की दो बैठकें हुई और दो परियोजनाएं स्वीकृत की गईं :

(क) सुरेश तेन्दुलकर, भारतीय सांख्यिकीय संस्थान, नई दिल्ली, 'एन० आलटरनेटिव प्लान विद दि बेसिक सोशल आब्जेक्टिव आफ एनस्यूरिंग दि मिनिमम लेवल्स आफ लिविंग टू दि पूअर एज दि कौर'।

(ख) टाटा समाज विज्ञान संस्थान, बम्बई और अम्बेदकर संस्थान, बम्बई, 'दि स्टडी आफ नेचर आफ पावर्टी इन ग्रेटर बाम्बे' (बम्बई नगर निगम के सहयोग से, जो कार्यक्रम की आधी लागत वहन के लिए सहमत हो गया)

कार्यक्रम के अन्तर्गत पहले स्वीकृत अध्ययनों में से तीन पूरे हो गए और रिपोर्टें प्राप्त हो गईं। वे हैं :

(क) पी० के० बर्धन, दिल्ली अर्थशास्त्र स्कूल, दिल्ली विश्वविद्यालय, 'कलेक्शन एण्ड एनेलिसिस आफ दि एन० एस० एस० 27थ राउन्ड डाटा आफ रूरल बंगाल'।

(ख) निखिलेश भट्टाचार्य, अशोक रूद्र और पी० बर्धन, सामाजार्थिक अनुसंधान संस्थान, कलकत्ता, 'नेचर आफ लैन्ड लेबर एण्ड क्रेडिट कान्ट्रेक्ट्स एण्ड दि रूरल पूअर (ईस्ट इण्डिया)'।

(ग) पी० बर्धन, अशोक रूद्र और टी० एन० श्रीनिवासन, दिल्ली अर्थ-शास्त्र स्कूल, दिल्ली विश्वविद्यालय, 'दि नेचर आफ लेण्ड लेबर एण्ड क्रेडिट कंट्रोल्स एण्ड० दि रूरल पूअर (नार्थ-वेस्ट इण्डिया)'।

इन रिपोर्टों की साइक्लोस्टाइल प्रतियां कराकर बड़ी संख्या में समाज विज्ञानियों को उनकी टिप्पणियां जानने तथा सूचनार्थ भेजी गईं।

यह निर्णय किया गया कि इस कार्यक्रम को एक अलग कार्यक्लाप के रूप में जारी रखना अधिक उपयोगी नहीं होगा। इसके स्थान पर, यह अनुभव किया गया कि सलाहकार समिति की यह सिफारिश स्वीकार करना अधिक उपयोगी होगा कि भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् को पश्चिम क्षेत्रीय केन्द्र, बम्बई में निर्धनता और बेरोजगारी के लिए एक प्रलेखन केन्द्र स्थापित करना चाहिए। इस प्रयोजन के लिए कदम उठाए जा रहे हैं।

(2) **समेकित क्षेत्र विकास :** यह निर्णय किया गया कि पहले स्वीकृत 11 परियोजनाओं के निष्कर्ष उपलब्ध होने तक कोई नया अध्ययन स्वीकृत न किया जाए और इस कार्यक्रम को ग्रामीण विकास संबंधी कार्यक्रम के साथ मिला दिया जाए।

(3) **सार्वजनिक वितरण पद्धति :** वर्ष के दौरान कोई नया अध्ययन स्वीकृत नहीं किया गया। तथापि, डा० कल्पना बर्धन द्वारा तैयार किए गए निबन्ध को, जिसे डा० तमराजाक्शी द्वारा संशोधित किया गया था, बड़े पैमाने पर परिचालित किया गया। यह निबंध, दो क्षेत्रीय सेमिनारों के लिए, एक अहमदाबाद में आयोजित पश्चिम क्षेत्र के लिए और दूसरा कलकत्ता में आयोजित पूर्वी क्षेत्र के लिए, बुनियादी आधार नोट था। उत्तरी तथा दक्षिण क्षेत्रों के लिए भी ऐसी ही कार्यशालाएं आयोजित करने के प्रयास किए जा रहे हैं। इसके बाद अखिल भारतीय कार्यशाला का आयोजना किया जाएगा जिसके बाद कार्रवाई करने के लिए सरकार को अन्तिम रिपोर्ट प्रस्तुत की जाएगी।

पहले स्वीकृत दो अध्ययन पूरे किए गए और अन्तिम रिपोर्टें प्राप्त हो गईं। ये हैं :—

(क) पी० के० सुब्बा राव, दिल्ली विश्वविद्यालय, "सम एस्पेक्ट्स आफ मार्केटिंग एण्ड पब्लिक प्रोक्योरमेंट आफ पेड़ी इन ए० पी०।"

(ख) एम० वी० नादकर्णी, सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन के लिए संस्थान, बंगलौर, "बिहेवियर आफ मार्केटड सरप्लस इन महाराष्ट्र।"

(4) **विज्ञान और प्रौद्योगिकी के सामाजिक पहलू :** कोई नई परियोजना स्वीकृत नहीं की गई। एक अलग कार्यकलाप के रूप में कार्यक्रम को बन्द करने और भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् के कार्य को, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी को ग्राम विकास के सामान्य कार्यक्रम के अन्तर्गत ग्राम विकास के लिए प्रयुक्त करने तक ही सीमित करने का भी निर्णय किया गया।

(5) **शिक्षा :** यह निर्णय किया गया कि इस कार्यक्रम को एक अलग कार्यकलाप के रूप में बन्द कर दिया जाए और इसे "विकास में विकल्प" कार्यक्रम के अन्तर्गत चलाया जाए।

(6) **कानून और सामाजिक परिवर्तन :** यह निर्णय किया गया कि एक अलग कार्यकलाप के रूप में इस कार्यक्रम को बन्द कर दिया जाए और कानूनी पद्धति की समस्याओं का निपटान "विकास में विकल्प" नामक सामान्य कार्यक्रम के अन्तर्गत किया जाए।

(7) **सरकारी पद्धति और विकास :** वर्ष 1976-77 में शुरू किए गए कार्यक्रम को वर्ष के दौरान जारी रखा गया और निम्नलिखित परियोजनाएं स्वीकृत की गईं :—

(क) वी० ए० पाई पनन्डीकर, नीति अनुसंधान केन्द्र, नई दिल्ली, 'ब्यूरोक्रेटिक स्किल एण्ड केपेबिलिटीज इन डवलपमेंट।'

(ख) एच० जे० पाण्डया, दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय, सूरत, 'ब्यूरोक्रेटिक एटीट्यूड टूवर्ड्स सिटिजन पार्टिसपेशन इन डवलपमेंट।'

(ग) वाई० बी० दाम्ले, पूना विश्वविद्यालय, 'सिटिजन पार्टिसिपेशन इन रूरल डवलपमेंट एण्ड अरबन एडमिनिस्ट्रेशन : ए कम्पेरेटिव एनेलिसिस।'

(घ) एच० आर० चतुर्वेदी ; विकासशील समाज के अध्ययन के लिए केन्द्र, दिल्ली, 'लोकल ब्यूरोक्रेसी एण्ड डवलपमेंट : ए कम्पेरेटिव स्टडी आफ सिटिजन पार्टिसिपेशन इन टू स्टेट्स।'

(8) **शहरीकरण में अध्ययन :** वर्ष 1976-77 में शुरू किया गया कार्यक्रम 1977-78 में जारी रखा गया और निम्नलिखित परियोजनाएं शुरू की गईं :

(क) देव राज, शहरी मामलों का राष्ट्रीय संस्थान, नई दिल्ली, 'स्टीड आफ मास्टर प्लान्स आफ टाउन्स एण्ड सिटीज इन इण्डिया।'

(ख) देव राज, शहरी मामलों का राष्ट्रीय संस्थान नई दिल्ली, 'स्टडी आफ न्यू एण्ड एक्सपेंडिंग टाउन्स।'

(ग) विक्टर डी सूजा, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़, 'स्टडी आफ न्यू एक्सपेंडिंग टासन्स : ए केस स्टडी आफ चण्डीगढ़'

(घ) ए० रमेश, मद्रास विश्वविद्यालय, मद्रास, 'स्टडी आफ न्यू एक्स-पेंडिंग टाउन्स, ए केस स्टडी आफ नेयवेली'

(ङ) आर० आर० दास, यादवपुर विश्वविद्यालय, कलकत्ता, 'स्टडी आफ न्यू एण्ड एक्सपेंडिंग टाउन्स : ए केस स्टडी आफ चितरंजन'

उपरोक्त परियोजानाएं शुरू करने के अलावा, निम्नलिखित को शहरी अध्ययन में फैलोशिप प्रदान की गई :

(क) श्रीमती रत्ना नायडु भारतीय अर्थशास्त्र संस्थान, हैदराबाद ।

(ख) वी० पोथना, आन्ध्र विश्वविद्यालय, वाल्टेयर ।

(ग) के० एन० गोपी, भारतीय प्रबंध संस्थान, बंगलौर ।

(घ) डब्ल्यू० एस० के० फिलिप्स, इन्दौर, सामाजिक कार्य स्कूल, इन्दौर ।

परामर्श समिति ने, कुछ चुने हुए शहरों में गरीबों के लिए मकानों के अध्ययन के लिए एक बड़ी परियोजना तैयार की है । इसे, 1978-79 के दौरान एक बड़ी परियोजना के रूप में शुरू करने का प्रस्ताव है । इसी बीच, एक अलग कार्यकलाप के रूप में इस कार्यक्रम को बन्द करने का प्रस्ताव है।

(9) **एशिया में क्षेत्र अध्ययन** : यद्यपि क्षेत्र अध्ययन संबंधी अनुसंधान प्रस्तावों के लिए मदद जारी रहेगी, तथापि प्रायोजित अनुसंधान के एक अलग कार्यकलाप के रूप में इस कार्यक्रम को बन्द करने का निर्णय किया गया है । इसके स्थान पर, यह निर्णय किया कि भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् के प्रयासों को भारतीय सामाजिक विज्ञानियों और तीसरे विश्व के देशों में उनके प्रतिपक्षियों के बीच (एशिया तथा हमारे निकटवर्ती देशों पर विशेष जोर देते हुए) सम्पर्क प्रोत्साहित करने पर केन्द्रित किया जाए ।

(10) महिलाओं की समस्याओं के संबंध में अध्ययन : प्रायोजित अनुसंधान का यह सर्वोत्तम विकसित कार्यक्रम है । आलोच्य वर्ष के दौरान इसका प्राथमिकता के आधार पर और विकास किया गया । इस वर्ष की कुछ प्रमुख उपलब्धियां नीचे दी गई है :—

(क) अनुसंधान परियोजनाएं : निम्नलिखित नई परियोजनाएं स्वीकृत की गई :

(i) बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, जम्मू और कश्मीर, उड़ीसा, तमिलनाडु और हिमाचल प्रदेश राज्यों में

राजनीतिक प्रक्रिया (विधान सभा चुनाव, 1977) में महिलाओं की भूमिका की दस राज्य रूपरेखाएं । ये क्रमश: बागेन्दु गांगुली, अली अशरफ, हेमलता स्वरूप, बुध राज, शान्ति स्वरूप, इकबाल नारायण, बलबीर सिंह, एस० एन० रथ, एस० सुब्रमण्यम और वी० आर० मेहता द्वारा तैयार की गई ।

(ii) **जोया खालिक, उत्तर प्रदेश में 1977 के चुनावों के दौरान नीचली श्रेणी की महिलाओं का राजनीतिक चित्र ।**

(iii) **वसुधा धगामवर, महिलाएं तथा तलाक : महिलाओं की कानूनी जागरूकता ।**

वर्ष के दौरान निम्नलिखित परियोजनाएं पूरी की गई ।

(i) **के० निश्चल,** 'महिलाओं और लड़कियों की प्रतिष्ठा निर्धारित करने के लिए बच्चों की हास्य पुस्तकों का मूल्यांकन ।'

(ii) पाण्डूरंगम, 'भारत में महिला पुलिस'

(iii) एल० सी० जैन, 'हस्तशिल्पों में महिलाएं'

(ख) महिलाओं की भूमिका और विकास के संबंध में गुट-निरपेक्ष देशों का प्रस्तावित सम्मेलन :

भारत सरकार के अनुरोध पर, गुट-निरपेक्ष देशों के समन्वय ब्यूरो के विदेश मंत्रियों की अप्रैल 1977 में दिल्ली में हुई बैठक में विचार किए जाने के लिए, 'महिलाएं और विकास' पर एक दस्तावेज तैयार किया गया । ब्यूरो भारत द्वारा तैयार किए गए दस्तावेज का स्वागत किया और गुट-निरपेक्ष देशों में एक अनुसंधान तथा सूचना पद्धति कायम करने तथा "विकास में महिलाओं का योगदान" संबंधी विशिष्ट मामले अध्ययनों की सहायता से 1979 में एक सम्मेलन आयोजित करने का निर्णय किया । भारत सरकार ने, परिषद् से, प्रस्तावित सम्मेलन के लिए अध्ययन आयोजित करने और चुने हुए विषयों पर सामग्री तैयार करने का अनुरोध किया । मामला अध्ययन सामग्री का उपयोग करके, "ग्राम विकास और महिलाओं के विकास के लिए राष्ट्रीय नीतियों" के संबंध में कागजात का एक मसौदा तैयार करने के लिए भारत ही उत्तरदायी है । तदनुसार, सम्मेलन के लिए सामग्री प्राप्त करने के वास्ते निम्नलिखित परियोजनाएं तथा दस्तावेजों के प्रारूप तैयार किए गए :

परियोजनाएं

(i) कान्ता आहुजा, अर्थशास्त्र प्रोफेसर, एच० सी० एम० राज्य लोक प्रशासन संस्थान, जयपुर, 'राजस्थान में घरेलू जीवन के आर्थिक कार्यकलापों में महिलाओं का योगदान ।

(ii) विठल राजन, परामर्शदाता, भारतीय प्रशासनिक स्टाफ कालेज, हैदराबाद, 'ग्रामीण महिला कार्यकर्ताओं की आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियों पर कृषि आधुनिकीकरण तथा सिंचाई के प्रभाव का मामला अध्ययन ।'

(iii) एस० डी० सावंत, अनुसंधान अधिकारी, योजना विकास एकक, बम्बई विश्वविद्यालय, 'विकास प्रक्रिया में ग्रामीण महिला श्रमिकों का समेकन ।'

(iv) सुरिन्द्र जेतली, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, कैम्पस, वाराणसी, 'ग्रामीण महिलाओं पर नियोजित सामाजिक परिवर्तन तथा आधुनिकीकरण का प्रभाव ।'

(v) अशोक मित्रा, क्षेत्रीय विकास केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, 'भारतीय अर्थ-व्यवस्था के परम्परागत, आधुनिक, मिश्रित परम्परापत आधुनिक क्षेत्रों में महिलाओं के भाग लेने की पद्धतियां ।'

(vi) के0 सारदामोनी, भारतीय सांख्यिकीय संस्थान, नई दिल्ली, 'बदलते हुए भूमि संबंध तथा महिलाएं ।'

(vii) सच्चिदानन्द, निदेशक, ए० एन० सिन्हा, सामाजिक अध्ययन संस्थान, पटना, 'ग्रामीण बिहार, 1969-72, में 17 गांवों से महिलाओं के संबंध में उपलब्ध आंकड़ों का विश्लेषण ।'

(viii) पी० डी० साइकिया, निदेशक, अग्र आर्थिक अनुसंधान केन्द्र, असम कृषि विश्वविद्यालय, जोरहाट, '(क) जनजातीय महिलाओं की बदलती हुई भूमिका, (ख) असम में भूतपूर्व चाय बागान श्रमिकों की बदलती हुई भूमिका ।'

(ix) लीला गुलाटी, 'मत्स्य विकास परियोजना का महिलाओं पर प्रभाव ।'

(x) कुमुदिनी दाण्डेकर, गोखले राजनीति तथा अर्थशास्त्र संस्थान, पूना, 'रोजगार गारंटी योजना में महिलाओं को रोजगार ।'

दस्तावेज

(i) **महिलाओं पर विकास का जनांकिकीय प्रभाव**-अशोक मित्रा द्वारा

(ii) **महिलाओं पर ग्रामीण विकास का प्रभाव**

(क) भूमि सुधार-आशिष बन्दोपाध्याय द्वारा

(ख) प्रौद्योगिकी का प्रभाव, कल्याण तथा विस्तार सेवाएं—शान्ति चक्रवर्ती द्वारा

(ग) जनजातीय महिलाएं—ज्योति सेन द्वारा

(iii) **राष्ट्रीय विकास नीतियों का प्रभाव**

(क) कानूनी सुधार—एल० सरकार द्वारा

(ख) विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी और व्यावसायिक महिलाएं—क्यू खान तथा ए० दास गुप्ता द्वारा

(ग) **फैलोशिप :** इस कार्यक्रम के अन्तर्गत चार डाक्टोरल फैलोशिपों का पहला वार्षिक पुरस्कार निम्नलिखित को प्रदान किया गया :

(i) टी० ए० हेमाकुमारी, 'ग्रामीण आन्ध्र में महिलाओं के प्रवजन का समाजशास्त्री अध्ययन ।'

(ii) आनंद मीरा सवारा, 'महिलाओं के रोजगार में बदलती हुई प्रवृत्तियां : बम्बई में वस्त्र उद्योग का एक मामला अध्ययन ।'

(iii) सोबिता जैन, 'असम में चाय बागान में महिला श्रमिक'

(iv) मधु किश्वार, 'सुधार आन्दोलनों में महिला संगठनों और संस्थाओं की भूमिका : ब्रह्म समाज, परथना समाज और आर्य समाज द्वारा प्रायोजित संगठनों और संस्थाओं का एक मामला अध्ययन'

परिषद् ने, ग्रामीण विकास में महिलाओं की भूमिका के एक अन्तर-सांस्कृतिक अध्ययन में सहयोग करने का भी निर्णय किया । इस परियोजना में भारत, पाकिस्तान, बंगला देश, श्रीलंका और इन्डोनेशिया शामिल हैं और ससेक्स विश्वविद्यालय के प्रोफेसर स्कारलेट एप्सटीन और उपरोक्त देशों में विश्वविद्यालयों में बीच सहयोग द्वारा संचालित की जा रही है । जहां तक भारत का संबंध है, समाज शास्त्र विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय इस परियोजना में सहयोग कर रहा है और इस अध्ययन में भाग लेने के लिए परिषद ने निम्नलिखित छात्रों को दो फैलोशिप स्वीकृत की हैं : (i) रजनी पालरीवाला ; और (ii) पद्मजा केलकर । इसके अतिरिक्त, "उत्तर बंगाल तथा केरल में चाय बागान उद्योग में महिला श्रमिकों के एक अध्ययन" के लिए, रंजना सेनगुप्ता को एक वर्ष की फैलोशिप प्रदान की गई ।

निम्नलिखित डाक्टोरल छात्रों को फुटकर अनुदान भी दिए गए :

(i) विद्युत महन्ती, अकाल "स्त्री-पुरुष अनुपात और महिलाओं की बदलती हुई व्यावसायिक पद्धति-उड़ीसा" 1891-1921

(ii) अमृता श्रीनिवासन, "मालाकारा समुदाय में विवाह और संबंध पद्धति : तामिलनाडु ।"

(घ) **अन्य कार्यकलाप :** पिछले दो वर्षों के दौरान अध्ययनों से प्राप्त प्रारम्भिक परिणामों की समीक्षा करते हुए, परामर्श समिति ने कुछ असंतोषजनक प्रवृत्तियों को, विशेष रूप से महिलाओं के रोजगार, स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र में, असंतोषजनक प्रवृत्तियों को तुरंत रोकने की सिफारिश करके, भारत सरकार के नोटिस में लाने का निर्णय किया। भारत सरकार को एक ज्ञापन दिया गया और बाद में इसे व्यापक परिचालन के लिए **महिलाओं के स्तर के संबंध में महत्वपूर्ण प्रश्न'** नामक नि:शुल्क प्रकाशन के रूप में प्रकाशित किया गया। परामर्श समिति की सिफारिशों को बड़े पैमाने पर लोगों को उपलब्ध करने, विशेष रूप से निचले स्तर पर लोगों को उपलब्ध करने के लिए दस्तावेज का क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद किया जा रहा है।

उक्त ज्ञापन से, सरकारी स्तर पर भी विचार करने तथा कार्रवाई शुरू करने के लिए बड़ी प्रेरणा मिली है। महिलाओं की समस्याओं पर विचार-विमर्श तथा कार्रवाई शुरू करने के लिए निम्नलिखित कार्य दल गठित किए गए :

(i) योजना आयोग ने, महिलाओं के रोजगार की समीक्षा करने तथा इसमें सुधार के लिए विशिष्ट उपायों की सिफारिश करने के लिए 'महिलाओं के रोजगार' के संबंध में एक कार्यकारी दल गठित किया है। इस दल में अनेक विद्वान शामिल हैं जिन्होंने महिलाओं के अध्ययन कार्यक्रम में भाग लिया है।

(ii) ग्रामीण विकास निभाग, कृषि मंत्रालय ने' गतिशीलता के जरिए विकास सेवाओं तक महिलाओं की पहुंच में सुधार करने के उद्देश्य से ग्राम स्तरीय संगठनों के उद्देश्यों और कामकाज की समीक्षा करने के लिए "ग्रामीण महिलाओं के ग्राम स्तरीय संगठनों के विकास" के संबंध में एक कार्यकारी दल गठित किया है।

(iii) छठी पंच वर्षीय योजना अवधि के लिए कार्रवाई योजना सुझाने के लिए, समाज कल्याण विभाग, शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय द्वारा "महिलाओं के कल्याण" के संबंध में एक कार्यकारी दल नियुक्त किया गया था।

(ङ) **सेमिनार तथा सम्मेलन :** विशेषज्ञता प्रदान करने के उद्देश्य से परिषद् ने निम्नलिखित सेमिनारों में भाग लिया :

(1) भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् के सहयोग से यू० एस० ई० एफ० आई० द्वारा नवम्बर 1977 में आनंद में

आयोजित 'महिलाएं और विकास'।

(ii) गांधी शान्ति प्रतिष्ठान, के० स० क० बो०, समाज कल्याण विभाग, यूनिसेफ तथा भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् द्वारा महिलाओं के लिए आय-अर्जन कार्यकलापों के आयोजकों के लिए 10 से 13 सितम्बर 1977 तक दिल्ली में आयोजित "सामाजिक प्रेरणादाताओं के लिए कार्यशाला।"

(iii) दिसम्बर 1977 में तेहरान में "महिलाओं और विकास के लिए एशियाई तथा प्रशान्त केन्द्र पर महिलाएं तथा विकास—के संबंध में कार्यशाला।"

(iv) लखनऊ में 16 से 19 मार्च 1978 तक "अमरीका में सामाजिक न्याय : महिलाएं और अल्पसंख्यक।"

(v) आइ० ए० एस० पी० वार्षिक सम्मेलन, 1978 : मार्च 1978 में हैदराबाद में "जनसंख्या तथा सामाजिक विकास।"

(vi) जयपूर में 30 मार्च से 1 अप्रैल 1978 तक "पंचायती राज संस्थाओं के दौरान में पश्चिम क्षेत्रीय सेमिनार।"

(च) **प्रकाशन :** परिषद् ने निम्नलिखित दस्तावेज। विनिबंध प्रकाशित किए :

(i) महिलाओं का अध्ययन कार्यक्रम।

(ii) महिलाओं के स्तर, रोजगार, स्वास्थ्य, शिक्षा के संबंध में महत्व-पूर्ण प्रश्न : कार्रवाई के लिए सुझाई गई प्राथमिकताएं।

(iii) ग्रामीण विकास में महिलाओं की भूमिका के संबंध में अध्ययन सेमिनारों की रिपोर्ट : एक अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार के संबंध में रिपोर्ट

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् और एस० एन० डी० टी० महिला विश्वविद्यालय द्वारा संयुक्त रूप से प्रकाशित की जाने वाली, 'शक्ति चिह्न : भारत में महिलाओं के राजनीतिक स्तर के संबंध में अध्ययन' नामक 'बदलते हुए समाज में महिलाएं' शृंखला के अन्तर्गत पहला खण्ड प्रेस को भेजा गया।

निम्नलिखित के लिए प्रकाशन अनुदान स्वीकृत किए गए :

(i) एस० एन० जी० टी० महिला विश्वविद्यालय, बम्बई, 'महिलाओं की मुक्ति के लिए गांधी जी का योगदान'

(ii) के० निश्चल, 'पाठ्यपुस्तकों में महिलाओं और लड़कियों का चित्रण'।

(ii) **ग्रामीण विकास :** ग्रामीण विकास संबंधी प्रायोजित कार्यक्रम का औपचारिक उद्घाटन भारतीत सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् में 14 अगस्त 1977 को, प्रोफेसर वी० एस० व्यास की अध्यक्षता में ग्रामीण विकास संबंधी परामर्श समिति की पहली बैठक में किया गया। इस प्रायोजित कार्यक्रम का उद्देश्य उन विभिन्न अलग-थलग अध्ययनों को समन्वित करना था जो ग्रामीण विकास के मूलत: परस्पर-सम्बद्ध पहलुओं के संबंध में चलाए जा रहे हैं। समेकित ग्रामीण विकास, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्-भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् संयुक्त पैनल, समेकित क्षेत्र विकास, ग्रामीण सामाजिक विज्ञान की प्रौन्नति, ग्रामीण क्षेत्रों की समस्याओं के वास्ते विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी का प्रयोग और कृषि विकास में विकल्पों से संबंधित विद्यमान कार्यक्रम अब इस समिति के क्षेत्राधिकार में आएंगे।

इस संबंध में यह सुझाव दिया गया कि इस क्षेत्र में भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् के कार्यकलापों का निम्नलिखित उद्देश्य होना चाहिए :

(i) उन शिक्षाविदों के लिए एक मंच की व्यवस्था करना जो ग्रामीण परिवर्तन की प्रक्रिया की जानकारी में रूचि रखते हैं तथा उसमें योगदान करने के इच्छुक हैं ;

(ii) ग्रामीण विकास के क्षेत्र में 'अभ्यासकर्ताओं' तथा संकल्पनाओं और विचारों की दृष्टि से योगदान करके के इच्छुक व्यक्तियों के बीच निरन्तर विचारविमर्श तथा अन्तर—कार्रवाई सुनिश्चित करना ;

(iii) अध्यापकों तथा अनुसंधानकर्ताओं को ग्रामिण जीवन के और अधिक निकट लाकर सामाजिक विज्ञानों शिक्षण तथा अनुसंधान विषय-वस्तु को समृद्ध बनाना ;

(iv) इस देश में तथा विदेश में विभिन्न एजेंसियों के विकास प्रयासों से संबंधित उपयोगी सूचना के प्रचार के लिए एक तंत्र की व्यवस्था करना।

इस कार्यक्रम का प्राथमिकता के आधार पर विकास करने का प्रस्ताव है। इसके लिए फोर्ड फाउन्डेशन से 150,000 डालर का सहायक-अनुदान प्राप्त हुआ है और इतना ही अनुदान भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् ससाधनों से देने का प्रस्ताव है।

कार्यक्रम के अन्तर्गत निम्नलिलित अनुसंधान परियोजनाएं स्वीकृत की गई थी :

(क) भारत झुनझुनवाला, मोतनगर, फैजाबाद, 'ग्रन्थ सूची तथा रिपोर्टों के संग्रह का प्रस्ताव'।

(ख) सुलभा ब्रह्म, गोखले राजनीति तथा अर्थशास्त्र संस्थान, पूना और ब्रह्म प्रकाश, टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान, बम्बई, 'जिला चन्द्रपुर, महाराष्ट्र के कुछ गांवों का सामाजार्थिक सर्वेक्षण'।

(ग) एच० रामकृष्ण और वी०जी० वर्गीज, गांधी शान्ति प्रतिष्ठान, नई दिल्ली, 'ग्रामीण विकास में स्वैच्छिक प्रयास'।

(घ) एस०आर० पाण्डे, भौतिकी, विभाग, टेक्साज विश्वविद्यालय, आस्टिन, टी०के० 7812, 'भारत में विद्यमान लघु ग्रामीण विकास परियोजनाओं का एक निष्पादनविश्लेषण'।

(ङ) विठल राजन, परामर्शता, भारतीय प्रशासनिक स्टाफ कालेज, हैदराबाद, 'टेपर्स सहकारी सोसायटियां, ता० महबूबादाद, जि० वारंगल, आ० प्र०'।

(च) टी०एस० पपोला, निदेशक, गिरि आर्थिक विकास तथा औद्योगिक संबंध संस्थान, लखनऊ, 'निर्माण कार्यकलापों का स्थानिक विविधीकरण (उ० प्र० में औद्योगिक इकाइयों की स्थिति प्रणाली का एक अध्ययन 1960-75)'।

स्वैच्छिक एजेन्सियों के अध्ययन के लिए अरविंद गुप्त को 2,000 रु० का यात्रा अनुदान भी स्वीकृत किया गया है।

कार्यक्रम के अन्तर्गत पांच सेमिनार आयोजित किए गए हैं :

(क) एन०एच० अनतिया द्वारा बम्बई में आयोजित "स्वास्थ्य देखभाल" पर सेमिनार।

(ख) भारत झुनझुनवाला द्वारा वर्धा में आयोजित "ग्रामीण भारत की समझ" पर सेमिनार।

(ग) टाटा इन्स्टीट्यूट, बम्बई द्वारा आयोजित "ग्रामीण विकास समिति के लिए" सेमिनार।

(घ) गांधी शान्ति प्रतिष्ठान, नई दिल्ली द्वारा आयोजित "ग्रामीण विकास में लगे स्वैच्छिक संगठनों के अध्ययन" पर सेमिनार।

(ङ) कोट्टायम में आयोजित "निर्धनता की समस्याओं" पर ग्राम अध्ययन के संबंध में अन्तर-विषयक रीतिशास्त्र कार्यशाला।

ग्रामीण विकास संबंधी कार्य को सुकर बनाने के लिए परामर्श समिति ने जीपों की खरीद की सिफारिश की, जो प्रोफेसर रवि जे० मथाई और प्रोफेसर ए०के०एन० रेड्डी को सौंपी जाएगी। प्रोफेसर मथाई, "जवाजा में

ग्रामीण शिक्षा में प्रयोग" के संबंध में और प्रोफेसर रेड्डी कर्नाटक में गांव के लिए "उपयुक्त प्रौद्योगिकी" के संबंध में कार्य कर रहे हैं। इस संबंध में उहयुक्त कार्रवाई की गई है।

परामर्श समिति ने, दो अन्य सेमिनार आयोजित करने की सिफारिश की—एक, "कार्रवाई अनुसंधान" पर अक्तूबर 1978 में लोनावाला में आयोजित करने के लिए और एक अन्य, "गैर-औपचारिक शिक्षा" पर, वर्ष के अन्त में नागपुर में आयोजित करने के लिए।

2·18 उपरोक्त से यह पता चलेगा कि वर्ष के अन्त में केवल निम्नलिखित प्रायोजित अनुसंधान कार्यक्रमों को सक्रिय रूप से प्रोत्साहित किया जा रहा था : (1) महिलाओं के संबंध में अध्ययन (2) ग्रामीण विकास और (3) सरकारी पद्धति और विकास। शेष आठ कार्यक्रमों को या तो अन्यों के साथ मिला दिया गया था अथवा उन्हें बन्द करने का प्रस्ताव था।

2·19 मूल योजनाओं के अनुसार, 1977-78 और 1978-79 के दौरान निम्नलिखित पांच प्रायोजित अधुसंधान कार्यक्रम शुरू किए जाने थे।

(1) अनुसूचित जातियां तथा अनुसूचित जनजातियां; (2) मुसलमान; (3) क्षेत्र आयोजन; (4) सामाजिक असंतोष तथा हिंसा; और (5) राजनीतिक पद्धति तथा प्रक्रियाएं।

उपरोक्त नीति के अनुसार, इनमें से कोई कार्यक्रम शुरू नहीं किया गया। तथापि, (क) अल्प-संख्यकों (जिनमें अनुसूचित जातियां, अनुसूचित जनजातियां और मुसलमान शामिल होंगे) और (ख) 1978-79 के दौरान सामाजिक असंतोष तथा हिंसा, के संबंध में प्रायोजित अनुसंधान कार्यक्रम शुरू करने का प्रस्ताव है। इनसे, एक समय में विकसित किए जाने वाले प्रायोजित अनुसंधान के कुल पांच कार्यक्रम हो जाएंगे। "क्षेत्र आयोजन" संबंधी कार्यक्रम को छोड़ देने का प्रस्ताव है क्योंकि आर०पी०सी० इसके लिए आवश्यक समर्थन दे रहा है ; और "राजनीतिक पद्धति तथा प्रक्रियाओं" संबंधी कार्यक्रम को, कुछ संशोधनों के साथ "राजनीतिक पद्धति तथा विकास" कार्यक्रम के साथ मिला दिया जाएगा।

बड़ी परियोजनाएं

2.20 भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्, एक वर्ष में एक या दो बड़ी परियोजनाएं स्वीकृत करती हैं, बड़ी योजना उस अनुसंधान प्रस्ताव को कहा जाता है जिसकी लागत लगभग एक लाख रुपये या इससे अधिक होती है तथा जो तीन वर्ष से लेकर पांच वर्ष तक चलती रहती है। समीक्षाधीन वर्ष के दौरान, पांच बड़ी योजनाओं पर काम चल रहा था।

(1) **जनगणना और सम्बद्ध आंकड़ों का विशलेषण तथा उपयोग (1872-1971)** : इस परियोजना पर संतोषजनक ढंग से और निर्धारण समय-सारणी के अनुसार कार्य चल रहा है और आशा है कि यह परियोजना 1980-81 में पूरी हो जाएगी । परियोजना के लिए एकत्र किए गए काफी आंकड़ों का विशलेषण किया जा चुका है । प्रकाशन के लिए तैयार सामग्री चौदह खण्डों में होगी। चौदह खण्डों के अस्थाई शीर्षक तथा प्रकाशनों को छापने की समय-सारणी नीचे दी गई है;

31 मार्च 1978 तक

1. भारत के शहरों और कस्बों में जनसंख्या, 1872-1971 यह, 650 पृष्ठों की डिमाई क्वार्टो आकर की पुस्तक होगी ।
2. ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों में घरेलू तथा गैर-घरेलू आर्थिक कार्य-कलापों में पुरुषों की तुलना में महिलाओं का योगदान, 1961
3. भारत की जनसंख्या में घटते हुए लिंग अनुपात के निहितार्थ (यह अन्ततः दो पी०एच०डी० शोध निबंध का रूप ले सकता है)
4. महिलाओं का स्तर, रोजगार और साक्षरता के विशेष सन्दर्भ में ।

31 मार्च 1969 तक

वर्ष 1978-79 की समाप्ति से पहले, आशा है कि इस परियोजना से, एफ पी एफ की आंशिक आभारोक्ति के अन्तर्गत भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् को निम्नलिखित चार और विनिबंध मुद्रण के लिए प्राप्त हो जाएंगे ।

5. भारत में महिलाओं के कार्य योगदान की दरों में कमी का विश्लेषण, 1931-71
6. भारत के बीस बड़े नगरों की सामाजिक और आर्थिक विशेषताओं का विश्लेषण, 1901-1961
7. भारत के नगरों के बदलते हुए कार्य और भारत के विकास में उनकी भूमिका, 1901-2001
8. भारत में जनसंख्या वितरण, पोषण और कृषि उत्पादकता के बीच संबंधों का विश्लेषण ।
9. महिलाओं के महत्व के सर्वेक्षण के लिए एक प्रस्ताव जिसमें सर्वेक्षण का मूल अभिप्राय तथा विस्तृत समय-सारणी दी गई हो ।
10. जनसंख्या और विकास के चरणों के बीच संबंधों के बारे में तीन बड़े दस्तावेज ।

31 मार्च 1980 तक

11. भारत के चुने हुए फसल क्षेत्रों में कृषि उत्पादकता तथा कृषि श्रमिकों की वृद्धि के बीच दीर्घकालिक संबंध ।
12. अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों की जनसंख्या के बीच लिंग अनुपात : जिलेवार विश्लेषण ।
13. दिल्ली के राजधानी क्षेत्र में पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों की विभेदक रुग्णता तथा स्वास्थ्य देख-रेख ।
14. भारतीय नगरों और कस्बों के बदलते हुए कार्य, 1961-71

(2) **भारत में कृषि प्रणालो, तनाव, अभियान और कृषक संगठन :** यह धन देने वाली चार प्रमुख एजेन्सियों-योजना आयोग, भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद्, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्, और राष्ट्रीय श्रम संस्थान-द्वारा एक सामूहिक प्रयास है । परियोजना में, आन्ध्र प्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र, पंजाब, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल के संबंध में सात राज्य रिपोर्टें तथा एक केन्द्रीय रिपोर्ट शामिल होगी जो राष्ट्रीय श्रम संस्थान द्वारा तैयार की जाएगी, जहां कि यह योजना चल रही है । सभी राज्यों के लिए अन्तरिम रिपोर्ट तैयार कर ली गई हैं और उन पर विचार किया जा चुका है । आशा है कि 1978 के अन्त तक अन्तिम रिपोर्ट तैयार हो जाएगी ।

(3) **स्वतंत्रता के बाद अर्थ-व्यवस्था :** इस परियोजना का उद्देश्य, चार खण्डों में, "स्वतंत्रतता के बाद अर्थव्यवस्था" की व्यापक समीक्षा करना है : ये चार खण्ड होंगे—समीक्षा, सांख्यिकी, नीति और विधान—प्रत्येक लगभग 1000 पृष्ठों का । परियोजना पर अनुमानत: सात लाख रुपये खर्च होंगे और इसे तीन वर्ष में पूरा करने का प्रस्ताव है । यह परियोजना, प्रोफेसर बी०एम० दाण्डेकर के निर्देशन में भारतीय राजनीतिक अर्थव्यवस्था स्कूल, लोनावाला में चलाई जा रही है ।

(4) **भारत की ऐतिहासिक सांख्यिकी :** भारत की ऐतिहासिक सांख्यिकी के संकलन से संबंधित कार्य को दो चरणों में विभाजित किया जा सकता है । पहले चरण में, 1947 तक भारत की सभी उपलब्ध सांख्यिकी सेवा को एक खण्ड में एकत्र, व्यवस्थित, टिप्पणियों के साथ सम्पादित और प्रकाशित किया जाएगा । दूसरा चरण बाद में चालू किया जाएगा । अध्ययन के पहले चरण पर 3,57,700

रुपये लागत आएगी और यह कार्य दो वर्ष में पूरा होगा। इस परियोजना का समन्वय कार्य गोखले राजनीति तथा अर्थशास्त्र संस्थान, पूना द्वारा किया जा रहा है।

(5) **भारतीय युवकों की समस्याएं :** प्राक्कलन समिति (पांचवीं लोक सभा) की 79वीं रिपोर्ट में की गई सिफारिशों के अनुसरण में यह कार्यक्रम 1977-78 के दौरान एक बड़ी परियोजना का विकास करने के लिए, प्राथमिकता के आधार पर तेजी से शुरू किया गया था। 15-25 आयु-वर्ग के युवकों की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और मनोरंजनात्मक पहलुओं का गहराई से अध्ययन करने का प्रस्ताव है। युवकों की समस्याओं के संबंध में अनुसंधान की योजना तैयार करने व मार्गदर्शन देने के लिए एक परामर्श समिति का गठन किया गया है। रांची विश्वविद्यालय के प्रोफेसर अमर कुमार सिंह के संयोजकत्व में समिति की अब तक दो बैठकें हुई हैं और उसने निम्नलिखित उपायों की सिफारिश की है : (1) ऐसे निबंध उन्मुख समीक्षा दस्तावेज तैयार करना जिनसे विद्यमान साहित्य को संगत विचार धारा की दिशा में मार्गदर्शन प्राप्त हो तथा जिनमें कमियां इंगित की जाए और अनुसंधान के संभव क्षेत्र सुझाए जाएं ; (2) भारत में छः स्थानों पर भारतीय युवकों की समस्याओं के संबंध में क्षेत्रीय सेमिनार आयोजित करना ; (3) भारत में एक राष्ट्रीय सहयोगात्मक अनुसंधान के लिए अनुसंधान प्रस्ताव तैयार करना, (4) युवकों की समस्याओं के अध्ययन के लिए डाक्टोरल/डाक्टोरल उपरान्त तथा अल्पावधि फैलोशिप प्रदानकरना; और (5) भारतीय युवकों से संबंधित उपयुक्त अनुसंधान रिपोर्टों का प्रकाशन।

पहले उपाय के रूप में, प्रथम दो सिफारिशों के संबंध में आवश्यक कार्रवाई शुरू की गई है। युवक समस्याओं के विभिन्न पहलुओं के संबंध में समीक्षा-दस्तावेज लिखने का कार्य लगभग 16 भारतीय विद्वानों को सौंपा गया है और इस वर्ष के दौरान छः क्षेत्रीय सेमिनार आयोजित किए गए। आशा है कि राष्ट्रीय अध्ययन को अन्तिम रूप देकर 1978-79 में शुरू कर दिया जाएगा।

विकास में विकल्प

2.21 भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् द्वारा शुरू किया

गया यह प्रमुख कार्यकलाप निम्नलिखित धारणाओं पर आधारित है :—

(1) देश में 1947 के बाद होने वाली सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक घटनाओं से हमारे राष्ट्रीय लक्ष्यों को प्राप्त करने में अथवा संविधान के आमुख में परिकल्पित एक नया समाज का निर्माण करने में मदद मिली है ।

(2) यह असफलता, संसाधनों की कमी अथवा असंतोषजनक कार्यान्वयन के कारण ही नहीं है, जैसा कि अक्सर कहा जाता है, यद्यपि इनका भी अपना महत्व है । इस असफलता का कारण सम्भवत: उन उधार लिए गए विचारों और आदर्शों में निहित है जिनके आधार पर 1947 के बाद से विकास की योजना तैयार की जा रही है और इसका कारण हमारे समाज की सामाजार्थिक पद्धति भी है । इसलिए, देश में उभरती हुई सामाजिक वास्तविकता, 1947 के बाद से हमारी उपलब्धियों तथा असफलताओं का नए सिरे से अध्ययन करने, उधार लिए गए विचारों और आदर्शों के पुर्न-मूल्यांकन, समाज की अपनी ही ऐसी संकल्पनाओं तथा आदर्शों को तैयार करने के लिए, जैसा कि हम चाहते हैं, निरन्तर, अथक तथा गहराई से अध्ययन करने और ऐसे कार्यक्रम, प्रक्रियाएं और साधनों का निर्धारण व विकास करने की आवश्यकता है जो वांछित परिणामों के फलस्वरूप सामने आएंगे । यह देश के उन समाज विज्ञानियों के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती तथा अवसर है जो अन्य विषयों के सहयोग से न केवल सामाजिक विज्ञानों का निर्माण कर सकते है बल्कि राष्ट्रीय विकास में महत्वपूर्ण योग भी दे सकते हैं ।

(3) इस संदर्भ में, गांधी विचारधारा की भूमिका विशेष महत्वपूर्ण है । गांधी जी ने, अपने आने वाले समय में औद्योगिक सभ्यता की न केवल प्रमुख कमजोरियों की बल्कि उन कमजोरियों की भी परिकल्पना की जो पश्चिम में बढ़ रही थी तथा उन्होंने एक वैकल्पिक सभ्यता का सुझाव दिया जिससे न केवल भारत की बल्कि पूरे विश्व की रक्षा की जा सकती है । उनकी अन्तर्दृष्टि का, जिसकी अधिकांश बुद्धिजीवियों ने अवहेलना की, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय विकास के संदर्भ में गहराई से अध्ययन किया जाना चाहिए ।

(4) विकास में विकल्पों के सम्बन्ध में इस चर्चा को प्रोत्साहित करना तथा तेजी से और निरन्तर इसके विभिन्न पहलुओं का गहराई से

अध्ययन करना तथा उनमें भाग लेने के लिए समाज विज्ञानियों की मदद करना भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् की जिम्मेदारी है ।

2.22 **संगठन** : भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् का मत था कि इतने बड़े कार्यकलाप का विकास एक पर्याप्त सचिवालय तथा निरंतर प्रयासों के बगैर नहीं किया जा सकता जिससे कि कार्यक्रम में रुचि रखने वाले समाज विज्ञानियों (तथा अन्यों) को, एक साथ कार्य करने और उन्हें अपने विचारों तथा रुचियों का अध्ययन करने में मदद मिल सके । इसलिए भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् ने, इस कार्यक्रम की देखभाल करने के लिए एक निदेशक की पूर्णकालिक सेवाएं प्राप्त करने और उन्हें आवश्यक सहायक स्टाफ उपलब्ध कराने का प्रयत्न किया । क्योंकि ऐसा कोई व्यक्ति उपलब्ध नहीं था, इसलिए कार्यक्रम को श्री जे० पी० नायक के साथ शुरू करने का निर्णय किया गया (श्री नायक, अपने कार्यभार के साथ-साथ कार्यक्रम के प्रभारी निदेशक बनने के लिए सहमत हो गए) ।

2.23 भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् ने इस कार्यक्रम के विकास के लिए सभी साधनों का उपयोग करने का निर्णय किया, अर्थात् सेमिनार, सम्मेलन, कार्यकारी दल, सर्वेक्षण, अनुसंधान परियोजनाए, फैलोशिप, प्रकाशन तथा प्रलेखन व ग्रन्थसूची सेवाओं के लिए अनुदान, विदेशी विद्वानों को निमंत्रण आदि ।

2.24 भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् ने यह निर्णय किया कि परिषद् के अन्य सभी प्रभाग, जहां तक संभव हो, इन कार्यक्रमों से प्रेरणा लें जो भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् के सम्पूर्ण कार्य तथा राष्ट्रीय विकास में इसकी भूमिका के लिए एक आधार बिन्दु है ।

2.25 **अध्ययन के प्रमुख क्षेत्र** : प्रथम दो वर्षों के दौरान इस विषय के संबंध में हुई चर्चा से, विशेष रूप से अनुसंधान के लिए एक कार्यसूची तय करने के उद्देश्य से, उत्पन्न प्रमुख विचारों का काफी विस्तारपूर्वक उल्लेख इस विषय पर भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् के प्रकाशन 'अकेजनल मोनोग्राफ्स (दूसरी क्रममाला अंक 1) : डायगनोसिस आफ इण्डियाज डवलपमेंट प्रोबलम्स एण्ड एप्रोच्ज टू एन आल्टरनेटिव पाथ", में किया गया है । इस चर्चा के परिणामस्वरूप निम्नलिखित प्रमुख कार्रवाई कार्यक्रमों के संबंध में निर्णय किया गया और उन्हें प्रारम्भ किया गया :

(1) विकास में विकल्पों की समस्या अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक अत्यन्त महत्वपूर्ण बात है । इसके अन्तर्गत, विकास के विश्व माडलों, एक

नई अन्तराष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था, विश्व व्यवस्था माडलों, संयुक्त राष्ट्र पद्धति आदि से संबंधित प्रश्नों का अध्ययन शामिल है। कुछ संस्थाओं (जैसे विकासशील सोसायटियों के अध्ययन के लिए केन्द्र, दिल्ली ने इन समस्याओं के प्रति अपनी रुचि प्रदर्शित की है। इस क्षेत्र में कार्य करने के लिए उन्हें प्रोत्साहित किया जाना चाहिए जिसे उच्च प्राथमिकता वाला क्षेत्र समझा जाना चाहिए।

(2) राष्ट्रीय स्तर पर विकास में विकल्पों की समस्या और भी अधिक महत्वपूर्ण है। इसके लिए चार प्रकार के अध्ययनों की आवश्यकता है: (क) पूर्ण विकास का एक समग्र दृष्टिकोण; (ख) सामान्य लोगों के लिए बुनियादी न्यूनतम आवश्यकताओं की व्यवस्था करने के लिए कार्यक्रम; (ग) अलग-अलग क्षेत्रों, जैसे स्वास्थ्य, शिक्षा, विधि, प्रौद्योगिकी अथवा राजनीति में विकास के विकल्प; और (घ) विकल्पों में सफल (अथवा असफल) प्रयोगों का मामला अध्ययन। यह निर्णय किया गया कि प्रारम्भ में भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् के कार्य में इन पहलुओं पर ही ध्यान केन्द्रित किया जाए।

(3) समस्या का तीसरा पहलू एक वैचारिक पहलू होगा और इसका संबंध "वांछनीय समाज" से होगा जो "औद्योगिक समाज" का एक वैद्य विकल्प सिद्ध होगा। महात्मा गाँधी द्वारा शुरू की गई यह एक महान राष्ट्रीय चर्चा थी। दुर्भाग्यवश, इस पर अनुवर्ती कार्रवाई नहीं की गई और न ही सुव्यवस्थित आंकड़ों और और प्रमाण के साथ इस पर पर्याप्त बल दिया गया। अब इस कार्य को निष्ठा के साथ शुरू किया जाना चाहिए और एक व्यवस्थित अध्ययन के जरिए चर्चा पुनः शुरू की जानी चाहिए तथा उसके लिए सहयोग दिया जाना चाहिए।

(4) गांधी विचारधारा तथा विकास में विकल्पों की सम्पूर्ण समस्या के प्रति उसकी संगतता के संबंध में अनेक अध्ययन किए जाने चाहिए। गांधी विचारधारा में उल्लिखित सभी पहलू शामिल है, अर्थात् वाँछनीय सोसायटी की कल्पना को ध्यान में रखते हुए भारत में विकास कार्यों का मूल्यांकन, विकास के अलग-अलग क्षेत्रों में नवीन तथा अमूल विचार और अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में विकल्प। यह दुर्भाग्य की बात है कि इन प्रमुख योगदानों पर समाज

विज्ञानियों द्वारा बहुत कम ध्यान दिया गया है इस कार्य में समाज विज्ञानियों को शामिल करना इस कार्यक्रम का एक महत्व-पूर्ण अंग होगा। वस्तुत:, गांधी विकल्प का विकास, इस अन्त-र्राष्ट्रीय चर्चा की दिशा में भारत का प्रमुख योगदान होगा।

2.26. **अब तक हुई प्रगति** : अब तक हुई प्रगति का संक्षिप्त ब्योरा इस प्रकार है :

(1) **राजनीति में विकल्प** : इस विषय पर प्रोफेसर रजनी कोठारी द्वारा एक पुस्तक तैयार की गई है और उसे भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् द्वारा शुरू की गई क्रममाला में प्रकाशित किया गया है।

(2) **कृषि में विकल्प** : इस समस्या का अध्ययन करने के लिए प्रोफेसर एस० चक्रवर्ती की अध्यक्षता में एक अध्ययन दल स्थापित किया गया था। दल की रिपोर्ट शीघ्र ही प्राप्त हो जाने की आशा है।

(3) **आयोजन में विकल्प** : इस विषय पर प्रोफेसर सी० टी० कूरियन द्वारा लिखित एक पुस्तक प्रकाशित की गई है। इसका नाम है "निर्धनता, आयोजन तथा सामाजिक परिवर्तन"।

(4) **विधि में विकल्प** : इस क्षेत्र में एक कार्यक्रम शुरू किया गया है। प्रोफेसर उपेन्द्र बक्शी द्वारा इस विशय पर एक दस्तावेज तैयार किया जा रहा है। इस दस्तावेज पर अप्रैल 1978 में एक अन्तर-विषयक सेमिनार में चर्चा करने का प्रस्ताव है। संविधान के कुछ प्रमुख पहलुओं पर एक पुस्तक लिखने का कार्य भी शुरू किया गया है।

(5) **न्यूनतम अवश्यकताओं पर आधारित आयोजन का एक अध्ययन** : इस क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण अनुसंधान अध्ययन शुरू किया गया है। यह अध्ययन, आई० एस० आई० के० डा० एस० जी० तेन्दुलकर द्वारा शुरू किया गया है।

(6) **स्वास्थ्य में विकल्प** : इस क्षेत्र में अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए थे जिनमें एक राष्ट्रीय चर्चा का विकास, मार्गदर्शी प्रयोगों का अध्ययन आदि शामिल था। इस क्रममाला में चुने हुए कागजों का एक खण्ड भी प्रकाशित किया गया है। अब इस सभी कार्य को इकट्ठा करने तथा इस विषय पर 1979 तक विस्तृत रिपोर्ट प्रकाशित करने का प्रस्ताव है। इस प्रयोजन के लिए प्रोफेसर रामलिंगस्वामी की अध्यक्षता में एक विशेष समिति स्थापित

की गई है।

(7) **विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी में विकल्प** : प्रोफेसर ए० के० एन० रेड्डी इस कार्यक्रम के प्रभारी है। इस विषय पर एक पुस्तक प्रकाशित करने तथा वैकल्पिक प्रौद्योगिकी, विशेष रूप से ग्राम विकास के लिए प्रौद्योगिकी का विकास और उसका प्रसार करने का एक अध्ययन कार्यक्रम तैयार करने का प्रस्ताव है।

(8) **गांधी अध्ययन** : गांधी विचार धारा के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करने के लिए, डा० अरुण शोरी, श्री टी० के० महादेवन, डा० बी० आर० नन्दा तथा डा० रामदास गांधी को फैलोशिप प्रदान की गई है। प्रोफेसर ए० के० सरन को फैलोशिप प्रदान करने का एक प्रस्ताव विचाराधीन है। नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय के सहयोग से, "गांधी : एक वैकल्पिक सभ्यता के के प्रतिपादक", पर एक सेमिनार आयोजित किया गया था और उसकी रिपोर्ट प्रकाशित की जा रही है। कुछ विशेष निबंध तथा अध्ययन भी शुरू की जा रहे हैं और कार्यक्रम का और अधिक तेजी से विकास करने के लिए प्रोफेसर बी० एन० गांगुली की अध्यक्षता में एक अलग सलाहकार समिति स्थापित की गई है।

(9) **प्रशासनिक विकास में विकल्प** : एक कार्यक्रम शुरू किया गया है। डा० वी० ए० पाई पनन्दीकर द्वारा एक बुनियादी निबंध तैयार किया जा रहा है। इस विषय पर 1978 तक चर्चा होने की आशा है।

(10) **शिक्षा में विकल्प** : अनेक अध्ययन (कुल 15) शुरू किए गए हैं। इसमें से तीन पूर्ण तथा प्रकाशित हो चुके हैं। श्री जे० पी० नायक इन अध्ययनों के प्रभारी हैं तथा उनका प्रस्ताव इन पर अपना ध्यान केन्द्रित करने तथा इन्हें अगले तीन वर्षों में पूरा करने का है। प्रोफेसर रवि मथाई द्वारा एक महत्वपूर्ण कार्रवाई कार्यक्रम तैयार किया जा रहा है और कुछ राज्य अध्ययन (जम्मू और काश्मीर, महाराष्ट्र, तमिलनाडू) आयोजित किए जा रहे हैं।

(11) **संयुक्त राष्ट्र विश्वविद्यालय के साथ सहयोग** : भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् "वांछनीय समाज" से संबंधित एक पंच वर्षीय परियोजना में, संयुक्त राष्ट्र विश्वविद्यालय के साथ सहयोग कर रही है। यह कार्य, विकासशील सोसायटियों के सध्ययन

के लिए केन्द्र, नई दिल्ली को सौंपा गया है ।

अनुसंधान रीतिविज्ञान में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

2.27. आलोच्य अवधि के दौरान, अनुसंधान रीति विज्ञान में निम्नलिखित छः प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किए गए :

(क) सरदार पटेल आर्थिक तथा सामाजिक अनुसंधान संस्थान अहमदाबाद में 2 मई 1977 से 10 जून 1977 तक अनुसंधान रीति विज्ञान तथा आर्थिक विश्लेषण में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम ।

(ख) संवैधानिक तथा संसदीय अध्ययन संस्थान, नई दिल्ली के सहयोग से 9 जून 1977 से 9 जुलाई 1977 तक दिल्ली विश्वविद्यालय के विधि संकाय में विधि तथा समाजिक परिवर्तन में अनुसंधान रीति विज्ञान में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम ।

(ग) टाटा समाज विज्ञान संस्थान, बम्बई में 16 जनवरी 1978 से 24 फरवरी 1978 तफ सर्वेक्षण अनुसंधान रीति पाठ्यक्रम ।

(घ) समाज विकास परिषद्, हैदराबाद में 23 जनवरी 1978 से 4 मार्च 1978 तक सर्वेक्षण अनुसंधान रीति पाठ्यक्रम ।

(ङ) भारतीय सांख्यिकीय संस्थान, कलकत्ता में 6 मार्च 1978 से 29 अप्रैल 1978 तक सर्वेक्षण अनुसंधान रीति पाठ्यक्रम

(च) समाज विकास परिषद्, हैदराबाद में, 13 मार्च 1978 से 31 मार्च 1978 तक आंकड़े संसाधन केन्द्र ।

2.28 परिषद् ने भारतीय सांख्यिकीय संस्थान, कलकत्ता द्वारा भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मद्रास के सहयोग से 30 मई 1977 से 18 जून 1977 तक मद्रास में उन्नत छात्रों, अनुसंधान कर्त्ताओं, और सांख्यिकीविदों के लिए संगणक-उन्मुख सांख्यिकीय रीतिविज्ञान के संबंध में आयोजित ग्रीष्म स्कूल के लिए भी आंशिक आर्थिक सहायता प्रदान की ।

अध्ययन अनुदान

2.29. अध्ययन अनुदान का उद्देश्य, समाज विज्ञानों के क्षेत्र में डाक्टोरल छात्रों को, अपने अनुसंधान कार्य के लिए सामग्री का निरीक्षण करने के लिए समाज विज्ञान प्रलेखन केन्द्र, नई दिल्ली और बम्बई कलकत्ता तथा हेदराबाद स्थित परिषद् के क्षेत्रीय केन्द्रों अथवा किसी अन्य पुस्तकालय, संस्था अथवा केन्द्र का दौरा करने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करना है । वित्तीय सहायता की राशि में व्यय तथा वर्ष में अधिकतम आठ सप्ताह की अवधि के लिए अनुमोदित दरों पर आवास तथा भोजन खर्च शामिल होता है । वर्ष के दौरान कुल 145 अध्ययन-अनुदान स्वीकृत किए गए ।

III

प्रलेखन

3.01. आलोच्य वर्ष के दौरान, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् ने, समाज विज्ञानों में अनुसंधानकर्त्ताओं की सहायता के उद्देश्य से प्रलेखन सेवाओं तथा अनुसंधान सूचना के अनेक कार्यक्रमों को प्रोत्साहित करने का कार्य जारी रखा।

समाज विज्ञान पत्रिकाओं की पिछली अवधि से संचयी अनुक्रमणिका

3.02. इस परियोजना के अन्तर्गत, अंग्रेजी भाषा की लगभग 240 चुनी हुई भारतीय समाज विज्ञान पत्रिकाओं की पिछली अवधि की एक संचयी अनुक्रमणिका (1970 तक) तैयार करने का प्रस्ताव है। 31 मार्च 1978 तक, 28 पत्रिकाओं का अनुक्रमणिका संबंधी कार्य पूरा हो गया है और 14 पत्रिकाओं के संबंध में कार्य चल रहा है। विस्तृत ब्योरा परिशिष्ट VIII में दिया गया है।

अन्तर पुस्तकालय संसाधन केन्द्र

3.03. अन्तर-पुस्तकालय संसाधन केन्द्र ने अपने कार्यकलापों का विस्तार जारी रखा। आलोच्य अवधि के दौरान, 1573 पुस्तकों, पी० एच० डी० थिसिसों, भारतीय जनगणना संबंधी प्रकाशनों का वर्गीकरण, सूचीकरण किया गया तथा उन्हें पाठकों के उपयोग के लिए तैयार किया गया। 25 स्थानीय पुस्तकालयों द्वारा जमा की गई तथा उपहार स्वरूप दी गई पत्रिकाओं तथा समाचारपत्रों के 30,000 अंकों का एक संशोधित साइक्लोस्टाइल्ड सूची-पत्र तैयार किया गया तथा उसे दिल्ली में स्थानीय प्राधिकारियों को वितरित किया गया। इस सूची-पत्र का आई० एल० आर० सी० तथा दिल्ली के पुस्तकालयों में निरन्तर उपयोग किया जा रहा है। इस सूची-पत्र के पूरक के रूप में, पत्रिकाओं के 16,000 से भी अधिक अंकों की जांच-पड़ताल की गई तथा उन्हें आई० एल० आर० सी० के संग्रह में शामिल की गई। पत्रिकाओं के अतिरिक्त, क्रमिक प्रकाशनों के लगभग 20,000 अंकों के कार्डों की, जिनमें भारत सरकार के प्रकाशन, संसदीय कार्यवाही, मंत्रालयों, समाज विज्ञान अनुसंधान संस्थाओं आदि की वार्षिक रिपोर्टें शामिल हैं, जांच पड़ताल की गई।

3.05 लगभग 4500 पाठकों ने आई० एल० आर० सी० के संग्रह का उपयोग किया। अनुरोध करने पर, स्थानीय अध्येयताओं और अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों को 45 ग्रन्थसूचियां मुहैय्या की गई।

3.06 पुस्तकालय में 75000 से अधिक टेलीफोन पर पूछे गए संदर्भ प्रश्नों का उत्तर दिया गया। अन्तर-पुस्तकालय ऋण, इस केन्द्र का एक महत्वपूर्ण कार्यकलाप रहा।

रेप्रोग्राफी सेवाएं

3.07 केन्द्र ने, समाज विज्ञानों के विभिन्न प्रलेखों के 6,000 पृष्ठों की जीरोक्स प्रतियां भी अध्येताओं को साधारण लागत पर उपलब्ध की। इन सेवाओं की मांग में वृद्धि को देखते हुए, मांग करने पर अनुसंधान सामग्री की प्रतियाँ उपलब्ध करने तथा साथ ही अ-प्राप्य पुस्तकों, समाचार पत्रों तथा क्षीण हो रही अन्य दुर्लभ अनुसंधान सामग्री की माईक्रो-फिल्म तैयार करने के लिए, छठी योजना में एक काफी बड़ा कार्यक्रम तैयार करने के लिए कदम उठाए गए हैं।

अधिग्रहण

3.08 आलोच्य अवधि के दौरान, पुस्तकालय ने, 362 शोधग्रन्थों सहित लगभग, 1578 प्रकाशन प्राप्त किए। केन्द्र में 1500 से अधिक पत्रिकाएं प्राप्त होती है; इसमें से कुछ पत्रिकाओं का केन्द्र ग्राहक है, किन्तु अधिकांश आदान-प्रदान के रूप में या नि:शुल्क प्राप्त होती हैं।

सहायक-अनुदान

3.09 आलोच्य वर्ष के दौरान, अनुमोदित ग्रन्थसूचीय अथवा प्रलेख परियोजनाओं के लिए निम्नलिखित सहायक-अनुदान स्वीकृत किए गए :

संस्था	परियोजना	सहायक-अनुदान रुपये
भारतीय कृषि अर्थशास्त्र संस्थान, बंबई	कृषि अर्थशास्त्र संबंधी लेखों की अनुक्रमणिका	5,000.00
भारतीय भाषा विज्ञान सोसायटी, पूना	दक्षिण एशियाई भाषा-विज्ञानों की ग्रन्थ-सूची	4,000.00
दिल्ली पुस्तकालय एसोसिएशन, दिल्ली	भारतीय प्रेस अनुक्रमणिका	10,000.00

गांधी शान्ति प्रतिष्ठान, दिल्ली	गांधी जी के विषय में पुस्तकों की द्विवर्षीय ग्रन्थ-सूची	19,000.00
भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्, पश्चिम क्षेत्रीय केन्द्र, बम्बई	बुनियादी संदर्भ पुस्तकों की खरीद	7,322.51
गोखले राजनीति तथा अर्थशास्त्र संस्थान, पूना	भारत के आर्थिक इतिहास के विषय में संक्षिप्त ग्रन्थ-सूची	2,06,482.94
आर्थिक विकास संस्थान, दिल्ली	एशियाई समाज विज्ञान ग्रन्थ-सूची	15,560.00
भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् दक्षिण क्षेत्रीय केन्द्र, हैदराबाद	बुनियादी संदर्भ पुस्तकों की खरीद	20 000.00
	जोड़	2,87,365.45

थोक खरीद

3.10 कुछ मामलों में भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् सहायक-अनुदान के रूप में, प्रतियों की थोक खरीद करती है। आलोच्य वर्ष के दौरान, इस कार्यक्रम के अन्तर्गत निम्नलिखित सहायता दी गई है :

प्रकाशन का नाम	राशि
	रु०
हिन्दी संदर्भ	4,500.00
भारतीय राजनीतिक आन्दोलन, 1919-1971	3,100.00
भारतीय उप-महाद्वीप के विषय में शोध-ग्रन्थों के संबंध में ग्रन्थ-सूची	2,800.00
कलकत्ता रीव्यू की वर्गीकृत विषय अनुक्रमणिका, 1844-1920	2,250.00
जोड़	12,650.00

महात्मा गांधी ग्रन्थसूची

3.11 आलोच्य अवधि के दौरान, हिन्दी में एक खण्ड तैयार किया गया। इस ग्रन्थसूची के अन्य भाषाओं के खण्ड, संशोधन/मुद्रण के विभिन्न स्तरों पर हैं।

आदान-प्रदान

3.12 आलोच्य अवधि के दौरान, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् के प्रकाशनों के आदान-प्रदान में वृद्धि जारी रही। अब, आदान-प्रदान के आधार पर प्राप्त की जाने वाली पत्रिकाओं/क्रममालाओं की संख्या नीचे दी गई है :—

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् की पत्रिकाएं	प्राप्त पत्रिकाओं की संख्या
1. भारतीय समाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् वार्षिक रिपोर्ट/तदर्थ प्रकाशन	42
2. भारतीय शोध-निबंध सार	78
3. भारतीय मनोवैज्ञानिक सार	52
4. भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् सार पत्रिका तथा समीक्षाएं : समाज शास्त्र तथा समाज नृविज्ञान	86
5. भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् न्यूजलेटर	476
6. भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् : अनुसंधान सार त्रैमासिक	194
7. भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् : सार पत्रिका तथा समीक्षाएं : भूगोल	46
8. यूनियन केटेलाग	4
9. भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधाद परिषद् : सार पत्रिका तथा समीक्षाएं : राजनीति विज्ञान	2

10.	भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् : सार पत्रिका तथा समीक्षाएं : अर्थशास्त्र	6
11.	विविध	77
	जोड़ :	1063

समाज विज्ञान सूचना पद्धति :

3.13 आलोच्य अवधि के दौरान, समाज विज्ञान सूचना के लिए एक योजना तैयार करने के वास्ते समिति की चार बैठकें हुई और रिपोर्ट को 18 मार्च 1978 को हुई बैठक में अन्तिम रूप दिया गया ।

क्षेत्र ग्रन्थसूचियां

3.14 भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् द्वारा शुरू की गई एक प्रमुख परियोजना, प्रत्येक राज्य और संघीय क्षेत्रीय के संबंध में अंग्रेजी भाषा में उपलब्ध सभी सामाजिक विज्ञान अनुसंधान सामग्री की ग्रन्थसूचियां संकलित करना है । यह योजना एक विशेषज्ञ समिति द्वारा तैयार की गई है जिसकी बैठक 23-24 दिसम्बर 1977 को हुई थी । परियोजना शुरू करने के लिए तैयारियां, आलोच्य वर्ष के दौरान की गई और इसे 1978-79 में शुरू करने का प्रस्ताव है ।

भाषाई ग्रन्थसूची

3.15 इसी प्रकार, सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं में उपलब्ध सामाजिक विज्ञान अनुसंधान सामग्री की ग्रन्थसूचियां संकलित करने का प्रस्ताव है । एक प्रयोगात्मक कदम के रूप में, आलोच्य वर्ष के दौरान, गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद के सहयोग से गुजराती में ऐसी ग्रन्थसूची संकलित करने का एक कार्यक्रम शुरू किया गया है ।

विश्व मामलों की भारतीय परिषद पुस्तकालय

3.16 आलोच्य वर्ष के दौरान, विश्व मामलों की भारतीय परिषद के पुस्तकालय के विकास के लिए परिषद के सहयोग से एक कार्यक्रम को अन्तिम रूप दिया गया । इसे 1978-79 से शुरू किया जाएगा ।

IV

प्रकाशन

4.01 परिषद ने, त्रैमासिक भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद न्यूजलेटर का प्रकाशन जारी रखा, जिसमें परिषद के प्रमुख कार्य-कलापों का ब्योरा दिया जाता है। पिछले वर्ष की भांति इस वर्ष भी मित-व्ययता की दृष्टि से दो अंकों को मिलाकर एक अंक प्रकाशित किया गया। आलोच्य वर्ष के दौरान, अक्तूबर 1976 से मार्च 1977 तक की अवधि का खण्ड VII (अंक 3 और 4) और अप्रैल 1977 से सितम्बर 1977 तक की अवधि का खण्ड VIII (अंक 1 और 2) प्रकाशित किया गया।

पत्रिकाएं

4.02 भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद की, इसके क्षेत्राधिकार के अन्तर्गत समाज विज्ञानों के क्षेत्र में पत्रिकाएं प्रकाशित करने का एक बड़ा कार्यक्रम है। कुल मिलाकर इनका उद्देश्य, अनुसंधान परिणामों के शीघ्र प्रकाशन को सुनिश्चित करना तथा अनुसंधान परिणामों और तत्काल संदर्भ के लिए विषय-वार प्रकाशनों की समीक्षा को मिलाकर समाज विज्ञानों में अनुसंधान के लिए अवस्थापना का निर्माण करना है।

4.03 परिषद द्वारा तीन पत्रिकाएं स्वयं प्रकाशित की जाती हैं, अर्थात् भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद अनुसंधान सार त्रैमासिक, भारतीय निबंध सार तथा एशियाई अध्ययन के लिए भारतीय पत्रिका अन्तिम पत्रिका इस वर्ष के दौरान शुरू की गई।

(1) भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद अनुसंधान सार त्रैमासिक में, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद द्वारा जिन अनुसंधान परियोजनाओं के लिए धन दिया जाता है, उनका तथा अन्य अनुसंधान रिपोर्टों का सार दिया जाता है। वर्ष के दौरान, खण्ड V (अंक 1 व 2) तथा खण्ड V (अंक 3 व 4) प्रकाशित किए गए। खण्ड VI (अंक 1 व 2) का सम्पादन किया गया तथा उसे प्रेस भेजा गया।

(2) त्रैमासिक पत्रिका, **भारतीय निबंध सार**, जिसमें भारतीय विश्वविद्यालयों द्वारा अनुमोदित समाज विज्ञानों में डाक्टोरल निबंधों का सारांश प्रकाशित किया जाता है वर्ष के दौरान जारी रही। इसके खण्ड IV (अंक 1),

खण्ड IV (अंक 2 व 3) तथा खण्ड IV (अंक 4) और खण्ड V (अंक 1 व 2) प्रकाशित किए गए ।

(3) नई पत्रिका, 'एशियाई अध्ययनों की भारतीय पत्रिका' में एशियाई अध्ययनों पर मूल लेख, पुस्तक समीक्षा तथा ग्रन्थसूचियां सम्मिलित की जाती हैं । वर्ष के दौरान इसका खण्ड I (अंक 1) मुद्रित किया गया ।

4.04. भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् ने, विभिन्न समाज वैज्ञानिक विषयों में प्रकाशित महत्वपूर्ण पुस्तकों की समीक्षाएं तथा अनुसंधान के सार प्रकाशित करना (अथवा उनके प्रकाशन में मदद देना) जारी रखा । वर्ष के दौरान निम्नलिखित प्रकाशन प्रकाशित किए गए :

(1) 'भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् सार पत्रिका और समीक्षाएं : भूगोल' का खण्ड II (अंक 1 व 2) प्रकाशित किया गया । यह अर्ध-वार्षिक पत्रिका स्टर्लिग पब्लिशर्स प्रा०लि० द्वारा प्रकाशित की जाती है ।

(2) 'भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् सार पत्रिका और समीक्षाएं : समाज शास्त्र तथा समाज नृविज्ञान का खण्ड V (अंक 2) और खण्ड VI (अंक 1) प्रकाशित किया गया । यह अर्ध-वार्षिक पत्रिका आचरणात्मक विज्ञान केन्द्र द्वारा प्रकाशित की जाती है ।

(3) 'भारतीय मनोवैज्ञानिक सार' का खण्ड XI (अंक 1), खण्ड XI (अंक 2), खण्ड XI (अंक 3) और खण्ड XI अंक 4) प्रकाशित किया गया । यह त्रैमासिक पत्रिका भी आचरणात्मक विज्ञान केन्द्र द्वारा प्रकाशित की जाती है ।

(4) वर्ष के दौरान एक और सार पत्रिका, 'भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् सार पत्रिका तथा समीक्षाएं : अर्थशास्त्र' सरदार पटेल अर्थशास्त्र तथा सामाजिक अनुसंधान संस्थान, अहमदाबाद के सहयोग से शुरू की गई । 1970 से 1976 तक की अवधि के लिए सात खण्डों में एक कार्यक्रम के अन्तर्गत यह त्रैमासिक पत्रिका खण्ड VII, 1976 से शुरू की गई थी । इन सभी खण्डों को तीन वर्ष की अवधि में प्रकाशित करने का प्रस्ताव हैं । इसके अतिरिक्त, खण्ड VIII (1977) की शुरूआत से वर्तमान क्रममाला के प्रकाशन को जारी रखने का प्रस्ताव है । आलोच्य वर्ष के दौरान, खण्ड VII (अंक 1) और खण्ड VII (अंक 2) प्रकाशित किए गए ।

(5) एक अन्य पत्रिका, अर्थात्, 'भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान' परिषद् सार पत्रिका तथा समीक्षाएं : राजनीतिक विज्ञान भी, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के सहयोग से शुरू की गई । 1970-71 की अवधि के प्रथम संस्करण के लिए सामग्री संकलित और सम्पादित की गई तथा प्रेस में

भेजी गई । यह अर्ध-वार्षिक प्रकाशन होगा ।

4.05 निम्नलिखितों को सहायता भी दी गई :

(1) लोक प्रकाशन के क्षेत्र में सार प्रकाशित करने के लिए भारतीय लोक प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली ।

(2) प्रबंध के क्षेत्र में सार प्रकाशित करने के लिए भारतीय प्रबंध संस्थान, अहमदाबाद ।

(3) शिक्षा के क्षेत्र में सार प्रकाशित करने के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान तथा प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली ।

4.06 सामाजिक विज्ञान पत्रिकाओं की कोटि सुधारने और समर्थन देने की योजना के अन्तर्गत, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्, राष्ट्रीय स्तर पर कार्य कर रहे समाज विज्ञानियों के व्यावसायिक संगठनों द्वारा संचालित पत्रिकाओं के प्रकाशन के लिए तथा समाज विज्ञानों की अन्य चुनी हुई अनुसंधान पत्रिकाओं को भी पांच वर्ष तक 5,000 रुपये प्रति वर्ष अनुदान देती है । 1977-78 के दौरान, इस योजना के अन्तर्गत निम्नलिखित पत्रिकाओं को सहायक अनुदान स्वीकृत किए गए :—

1. दि ईस्टर्न एन्थोपोलोजिस्ट, लखनऊ
2. कन्ट्रीब्यूशन्स टू इण्डियन सोसिओलाजी, दिल्ली
3. न्यू फ्रन्टीयर्स इन एड्यूकेशन, नई दिल्ली ।

4.07 भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्, 1,00,000 रुपये की धर्मस्व निधि के निर्माण के लिए समाज विज्ञानों में चुनी हुई पत्रिकाओं को भी सहायता देती है । इस प्रयोजना के लिए, यदि कोई पत्रिकाएं संचालित करने वाला संगठन अपने संसाधनों से 25,000 रुपये एकत्र करता है तो भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् 25,000 रुपये देती है तथा भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् को फोर्ड प्रतिष्ठान में से 50,000 रुपये भी दिए जाते हैं । उपरोक्त योजना के अन्तर्गत, 1977-78 के दौरान निम्नलिखित पत्रिकाओं को सहायक अनुदान स्वीकृत किए गए :

1. इण्डियन जनरल आफ मेडिकल एसोसिएशन, नई दिल्ली ।
2. इण्डियन जनरल आफ एग्रीकल्चरल इकानामिक्स, बम्बई ।
3. इण्डियन फिलोसोफिकल क्वार्टरली, पूना ।
4. एड्यूकेशन एण्ड सोसायटी, पूना ।

4.08 आलोच्य वर्ष के दौरान परिषद् ने अपने विभिन्न कार्यक्रमों के अन्तर्गत अनेक प्रकाशन प्रकाशित किए ।

परिषद् के प्रशासनिक प्रकाशन मूल्य रहित हैं। वार्षिक रिपोर्ट तथा अनुदान योजनाओं के अतिरिक्त, पुस्तिकाओं के रूप में विशेष कार्यक्रम मुद्रित किए जाते हैं। विशेष निबंध भी प्रकाशित किए जाते हैं और अनुसंधान संस्थाओं तथा समाज विज्ञानियों को वितरित किए जाते हैं।

आलोच्य वर्ष के दौरान, निम्नलिखित मूल्य-रहित प्रकाशन प्रकाशित किए गए।

1. भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् सेवा विनिमय
2. संस्था-ज्ञापन पत्र तथा नियम
3. अनुसंधान अनुदान 1977
4. वार्षिक रिपोर्ट 1976-77 (अंग्रेजी)
5. वार्षिक रिपोर्ट 1976-77 (हिन्दी)
6. महिलाओं के स्तर के संबंध में महत्वपूर्ण प्रश्न : कार्रवाई के लिए सुझाई गई प्राथमिकताएं
7. एशियाई सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषदों की एसोसिएशन
8. आवसरिक निबंध : दूसरी क्रममाला, एक वैकल्पिक मार्ग के लिए भारत की विकासशील समस्याओं तथा दृष्टिकोणों का निदान।

4.09 विकास में विकल्पों की खोज के अपने कार्यक्रम के अन्तर्गत वर्ष के दौरान निम्नलिखित प्रकाशन प्रकाशित किए गए :

(1) जे०पी० नायक ; 'विकास में विकल्प : शिक्षा-गैर-औपचारिक शिक्षा के संबंध में कुछ परिप्रेक्ष्य'।

(2) जे०पी० नायक; 'विकास में विकल्प : स्वस्थ्य—भारत में स्वास्थ्य देख-भाल सेवा की वैकल्पिक पद्धति'।

(3) सी०टी० कूरियन ; 'विकास में विकल्प : आयोजन-निर्धनता, आयोजन तथा सामाजिक परिवर्तन'।

4.10 परिषद्, महत्वपूर्ण विषयों के संबंध में सेमिनारों से संबंधित पत्रों के प्रकाशन के लिए या तो पूरी अथवा आंशिक आर्थिक सहायता देती है। वर्ष के दौरान निम्नलिखित प्रकाशन प्रकाशित किए गए :

केन्द्रीय सांख्यिकीय संगठन, 'सामाजिक सांख्यिकी के संबंध में सेमिनार' (दो खण्ड)।

एम०एन० श्री निवास, एस० सेशेय्या तथा वी०एस० पार्थासारथी, 'सामाजिक परिवर्तन के आयाम' (पुनः संस्करण)

वीना मजुमदार, (सं०)' 'ग्रामीण विकास में महिलाओं की भूमिका : एक अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार की रिपोर्ट'।

4.11 भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् द्वारा प्रकाशन के लिए अनुमोदित बकाया रिपोर्टों की श्रेणी के अन्तर्गत निम्नलिखित प्रकाशन प्रकाशित किए गए :

(1) बी०बी० चटर्जी, 'काष्ठभूमि में एक मोमबत्ती : कस्तूरबा कन्या आश्रम, निवाली, भूत, वर्तमान तथा भविष्य'।

4.12 परिषद् विशेष अध्ययन प्रायोजित करती है जो इसके तत्वाधान में प्रकाशित किए जाते हैं। आलोच्य वर्ष के दौरान इस योजना के अन्तर्गत निम्नलिखित प्रकाशन प्रकाशित किया गया :

इकबाल नारायण, एम०एल० शर्मा और हंस राज पाल, 'भारत में चुनाव अध्ययन'।

4.13 परिषद्, सामाजिक विज्ञानों के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कृतियों का प्रकाशन भी करती है। अंग्रेजी तथा प्रमुख भारतीय भाषाओं में महात्मा गांधी के संबंध में ग्रन्थसूचियां इस श्रेणी के अन्तर्गत आती हैं। अंग्रेजी में ग्रन्थसूची पहले प्रकाशित की गई थी। आलोच्य वर्ष के दौरान निम्नलिखित प्रकाशन प्रकाशित किए गए :

(1) मोहनदास कर्मचन्द गांधी : एक ग्रन्थसूची (हिन्दी) उर्दू और संस्कृत में ग्रन्थसूचियां छपने के लिए प्रेस भेजी गई।

प्रकाशन अनुदान

4.14 आलोच्य वर्ष के दौरान, 35 डाक्टोरल शोध निबंधों और 11 अनुसंधान रिपोर्टों के लिए प्रकाशन अनुदान स्वीकृत किए गए जिनके लिए धन की व्यवस्था भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् के अतिरिक्त अन्य स्रोतों से की गई। इसके ब्योरे परिशिष्ट IX में दिए गये हैं। डाक्टोरल शोध निबंधों के लिये सहायक अनुदान की योजना जनवरी 1978 में स्थगित कर दी गई।

V

आंकड़ा अभिलेखागार

5.01 भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् ने परिषद् में आँकड़ा अभिलेखागार का निर्माण करने का एक कार्यक्रम शुरू किया है। इसने वर्ष के दौरान अच्छी प्रगति की।

आंकड़ा अधिग्रहण

5.02 भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् आंकड़ा अभिलेखागार ने, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् की आर्थिक सहायता से संचालित परियोजनाओं द्वारा तैयार किए गए आंकड़े से प्राप्त करना जारी रखा। आलोच्य वर्ष के दौरान निम्नलिखित आंकड़ा सेट प्राप्त हुए :

(1) शालिनी भोगले (श्रीमती), 'विभिन्न वर्गों के बीच बाल पोषण प्रथाएं।

(2) डी० एन० पाठक, 'गुजरात में राजनीतिक आचरण (1971)'

(3) एस० पी० सिन्हा, 'उत्तरी-बिहार की ग्रामीण संरचना का आर्थिक विश्लेषण : गंडक घाटी क्षेत्र का एक विशेष संदर्भ' (3 आंकड़े सेट)

(4) वीरेश्वर राव, 'मेरठ में मत आचरण का सामाजिक-मनोवैज्ञानिक अध्ययन'

(5) डी० एल० नारायण, 'रायलसीमा में जनजातियों की आर्थिक स्थितियों का एक मूल्यांकन'

(6) बी० सर्वेश्वर राव, 'आन्ध्र प्रदेश के तटीय क्षेत्र में वाणिज्यिक तथा औद्योगिक उद्यमशीलता'

(7) पी० एन० हुनदेल, 'उद्यमी प्रेरणा तथा उसकी संरचना'

(8) एस० एल० दोषी, 'एस० टी० का एक राजनैतिक एकीकरण : राजस्थान के भीलों के बीच राजनीति का एक अध्ययन'।

(9) वी० के० कुल, 'प्रयोगात्मक प्रेरित आक्रमण के संबंध में अधिनायकवाद तथा आरोपित शत्रुता का अध्ययन'।

मार्गदर्शक तथा परामर्श सेवाएं

5.03 संबंधित अनुसंधान अध्येताओं की आंकड़ा संसाधन समस्याओं के

लिए सहायता देने की यह योजना आलोच्य वर्ष के दौरान जारी रखी गई। जैसा कि पहले बताया गया है, योजना में निम्नलिखित क्षेत्र शामिल हैं :

(1) संहिता पुस्तकें। पुस्तकें, कार्ड डिजाइन तैयार करना ;

(2) संग्रहीत आंकड़ों के विश्लेषण के लिए उपयुक्त अनुसंधान तकनीकों का चयन ;

(3) कार्यक्रम सहायता। आँकड़ों का मशीन संसाधन।

फिलहाल ये सेवाएं निम्नलिखित संस्थाओं के जरिए प्रदान की जा रही है :

(1) भारतीय प्रबंध संस्थान, डाममंड हारबर रोड, पो० जोका, कलकत्ता।

(2) विकासशील सोसायटियों के अध्ययन के लिए केन्द्र, 29, राजपुर रोड, दिल्ली-110054

(3) सरदार पटेल आर्थिक तथा सामाजिक अनुसंधान संस्थान, पो० बा० नं० 4062, नवरंगपुर, अहमदाबाद-380009

(4) गोखले राजनीति तथा अर्थशास्त्र संस्थान, पूना-411004

(5) विकास अध्ययनों के लिए केन्द्र, आकुलम रोड, उल्लूर रोड, त्रिवेन्द्रम-695001

(6) टाटा समाज विज्ञान संस्थान, देवनार, सिओन-बम्बई रोड, बम्बई-400088

(7) भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् आंकड़ा अभिलेखागार, 35, फिरीजशाह रोड, नई दिल्ली-110001

समाज विज्ञानियों का राष्ट्रीय रजिस्टर

5.04 समाज विज्ञानियों के राष्ट्रीय रजिस्टर का संकलन कार्य, जो 1976 में शुरू किया गया था, इस अवधि के दौरान जारी रहा। डाक से भेजे गए प्रोफोर्मा के जरिए प्राप्त सूचना का शोधन किया जा रहा हैं। प्रत्येक समाज विज्ञानी के संबंध में सूचना का, उनकी शैक्षिक पृष्ठभूमि, अनुसंधान रुचियों, प्रकाशनों, वर्तमान स्थिति, संस्थात्मक पदों इत्यादि की दृष्टि से संकलन किया जा रहा है। प्रत्येक विज्ञानी के संबंध में इस सूचना का प्रत्येक विषय के अन्दर वर्णक्रमानुसार वर्गीकरण किया गया है। यह रजिस्टर का प्रमुख अंग होगा। इसके अतिरिक्त, रजिस्टर के दूसरे भाग में तीन अनुक्रमणिकाएं शामिल करने का भी प्रस्ताव है। प्रथम अनुक्रमणिका में, एक विषय के अन्दर प्रत्येक व्यक्ति के विशिष्टीकरण क्षेत्रों को शामिल किया

जाएगा । एक नाम को अनुक्रमणिका में अधिकतम चार वर्गों में शामिल किया जा सकता है । दूसरी अनुक्रमणिका एक मिली-जुली अनुक्रमणिका होगी जिसमें विषय, वर्ग संहिताओं को दर्शाते हुए विशिष्टता के सभी क्षेत्रों को वर्णक्रमानुसार शामिल किया जाएगा । इस अनुक्रमणिका में अन्तर-विषयक क्षेत्रों में कार्य कर रहे व्यक्तियों को शामिल किया जाएगा । अन्तिम अनुक्रमणिका, सभी समाज विज्ञानियों की, उनकी विषय संहिता सहित, वर्णक्रमानुसार तैयार की जाएगी । प्रथम अनुक्रमणिका तैयार करने का कार्य साथ-साथ चल रहा है । आशा है कि रजिस्टर के संबंध में सभी कार्य अगले कुछ महीनों के अन्दर पूरा हो जायेगा ।

संचित स्टाक

5.05 भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् आंकड़ा अभिलेखागार में अब तक प्राप्त सभी आंकड़ा-सेटों की एक सूची परिशिष्ट X में दी गई है ।

VI

अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग तथा क्षेत्र अध्ययन

अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग

6.01 भारतीय तथा विदेशी समाज विज्ञानियों के बीच निकट सम्पर्क विकसित करने की अपनी नीति के अनुसरण में भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद ने तीन कार्यक्रम तैयार किए हैं। पहले कार्यक्रम के अन्तर्गत, उन भारतीय समाज विज्ञनियों को अपनी आवास की अवधि बढ़ाने के लिए सहायता दी जाती है जिन्हें किसी अन्य देश द्वारा आमंत्रित किया गया हो ताकी वे चुने हुए केन्द्रों में अपना कुछ समय बिता सकें अथवा प्रमुख समाज विज्ञानियों से भेंट कर सकें। इस कार्यक्रम का क्षेत्र बढ़ाकर अब इसके अन्तर्गत भारत से बाहर होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लेने वाले भारतीय समाज विज्ञानियों की अनुरक्षण लागत को भी शामिल कर लिया गया है। दूसरे कार्यक्रम के अन्तर्गत विदेशों से प्रमुख समाज विज्ञानियों को विभिन्न केन्द्रों का दौरा करने तथा भारतीय समाज विज्ञानियों के साथ विचार-विमर्श करने के लिए भारत आमंत्रित किया जाता है। तीसरे कार्यक्रम के अंतर्गत, भारतीय तथा विदेशी समाज विज्ञानियों के बीच सहयोग बढ़ाने के लिए भारत तथा अन्य देशों के बीच सांस्कृतिक करारों का उपयोग किया जाता है। प्रोफेसर टी० एन० मदान की अध्यक्षता में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के संबंध में एक समिति इन कार्यक्रमों के कार्यान्वयन के संबंध में परिषद को सलाह देती है।

विदेश भ्रमण के लिए भारतीय समाज विज्ञानियों को सहायता

6.02 आलोच्य वर्ष के दौरान, 22 भारतीय समाज विज्ञानियों को विदेश भ्रमण के लिए अनुदान दिए गए। इन विज्ञानियों की सूची परिशिष्ट XI में दी गई है।

भारत आमंत्रित विदेशी समाज विज्ञानी

5.03 आलोच्य वर्ष के दौरान, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद द्वारा निम्नलिखित विदेशी समाज विज्ञानियों को आमंत्रित किया गया :

(1) अन्तर-सांस्कृतिक प्रलेखन केन्द्र, मेक्सिको के निदेशक डा० इवान

इलिच ने दिसम्बर 1977-जनवरी 1978 के दौरान भारत का दौरा किया तथा भारत में विभिन्न स्थानों पर व्याख्यान दिए।

(2) मेनचेस्टर विश्वविद्यालय, यू० के० में समाजशास्त्र प्रोफेसर ट्रओडर शनीन ने 9 दिसम्बर 1977 से 15 जनवरी 1978 तक भारत का दौरा किया। उन्होंने दिल्ली, कलकत्ता, पटना, चन्डीगढ़ तथा बम्बई का दौरा किया।

(3) शिक्षा स्कूल, स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय, केलिफोर्निया, अमरीका में शिक्षा तथा समाजशास्त्र के प्रोफेसर एलेक्स इंकल्स ने 19 दिसम्बर 1977 से 16 जनवरी 1978 तक भारत का दौरा किया। उन्होंने दिल्ली, जयपुर तथा हैदराबाद समेत देश के अनेक स्थानों का दौरा किया।

(4) सिटी विश्वविद्यालय, न्यूयार्क में इतिहास विभाग के प्रोफेसर स्टानले प्लास्टिक ने 15 जनवरी से 3 फरवरी 1978 तक भारत का दौरा किया। उन्होंने दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता तथा पटना का भ्रमण किया।

6.04 आलोच्य वर्ष के दौरान, भारत का दौरा करने वाले निम्नलिखित विदेशी समाज विज्ञानियों को भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद द्वारा आतिथ्य प्रदान किया गया।

(1) राष्ट्रीय समाज विज्ञान परिषदों मे सहयोग के लिए अन्तर्राष्ट्रीय समाज विज्ञान परिषद स्थायी समिति के वैज्ञानिक सचिव श्री रोल्फ ए० ब्रुलहार्ट ने 20 से 26 अगस्त 1977 तक भारत का दौरा किया।

(2) अन्तर्राष्ट्रीय विकास विकल्प प्रतिष्ठान, स्विटजरलैंड के डा० मार्क नेरफिन तथा श्री एच० के० बोजीन ने सितम्बर 1977 में भारत का दौरा किया।

(3) पर्यावरण व विकास संबंध अन्तर्राष्ट्रीय अनुसंधान केन्द्र, पेरिस के प्रोफेसर इगनेसी सेच्स ने 2 से 4 अक्तूबर 1977 तक भारत का दौरा किया।

6.05 **सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम :** परिषद ने, सांस्कृतिक विनिमय के जरिए अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग को प्रोत्साहित करना जारी रखा :

(1) **भारत-हंगरी विनिमय :**

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत परिषद ने, विधि संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय

के प्रोफेसर उपेन्द्र बक्शी को हंगरी भेजने का प्रस्ताव किया था। किन्तु किन्हीं कठिनाइयों के कारण वह यह दौरा नहीं कर सके।

(2) **भारत-जर्मन जनवादी गणराज्य कार्यक्रम :**

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत, श्रम कानून तथा प्रबंध संस्थान, हैदराबाद के निदेशक, श्री जी० कामेश्वर राव ने जर्मन जनवादी गणराज्य का दौरा किया और बदले में कार्ल मार्क्स विश्वविद्यालय, लेपजिग, जर्मन जनवादी गणराज्य के सम-कुलति प्रोफेसर हंस पिश्राजा ने भारत का दौरा किया।

(3) **भारत-फ्रेंच कार्यक्रम :**

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के प्रोफेसर रशीदुद्दीन खान तथा डा० बलबीर अरोड़ा को फ्रांस का दौरा करना था। किन्तु कुछ अपरिहार्य कारणवश दौरे का विचार त्याग दिया गया। एक फ्रेंच प्रतिनिधिमंडल के स्वागत की तैयारियाँ चल रही है, जिसके अगले वर्ष के प्रारंभ में भारत आने की सम्भावना है।

(4) **भारत-चेकोस्लोवाक कार्यक्रम :**

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के प्रोफेसर रशीदुद्दीन खान को चेकोस्लोवाकिया का दौरा करना था। किन्तु दौरे का कार्यक्रम स्थगित हो गया।

(5) **भारत-सोवियत रूस कार्मक्रम :**

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत, सहमत कार्यक्रमों के कामकाज की समीक्षा करने तथा उन्हें कार्यान्वित करने के लिए योजनाएं तैयार करने के उद्देश्य से भारत-सोवियत रूस संयुक्त आयोग की बैठक अप्रैल 1977 में हुई थी। बाद में, "बहु-धार्मिक सोसायटियों में धर्मनिरपेक्षीकरण की समस्याएं : भारत और सोवियत रूस" पर भारत-रूसी सेमिनार के लिए प्रस्तावित प्रबंधों को अन्तिम रूप देने के लिए सोवियत संघ के प्रोफेसर, वासीलोव ने अगस्त-सितम्बर में भारत का दौरा किया।

भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद द्वारा अक्तूबर 1977 में, दुशन्बे, तलजिकस्तान, सोवियत रूस में मध्य एशिया तथा भारत, दूसरी सहस्राब्दी के प्रारम्भिक इतिहास की नृवंशीय समस्याओं पर एक सहमत संगोष्ठी आयोजित की गई। "एक संघीय राज्य तंत्र की निर्माण करने में कठिनाइयों" के संबंध प्रस्तावित संगोष्ठी, जो नवम्बर 1977 में मास्कों में होने वाली थी, अपरिहार्य कारणवश, 1978-79 के लिए स्थगित कर दो गई।

सोवियत संघ की शैक्षिक प्रणाली का अध्ययन करने के लिए परिषद ने एक प्रतिनिधिमंडल सितम्बर-अक्तूबर 1977 में सोवियत रूस भेजा । प्रतिनिधिमंडल में निम्नलिखित सदस्य शामिल थे : डा० चित्रा नायक, निदेशक, भारतीय शिक्षा संस्थान, पूना, डा० राज बाधवा, प्रिंसिपल, विवेकानन्द महिला कालेज, नई दिल्ली तथा प्रोफेसर सत्य भूषण, शिक्षा आयुक्त, जम्मू और काश्मीर ।

एक कार्यक्रम तैयार किया गया है जिसके अन्तर्गत दोनों पक्ष एक-दूसरे देश की पुस्तकों, पत्रिकाओं, सार आदि का आदि का आदान-प्रदान करेंगे। सोवियत पक्ष अपनी पत्रिकाओं के प्रकाशन भेजता रहा है । भारतीय पक्ष द्वारा भी ऐसे ही कदम उठाए जा रहे हैं ।

वर्तमान भारतीय-सोवियत संयुक्त आतोग की कार्याविधि वर्ष के दौरान समाप्त हो गई । सरकार ने इसके पुनर्गठन के लिए कदम उठाए हैं ।

6.06 **शिक्षा संबंधी भारत-अमरीकी उप- आयोग :** परिषद, 'नृवंश तथा गतिशीलता'' पर न्यूयार्क में एक भारत-अमरीकी सेमिनार आयोजित करने में सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्, न्यूयार्क से सहयोग करने के लिए सहमत हो गई है । इस सेमिनार में भारत से छः विद्वान भाग लेंगे । भारतीय पक्ष की ओर से प्रोफेसर एम० एन० श्रीनिवास समन्वयक का कार्य करेंगे ।

6.07. **एशियाई अध्ययनों की भारतीय पत्रिका :** आलोच्य अवधि के दौरान, एशियाई अध्ययनों की भारतीय पत्रिका का पहला अंक जारी किया गया । दूसरा अंक प्रेस में है ।

6.08. **एशियाई अध्ययनों की भारतीय एसोसिएशन :** आलोच्य अवधि के दौरान, एशियाई अध्ययनों की भारतीय एसोसिएशन को एक सोसायटी के रूप में पंजीकृत किता गया ।

6.09. **सेमिनार/सम्मेलन :** आलोच्य अवधि के दौरान, निम्नलिखित सेमिनार/सम्मेलन आयोजित किए गए :

(1) **भारत-ब्रिटिश समाज विज्ञानियों की बैठक :** परिषद् ने, जनवरी, 1978 में, "प्रजातन्त्र का भविष्य" पर एक भारत-ब्रिटिश सेमिनार का आयोजन किया । सेमिनार में यू० के० के 22 समाज विज्ञानियों ने भाग लिया ।

(2) **संयुक्त राष्ट्र विश्वविद्यालय क्षेत्रीय परामर्श बैठक :** संयुक्त राष्ट्र विश्वविद्यालय, टोक्यों के अनुरोध पर भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद ने संयुक्त राष्ट्र विश्वविद्यालय की एक क्षेत्रीय परामर्श बैठक 23-24 फरवरी 1978 को नई दिल्ली में आयोजित

की । बैठक में, भारत के अलावा, अफगानिस्तान, ईरान, नेपाल, पाकिस्तान और श्रीलंका ने भाग लिया । परामर्श बैठक में संयुक्त राष्ट्र विश्वविद्यालय के निम्नलिखित प्राथमिकता कार्यक्रमों पर विचार किया गया :

(i) विश्व भूख;

(ii) मानव तथा सामाजिक विकास ; और

(iii) प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग तथा प्रबंध ।

बैठक अत्यंत सफल रही और इससे इस क्षेत्र के देशों के समाज विज्ञानियों को विचारों के उपयोगी आदान-प्रदान तथा सम्पर्क स्थापित करने में मदद मिली ।

(3) चीन के संबंध में प्रस्तावित अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार को अपरिहार्य कठिनाइयों के कारण स्थगित करना पड़ा ।

क्षेत्र अध्ययन

6.10 आलोच्य अवधि के दौरान, परिषद् ने क्षेत्र अध्ययन सम्बन्धी अपने कार्यक्रम को सुदृढ़ बनाना जारी रखा । प्रोफेसर बिमल प्रसाद की अध्यक्षता में, क्षेत्र अध्ययन संबंधी समिति ने इस बात पर जोर देना खारी रखा कि क्षेत्र अध्ययन संबंधी अनुसंधान अन्तर्विषयक होना चाहिए । जैसा कि पहले निर्णय किया जा चुका है, एशियाई क्षेत्र प्राथमिकता वाला क्षेत्र बना रहा ।

6.11. **अनुसंधान प्रस्ताव :** आलोच्य अवधि के दौरान, क्षेत्र अध्ययन कार्यक्रम के अन्तर्गत निम्नलिखित अनुसंधान प्रस्ताव स्वीकृत किए गए :

(1) रहमतुल्लाह खान, सह-प्रोफेसर, अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन स्कूल जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, एक नई अन्तर्राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था की खोज-एक कानूनी परिप्रेक्ष्य' ।

(2) आई० एन० मुखर्जी, सह-प्रोफेसर, अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन स्कूल, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, 'बैंगकाक करार : एशिया का प्रथम बहुद्देशी व्यापार उदारीकरण कार्यक्रम' ।

(3) एस० डी० मुनि, सह-प्रोफेसर, अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन स्कूल, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, 'तीसरा विश्व सौदाकारी नीतियां' ।

(4) (कुमारी) उर्मिला वर्मा, लेक्चरर, लखनऊ, विश्वविद्यालय, लखनऊ, 'चीनी समाचार-पत्रों के माध्यम से भारतीय मामलों का अध्ययन' ।

6.12 **यात्रा अनुदान :** क्षेत्र अध्ययन कार्यक्रम के अन्तर्गत, 'विकासशील देशों में राजनीतिक दलों तथा राजनीतिक विकास का अध्ययन' नामक एक डाक्टोरल शोध-ग्रन्थ के लिए सामग्री एकत्र करने के वास्ते श्रीलंका का क्षेत्र दौरा करने के लिए, राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर के श्री सी० बी० गेना का 5, 352 रुपये की लागत का प्रस्ताव अनुमोदित किया गया।

6.13· **ए० सा० वि० अ० प० ए० (ए० ए० एस० एस० आर० ई० सी०) :** एशियाई सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषदों की एसोसिएशन का दूसरा सम्मेलन 4 से 8 अक्तूबर 1977 तक सिओल में आयोजित किया गया। ए० सा० वि० अ० प० ए० के एक संस्थापक सदस्य के रूप में भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद की ओर से इस सम्मेलन में डा० माल्कोम० एस० आदिशेषय्या, प्रोफेसर रामकृष्ण मुखर्जी और डा० (श्रीमती) आर० बरमन चन्द्र ने भाग लिया, जो भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद के इस विशिष्ट कार्यक्रम के प्रभारी हैं। सम्मेलन की अध्यक्षता डा० माल्कोम० एस० आदिशेषय्या ने की तथा डा० (श्रीमती) आर० बरमन चन्द्र ने रिपोर्टर-जनरल का काम किया। वर्ष 1978-79 के लिए इस सम्मेलन में निम्नलिखित देशों के नए पदाधिकारी चुने गए :

प्रधान	—	फिलिपीन्स
उप-प्रधान	—	बंगला देश तथा इन्डोनेशिया
महासचिव	—	कोरिया
संयुक्त सचिव	—	भारत

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद ने बाद में डा० (श्रीमती) आर० बरमन चन्द्र को एशियाई सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषदों की एसोसिएशन का संयुक्त सचिव नियुक्त किया। इस सम्मेलन में यह निर्णय किया गया कि बंगला देश और कोरिया के साथ भारत 'आयोजना तथा कार्यान्वयन की समस्याओं' का एक परस्पर-देशीय अध्ययन करेगा।

6.14. **अन्तर्राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान परिषद :** अन्तर्राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान परिषद के एक सह-सदस्य के रूप में भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद ने, अन्तर्राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान परिषद के 17 से 26 अक्तूबर 1977 तक पेरिस में हुए पच्चीसवें वार्षिक समारोहों में भाग लिया। भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद के प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व प्रोफेसर एम० एस० गोरे ने किया और इस प्रतिनिधि मंडल में प्रोफेसर एम० एन० श्रीनिवास, प्रोफेसर वी० पी० दत्त तथा प्रोफेसर योगेन्द्र सिंह शामिल थे। प्रतिनिधिमंडल ने, राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान परिषदों के साथ

सहयोग के लिए स्थायी समिति और अन्तर्राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान परिषद की समरूपी निकायों (एस० सी० सी० एन० सी०) की बैठक में भी भाग लिया।

6.15. **आई० एस० एस० सी०—सी० एन० एस० एस० सी० :** भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद की ओर से प्रोफेसर एम० एस० गोरे ने, आई० एस० एस० सी०-सी० एन० एस० एस० सी० की (पहले उल्लिखित एस० सी० सी० एन० सी० का नया नाम) 4-5 जनवरी, 1978 को लन्दन में आयोजित एक संयुक्त बैठक में भाग लिया।

6.16. यूनेस्को के अनुरोध पर, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, "सांस्कृतिक मूल्यों तथा जीवन की कोटि पर विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी का प्रभाव" पर एक संगोष्ठी आयोजित करने के लिए सहमत हो गई। यह संगोष्ठी, 1978-79 में हैदराबाद में आयोजित करने का प्रस्ताव है।

6.17. **भारत-डच वर्कशाप :** यह निर्णय किया गया है कि नीदरलेण्ड्स के विकासशील देशों में सामाजिक विज्ञान अनुसंधान के लिए संस्थान (आई० एम० डब्ल्यू० ओ० ओ०) तथा अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के लिए नीदरलेण्ड्स विश्वविद्यालय प्रतिष्ठान (एन० यू० एफ० एफ० आई० सी०) के सहयोग से "विकास के विकल्प" पर एक भारत-डच वर्कशाप का आयोजन किया जाए।

6.18. विश्व सामाजिक विज्ञान विकास समिति की दूसरी बैठक भारत में आयोजित करने के संबंध में निर्णय किया गया है। यह बैठक जुलाई 1978 में आयोजित होने की सम्भावना है।

6.19 भारतीय समाज विज्ञानियों द्वारा विशिष्ठ प्रयोजनों के लिए विदेश जाने पर वहां अधिक समय तक ठहरने के लिए उन्हें वित्तीय सहायता देने की योजना को आस्थगित कर दिया गया है।

6.20 आलोच्य वर्ष के दौरान, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद ने अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग की अपनी सभी योजनाओं की विस्तार से समीक्षा की। भारतीय समाज विज्ञानियों तथा तीसरे विश्व, बिशेषकर एशिया में, अपने प्रतिपक्षियों के साथ घनिष्ठ सम्पर्क स्थापित करने पर अत्यधिक प्राथमिकता देने का निर्णय किया गया। इस महत्वपूर्ण नीति निर्णय को कार्यान्वित करने के लिए कार्यक्रम तैयार किए जा रहे हैं।

VII

अनुसंधान संस्थान

7.01 सामाजिक विज्ञानों के क्षेत्र में कार्य करने वाले अनुसंधान संस्थानों को सहायक-अनुदान देने की योजना को, जो चौथी पंचवर्षीय योजना अवधि में शुरू की गई थी, भारत सरकार ने पांचवीं पंचवर्षीय योजना के प्रारम्भ, अर्थात् 1 अप्रैल, 1974 से भा० सा० वि० अ० प० को सौंप दिया गया था। इस कार्यक्रम की देखभाल करने के लिए परिषद् ने एक अनुसंधान संस्थान समिति गठित की है।

7.02 वर्ष 1976-77 के अन्त में इस योजना के अन्तर्गत आने वाले अनुसंधान संस्थानों की संख्या 15 थी। वर्ष 1977-78 में कोई नया अनुसंधान संस्थान इस योजना के अन्तर्गत नहीं लाया गया है।

7.03 समीक्षाधीन वर्ष के दौरान 15 अनुसंधान संस्थानों को कुल 60 लाख रुपये की वित्तीय सहायता दी गई। इन संस्थानों से संबंधित एक विस्तृत रिपोर्ट परिशिष्ट XII में दी गई है।

7.04 पुनरीक्षण समिति की रिपोर्ट तथा अनुसंधान संस्थान समिति की सिफारिशों के अनुसरण में समाज विकास परिषद्, हैदराबाद को 1.50 लाख रुपये का तदर्थ अनुदान स्वीकृत किया गया।

7.05 उड़ीसा सरकार तथा भा० सा० वि० अ० प० के सहयोग से भुवनेश्वर में एक सामाजिक विज्ञान अनुसंधान संस्थान स्थापित करने का निर्णय किया गया है। प्रो० सदाशिव मिश्र की अध्यक्षता में एक विशेषज्ञ समिति गठित की गई है जो इस प्रताव के सम्बन्ध में भा० सा० वि० अ० प० को सलाह देगी।

VIII

क्षेत्रीय तथा राज्य केन्द्र

8.01 भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् के क्षेत्रीय केन्द्रों की स्थापना, प्रशासन के विकेन्द्रीयकरण और सामाजिक विज्ञान अनुसंधान को व्यापक आधार प्रदान करने के अपने कार्यक्रम के एक भाग के रूप में की गई थी। उनकी प्रमुख भूमिका की निम्न प्रकार परिभाषा की गई थी :

(i) क्षेत्र के अन्दर भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् के एक एजेन्ट के रूप में कार्य करना तथा भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् के संदेश व कार्यक्रम को क्षेत्र में समाज विज्ञानियों तक पहुंचाने का प्रयास करना ;

(ii) क्षेत्र के अन्दर समाज विज्ञानियों के प्रतिनिधियों के रूप में कार्य करना तथा उनके विचारों तथा समस्याओं को किसी सम्भावित कार्रवाई के लिए भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् तक पहुंचाना ;

(iii) क्षेत्र के अन्दर सामाजिक विज्ञान अनुसंधान के प्रोत्साहन के लिए क्षेत्र के समाज विज्ञानियों को इकट्ठा होने के लिए एक मंच व्यवस्था करना ; और

(iv) क्षेत्र के समाज विज्ञानियों तथा समाज विज्ञानियों के राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय के बीच कड़ी के रूप में कार्य करना ।

क्षेत्रीय केन्द्रों की एक राष्ट्रीय कड़ी स्थापित करने के कार्यक्रम के पहले कदम के रूप में, बम्बई (पश्चिमी क्षेत्र के लिए), हैदराबाद (दक्षिण क्षेत्र के लिए), कलकत्ता (पूर्वी क्षेत्र के लिए), शिलांग (उत्तर-पूर्वी क्षेत्र के लिए), और चण्डीगढ़ (उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र के लिए) में छः केन्द्र स्थापित करने का निर्णय किया गया है। इनमें से पांच केन्द्र पहले ही स्थापित हो चुके थे तथा छठा केन्द्र आलोच्य वर्ष के दौरान चण्डीगढ़ में स्थापित किया गया था।

पश्चिमी क्षेत्रीय केन्द्र

8.02 पश्चिमी क्षेत्रीय केन्द्र, बम्बई विश्वविद्यालय के नये कैम्पस, विद्या-

नगरी, कालिना, बम्बई में स्थित है। इसके दो भवन, जिनमें बम्बई विश्वविद्यालय न्यू कैम्पस लाइब्रेरी का एक स्कन्ध और छात्रावास एवं अतिथि गृह पूरे हो गए हैं और उपयोग में लाए जा रहे हैं। इन भवनों के अतिरिक्त, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् हाल का भी निर्माण किया गया है। भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् के छात्रावास-एवं अतिथि गृह में रहने वालों को भोजन की सुविधाएं उपलब्ध करने तथा विद्यमान आवास क्षमता में वृद्धि करने के लिए, विद्यमान छात्रावास भवन में एक और मंजिल का निर्माण किया जा रहा है। आशा है कि निर्माण कार्य मार्च 1979 तक पूरा हो जाएगा।

8.03 भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् द्वारा आमंत्रित विदेशी समाज विज्ञानियों के दौरों का लाभ उठाने के लिए केन्द्र ने अनुसंधान कार्यकर्ताओं और इच्छुक व्यक्तियों के लाभ के लिए सेमिनारों, कार्यशालाओं और व्याख्यानों का आयोजन किया। आयोजित अन्य सेमिनारों तथा सम्मेलनों में निम्नलिखित उल्लेखनीय हैं :—

(1) बम्बई विश्वविद्यालय के भूगोल विभाग तथा केन्द्र के संयुक्त तत्वावधान में बम्बई विश्वविद्यालय में "भूगोल में वर्तमान प्रवृत्तियों तथा अनुसंधान पद्धतियों" पर एक नौ द्विसीय कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला के अन्त में, स्नातक तथा अवर-स्नातक स्तरों पर भूगोल से संबंधित पाठ्यचर्या की संरचना तथा परिवर्तनों के संबंध में एक संगोष्ठी आयोजित की गई।

(2) टाटा मूलभूत अनुसंधान संस्थान, बम्बई के होमी भाभा केन्द्र, साने गुरूजी विद्या प्रबोधिनी, खिरोदा, राज्य शिक्षा संस्थान, पूना, राज्य विज्ञान शिक्षा संस्थान, पूना तथा बम्बई नगर निगम और इस केन्द्र के संयुक्त तत्वावधान में, विज्ञान शिक्षा के संबंध में एक तीन द्विसीय सम्मेलन खिरोदा में आयोजित किया गया।

(3) "भारत में दलगत पद्धति की उभरती हुई पद्धति" के संबंध में एक दो द्विसीय सेमिनार, नितिबाई कला कालेज तथा चौहान विज्ञान संस्थान और इस केन्द्र के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया गया। इसका उद्घाटन प्रो० रजनी कोठारी ने किया। इस सेमिनार में पांच निबंध प्रस्तुत किए गए तथा इन्हें जनता गणतन्त्र दिवस अंक 1978 में प्रकाशित किया गया।

(4) "अन्तर-युद्ध अवधि में सोवियत संघ में राजनीतिक और सामाजिक विकास" पर एक दो द्विसीय कार्यशाला, बम्बई विश्वविद्यालय

के इतिहास विभाग, बम्बई विश्वविद्यालय के सोवियत अध्ययन केन्द्र तथा इस केन्द्र के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित की गई।

(5) केन्द्र ने, गोआ कालेजों के प्रिंसिपलों तथा अध्यापकों की एक बैठक 8 अप्रैल 1978 को आयोजित की ताकि उन्हें केन्द्र तथा परिषद् के कार्यकलापों की जानकारी दी जा सके।

(6) ऐसे उपायों की खोज करने के लिए जिनसे अनुसंधान की नवीनतम घटनाओं को अध्यापकों तक पहुंचाया जा सके और क्षेत्र के उप क्षेत्रों में अनुसंधान क्षमताओं का पता लगाया जा सके, केन्द्र ने महाराष्ट्र के विश्वविद्यालयों के कुलपतियों का एक द्विसीय सेमिनार भी आयोजित किया।

8.04 केन्द्र की विस्तार व्याख्यान माला कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रोफेसर (कुमारी) के० आर० राणादिव ने, "मूल्य सिद्धान्त तथा आय विश्लेषण—समेकन की आवश्यकता," के संबंध में नागपुर विश्वविद्यालव में तीन व्याख्यान दिए। एक ऐसी ही व्याख्यानमाला प्रोफेसर राणादिव द्वारा उत्तर-स्नातन शिक्षण तथा अनुसंधान केन्द्र, पणजी, गोआ में दी गई। बम्बई विश्वविद्यालय तथा केन्द्र के संयुक्त तत्वावधान में प्रोफेसर सी० एन० वकील तथा डा० पी० आर० ब्रह्मानन्दा द्वारा "प्रथम जनता बजट" पर एक सार्वजनिक व्याख्यान आयोजित किया गया। "द्वितीय जनता बजट" के संबंध में भी एक ऐसा ही व्याख्यान इन्हीं वक्ताओं द्वारा आयोजित किया गया।

8.05 वर्ष के दौरान, केन्द्र ने 34 विद्वानों को अध्ययन अनुदान दिए। 21 विद्वानों ने इस सुविधा का लाभ उठाया।

8.06 केन्द्र ने, भारतीय कृषि अर्थशास्त्र सोसायटी, बम्बई भूगोलीय एसोसिएशन, प्रोफेसर ए० आर० देसाई, बम्बई, श्री सुचिर दास गुप्त तथा डा० वी० जी० डिघे से या तो उपहारस्वरूप या जमा के आधार पर संस्थानिक तथा वैयक्तिक पुस्तकालय एकत्र किए हैं। उपरोक्त के अलावा, केन्द्र ने भारतीय शिक्षा संस्थान, बम्बई के संग्रह से 2,000 पुस्तकें खरीदी हैं।

8.07 केन्द्र, सामाजिक विद्वानों की 50 विदेशी और 26 भारतीय पत्रिकाओं का ग्राहक है। वर्ष के दौरान केन्द्र के पुस्तकालय में अन्तर-विषयक विषयों के संबंध में 225 से अधिक पुस्तकें शामिल की गई। केन्द्र भारत तथा विदेशों के विद्वानों को रेप्रोग्राफिक सुविधाएं भी प्रदान करता है। इनका व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। केन्द्र ने अपने उपस्कर में एक ओवरहेड फोटोफोन प्रोजेक्टर भी शामिल किया है।

पूर्व क्षेत्रीय केन्द्र

8.08 पूर्व क्षेत्रीय केन्द्र, कलकत्ता ने, अध्ययन अनुदानों के नियतन, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् द्वारा प्रायोजित विदेशी भ्रमणकारियों के लिए कार्यक्रम, व्याख्यान और सेमिनारों के आयोजन के संबंध में अपने कार्यकलापों को जारी रखा।

8.09 24 अनुसंधानकर्ताओं को अध्ययन अनुदान दिए गए।

8.10 भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् द्वारा आमंत्रित विदेशी समाज विज्ञानियों के दौरों का लाभ उठाकर केन्द्र ने वार्ताएं, दौरे तथा व्याख्यान आयोजित किए। विशिष्ट आमंत्रितों में निम्नलिखित व्यक्ति शामिल थे : (i) प्रोफेसर वालेरी पर्ल, इतिहास विभाग, विश्वविद्यालय कालेज, लन्दन ; और (ii) प्रोफेसर टी० शनीन, अध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग, मेनचेस्टर विश्वविद्यालय।

8.11 केन्द्र ने, "भारतीय कृषि : परिप्रेक्ष्य, समस्याएं तथा अनुसंधान रीतियां नामक विषय पर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर के सहयोग से अर्थशास्त्र में कालेज अध्यापकों के लिए मुजफ्फरपुर में एक उच्च पुनश्चर्या कार्यक्रम आयोजित किया। विश्वविद्यालय के सम्बद्ध कालेजों के 48 प्रतिनिधियों ने कार्यक्रम में भाग लिया। 20 से अधिक निबंध प्रस्तुत किए गए।

8 12 केन्द्र, ने समाज विज्ञान अध्ययन केन्द्र, कलकत्ता के सहयोग से 7 से 9 मार्च 1978 तक, पूर्वी भारत में खाद्यानों के सार्वजनिक वितरण की समस्याओं के संबंध में एक कार्यशाला भी आयोजित की। कार्यशाला में 24 निबंध प्रस्तुत किए गए और उन पर चर्चा की गई तथा भाग लेने वालों में असम, बिहार, उड़ीसा, त्रिपुरा, नागालेण्ड, मणिपुर तथा पश्चिम बंगाल के सरकारी अधिकारी तथा विद्वान शामिल थे।

8.13 केन्द्र द्वारा, समाज विज्ञान अध्ययन केन्द्र, कलकत्ता के सहयोग से "भारतीय औद्योगीकरण" पर 20 से 22 दिसम्बर 1977 तक एक सेमिनार आयोजित किया गया। सेमिनार के लेखे, 'इकानामिक एण्ड पालिटिकल वीकली' तथा 'सोशल साइंटिस्ट' में प्रकाशित किए गए।

8.14 केन्द्र ने, 300 पुस्तकें तथा समाज विज्ञानों में काफी संख्या में बुनियादी संदर्भ ग्रन्थ प्राप्त करके अपनी पुस्तकालय सुविधाओं में सुधार किया। वर्ष के दौरान, समाज विज्ञानों की 81 प्रमुख पत्रिकाएं, जिनमें से अधिकांश विदेशों में प्रकाशित हुई, खरीदी गई। इसके अतिरिक्त, केन्द्र, आठ

प्रमुख भारतीय दैनिक समाचार-पत्रों का भी ग्राहक था। केन्द्र ने, नक्शों के संग्रह के अपने कार्यक्रम के अन्तर्गत, राष्ट्रीय एटलस संगठन तथा भारतीय भौगोलिक सर्वेक्षण द्वारा प्रकाशित 165 शीट प्राप्त की। बंगला भाषा में गांधी ग्रन्थसूची को अद्यतन बनाने का कार्य जारी रहा।

8.15 केन्द्र में अनुसंधानकर्ताओं के उपयोग के लिए जिरोक्स सुविधाएं प्रदान करने के लिए एक फोटो-प्रतिलिपिकरण मशीन स्थापित की गई। जिरोक्स प्रतियां, न कोई लाभ, न कोई हानि, आधार पर मामूली दाम की अदायगी करके उपलब्ध की जाती है।

8.16 केन्द्र में, मामूली खर्च अदा करके एक समय में आठ से नौ अतिथियों के आवास के लिए अतिथि-गृह हैं।

दक्षिण क्षेत्रीय केन्द्र

8.17 दक्षिण क्षेत्रीय केन्द्र, हैदराबाद में उस्मानिया विश्वविद्यालय के कैम्पस में स्थित है। इसमें, अनुसंधान छात्रों के लिए एक बड़ा हाल, एक सुसज्जित सम्मेलन हाल, एक समिति कक्ष और भ्रमणकारी विद्वानों के लिए एक सुसज्जित अतिथि-गृह है। अपेक्षाकृत छोटी बैठकों के लिए अतिथि गृह में एक अतिरिक्त कमरा शामिल किया गया है और भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् तथा आन्ध्र प्रदेश सरकार द्वारा एक स्टेक रूम के निर्माण के लिए निधियां स्वीकृत की गई हैं।

8.18 प्रलेखन तथा ग्रन्थसूची संबंधी कार्य के क्षेत्र में केन्द्र ने, देश के प्रमुख पुस्तकालयों में उपलब्ध तेलुगु पुस्तकों की सटिप्पण ग्रन्थसूची के संकलन का कार्य पूरा किया। प्रेस कापी तैयार की गई और मुद्रण के लिए भेजी गई। उर्दू प्रौन्नति बोर्ड के सहयोग से, उर्दू पुस्तकों की सटिप्पण ग्रन्थसूची से संबंधित कार्य जारी रखा गया। वर्ष के दौरान, रजा पुस्तकालय, रामपुर; भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् पुस्तकालय, नई दिल्ली; नदवतुल उलेमा, लखनऊ; तथा खुदाबक्श पुस्तकालय, पटना को शामिल करना संभव हो सका। राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता में कार्य चल रहा है।

8.19 केन्द्र ने, तेलुगु और उर्दू की पुरानी तथा नई समाज विज्ञान पत्रिकाओं का अनुक्रमणिका कार्य भी जारी रखा।

8.20 वर्ष के दौरान, मौखिक इतिहास कार्यक्रम के अन्तर्गत छः प्रमुख व्यक्तियों का साक्षात्कार किया गया।

8.21 केन्द्र ने 234 अंग्रेजी पुस्तकें, 151 तेलुगु पुस्तकें, सात उर्दू पुस्तकें तथा दो हिन्दी पुस्तकें प्राप्त की। केन्द्र ने, अंग्रेजी, तेलुगु और उर्दू की

लगभग 250 पत्रिकाओं की खरीद जारी रखी, जो उस्मानिया विश्वविद्यालय द्वारा नहीं खरीदी जाती हैं :

8.22 निम्नलिखित प्रोत्साहन तथा प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए :

(1) केन्द्र ने, कोट्टायम (केरल राज्य में) तथा हैदराबाद में क्रमश: भारतीय क्षेत्रीय विकास संस्थान और उस्मानिया विश्वविद्यालय के शिक्षा कालेज के सहयोग से समाज विज्ञानों में अनुसंधान रीतिविज्ञान में दो अल्पकालिक प्रतिष्ठान पाठ्यक्रम आयोजित किए ।

(2) केन्द्र ने, केरल विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग के सहयोग से "अवर-स्नातक राजनीतिक विज्ञान शिक्षण" पर एक प्रशिक्षण-पाठ्यक्रम-एवं-कार्यशाला आयोजित की । कार्यशाला में पचास व्यक्तियों ने भाग लिया ।

(3) ककातिया विश्वविद्यालय, वारंगल के लोक प्रशासन विभाग में लोक प्रशासन में उभरती हुई प्रवृत्तियों "के संबंध में एक कार्य-शाला आयोजित की । कार्यशाला का प्रमुख उद्देश्य कालेज अध्यापकों को, विश्वविद्यालय क्षेत्र में स्नातक शिक्षण से संबंधित लोक प्रशासन की हाल ही की घटनाओं से अवगत कराना है । विभाग द्वारा कार्यशाला की कार्यवाही प्रकाशित की गई ।

(4) केन्द्र ने, उस्मानिया विश्वविद्यालय के संचार पत्राकारिता विभाग और एशियाई जन संचार अनुसंधान केन्द्र, सिंगापुर के सहयोग से "ग्रामीण संचार" के संबंध में एक क्षेत्रीय सेमिनार भी आयोजित किया, जिसमें न केवल शिक्षाविदों ने बल्कि सरकारी तथा गैर-सरकारी एजेन्सियों के पत्रकारिता के अभ्यासकर्ताओं ने भी भाग लिया ।

(5) केन्द्र ने, उस्मानिया विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग तथा आन्ध्र प्रदेश समाजशास्त्रीय एसोसिशन के सहयोग से, आन्ध्र प्रदेश में विकास कार्यक्रमों के समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य पर एक दो द्विसीय कार्यशाला के कागजात तथा कार्यवाही शीघ्र ही प्रकाशित की जाएगी ।

(6) केन्द्र ने, कालीकट विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग के सहयोग से स्वतंत्रता के बाद से केरल के आर्थिक विकास के संबंध में एक सेमिनार आयोजित किया । सेमिनार का उद्घाटन मद्रास

विश्वविद्यालय के कुलपति डा० एम० एस० आदिशेषय्या ने किया। सेमिनार में प्रस्तुत किए गए कागजातों को एक वाणिज्यिक फर्म द्वारा प्रकाशित किया जा रहा है।

(7) राष्ट्रीय ग्राम विकास संस्थान तथा क्षेत्रीय केन्द्र ने 'ग्रामीण टेली-विजन की उपयुक्त नीति' पर एक क्षेत्रीय सेमिनार का आयोजन किया। सेमिनार का प्रमुख उद्देश्य, सूचना के प्रसारण तथा टेलीविजन के माध्यम से प्रसारित नई प्रणालियां अपनाने में आने वाली बाधाओं तथा ग्रामीण समुदाय द्वारा नई प्रणालियां अपनाने की दृष्टि से उसकी सीमाओं का पता लगाना था।

(8) केन्द्र ने, "दक्कन इतिहास में सामाजार्थिक स्तर" के संबंध में सेमिनार आयोजित करने में उस्मानिया विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग की मदद की। सेमिनार का प्रमुख आयोजन भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद् द्वारा किया गया।

(9) केन्द्र ने, मद्रास विकास अध्ययन संस्थान के सहयोग से, ग्राम अध्ययन के संबंध में एक अन्तर-विषयक अनुसंधान रीतिविज्ञान कार्यशाला आयोजित की। दक्षिण भारत से उन्नीस उम्मदिवारों ने कार्यशाला में भाग लिया।

(10) केन्द्र ने, मद्रास विकास अध्ययन संस्थान के सहयोग से दक्षिणी विश्वविद्यालयों के समाज विज्ञान विभागों के अध्यक्षों की सातवीं वार्षिक बैठक मद्रास में आयोजित की। बैठक में, अन्य बातों के साथ-साथ, विश्वविद्यालयों में समाज विज्ञान शिक्षण और अनु-संधान की समस्याओं और प्रगति तथा क्षेत्रीय भाषाओं में समाज विज्ञान पाठ्यपुस्तकों के प्रकाशन की स्थिति पर विचार किया गया। मद्रास विश्वविद्यालय के कुलपति डा० एम० एस० आदिशेषय्या ने बैठक की अध्यक्षता की।

उत्तर-पूर्वी क्षेत्रीय केन्द्र

8.23 भारतीय सामाजिक विकास अनुसंधान परिषद् ने, उत्तर-पूर्वी पर्वतीय विश्वविद्यालय के क्षेत्रों तथा असम और डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालयों को मिलाकर पूरे उत्तर-पूर्वी क्षेत्र के लिए उत्तर-पूर्वी पर्वतीय विश्वविद्यालय के कैम्पस में अपना उत्तर-पूर्वी क्षेत्रीय केन्द्र स्थापित किया। आलोच्य अवधि के दौरान, केन्द्र ने कुछ अपेक्षित बुनियादी अवस्थापना का निर्माण कर लिया है। इसने, अपना एक कार्यालय, पुस्तकालय के लिए एक वाचनालय और

पत्रिका कक्ष तथा भ्रमणकारी विद्वानों के लिए छः बिस्तरों का एक अतिथि गृह स्थापित कर लिया है। केन्द्र ने, लगभग 300-400 पुस्तकों और पत्रिकाओं के एक छोटे से संग्रह द्वारा अपने पुस्तकालय के निर्माण के लिए एक कार्यक्रम प्रारंभ किया है। इसने क्षेत्र में समाज विज्ञानियों को एक रजिस्टर का संकलन किया है।

8.24 केन्द्र ने, उत्तर-पूर्वी पर्वतीय विश्वविद्यालय के साथ सहयोग से 24 अक्तूबर से 5 नवम्बर 1977 तक अनुसंधान रीतिविज्ञान में एक प्रतिष्ठान पाठ्यक्रम आयोजित किया (पाठ्यक्रम में, उत्तर-पूर्वी क्षेत्र के विभिन्न भागों के लगभग 25 अध्यापकों तथा अनुसंधानकर्ताओं ने भाग लिया। बाहर के प्रमुख समाज विज्ञानियों ने सेमिनार की सफलता के लिए अपना योग दिया।

8.25 केन्द्र ने, 'क्षेत्र में युवकों की समस्याओं' पर 27-28 मार्च 1978 को एक सेमिनार भी आयोजित किया।

8.26 केन्द्र ने, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् के उत्तर-पूर्वी क्षेत्रीय केन्द्र तथा भारतीय पुरातत्वीय सर्वेक्षण के सहयोग से 'पर्वतीय लोगों की सामाजिक तथा राजनीतिक संस्थाओं' पर भी एक सेमिनार आयोजित किया। सेमिनार में 35 व्यक्तियों ने भाग लिया।

8.27 विस्तार व्याख्यान माला के अपने कार्यक्रमों के अंतर्गत केन्द्र ने निम्नलिखित व्याख्यान आयोजित किए :

1. प्रोफेसर बी० पी० हईमोन ड्रोफ, अवै० प्रोफेसर, लन्दन प्राच्य तथा अफ्रीकी अध्ययन स्कूल, "हिमालयाई व्यापारी" पर एक व्याख्यान।
2. प्रोफेसर मूनिस राजा, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, 'कम-विकास की स्थानिक संरचना' पर एक व्याख्यान।
3. प्रोफेसर एम० अनस, भूगोल विभाग, अलीगढ़ विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश, "उत्तर पूर्वी क्षेत्र के संदर्भ में विकास के भूगोल का प्रेक्षण" पर एक व्याख्यान।
4. प्रोफेसर एस० शुक्ल, शिक्षा संकायाध्यक्ष, जामिया मिलिया विश्वविद्यालय, नई दिल्ली—"गैर-औपचारिक शिक्षा—एक तुलनात्मक तथा सामाजिक विज्ञान" पर एक व्याख्यान।

उत्तर-पूर्वी केन्द्र

8.28 जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के सहयोग से विश्वविद्यालय के परिसर में एक उत्तर क्षेत्रीय केन्द्र स्थापित किया गया है। इसके स्थायी कार्यालय के लिए, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के पुस्तकालय भवन की

पहली मंजिल को, जो निर्माणाधीन है, चुना गया है। भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् ने, पुस्तकालय भवन, के निर्माण के लिए अपने अंशदान के रूप में 13.50 लाख रुपये का अनुदान दिया है। भवन का निर्माण कार्य 1978-79 में पूरा हो जाने की आशा है। विश्वविद्यालय ने, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् को, अपने गोमती अतिति-गृह की सुविधाएं भी उपलब्ध की हैं। इसने भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् को, उसके अन्तर-पुस्तकालय संसाधन केन्द्र के लिए, अपने पुस्तकालय भवन की भी सुविधाएं नि.शुल्क प्रदान की हैं।

8.29 जनवरी 1975 से, सामाजिक विज्ञान प्रलेखन केन्द्र के पत्रिका अनुभाग के आयोजन तथा प्रबंध का कार्य जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय ने संभाल लिया है। केन्द्र तथा विश्वविद्यालय ने लगभग 2,000 सामाजिक विज्ञान पत्रिकाओं की खरीद को जारी रखा। जिन समाज विज्ञानियों को पत्रिकाओं के सूची-पत्र की आवश्यकता होती है उन्हें वह उपलब्ध कराया जाता है। पत्रिकाओं से संबंधित साहित्य की एक अनुक्रमणिका तैयार करने का भी कार्यक्रम तैयार किया गया है।

8.30 सुविधा की दृष्टि से, केन्द्र की अध्ययन अनुदान योजना, उत्तर क्षेत्रीय केन्द्र के अवैतनिक निदेशक के पर्यवेक्षण में सामाजिक विज्ञान प्रलेखन केन्द्र में चलाई जा रही है। आलोच्य वर्ष के दौरान, कुल 145 अध्ययन अनुदान स्वीकृत किए गए।

8.31 केन्द्र ने, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय पुस्तकालय में जिरोक्स सुविधा कायम की है और यूनिट को चलाने के लिए एक पूर्णकालिक रेप्रोग्राफिक सहायक नियुक्त किया गया है। यह सुविधा, कोई लाभ नहीं—कोई हानि नहीं के आधार पर उपलब्ध की जाती है।

8.32 केन्द्र ने, भारतीय भाषाओं के माध्यम से प्रतिभा का पता लगाने और उसके विकास, सामजिक विज्ञान अनुसंधान तथा शोध कार्य को प्रोत्साहित करने की एक योजना तैयार की है। इस दिशा में पहले कदम के रूप में केन्द्र, समाज शास्त्र विषय के नेताओं का एक सम्मेलन आयोजित करेगा।

उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रीय केन्द्र

8.33 आलोच्य वर्ष के दौरान, चण्डीगढ़ में उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रीय केन्द्र स्थापित किया गया, और उसने जुलाई 1977 से कार्य करना शुरू कर दिया। यह पंजाब विश्वविद्यालय के कैम्पस में स्थित है और उसके सहयोग से कार्य करता है इसके क्षेत्राधिकार के अन्तर्गत हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश

और संघीय क्षेत्र, चण्डीगढ़ शामिल हैं।

8.34 केन्द्र के कार्य का पर्यवेक्षण करने के लिए पंजाब विश्वविद्यालय के कुलपति की अध्यक्षता में एक सलाहकार समिति स्थापित की गई है। प्रोफेसर वी० एम० डी० शूजा, जिन्हें केन्द्र का अवैतनिक निदेशक नियुक्त किया गया है, समिति के सदस्य-सचिव होंगे। समिति में, हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश की सरकारों तथा संघीय क्षेत्र चण्डीगढ़, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् के प्रतिनिधि तथा इस क्षेत्र के विश्वविद्यालयों के समाज विज्ञानी शामिल हैं।

8.35 केन्द्र ने, इस क्षेत्र के समाज विज्ञानियों के साथ सम्पर्क स्थापित करने का एक विशाल कार्यक्रम शुरू किया है। इसने, विश्वविद्यालयों के समाज विज्ञानियों को पत्र लिखे जिसमें उन्हें केन्द्र की स्थापना तथा इसके कार्यक्रमों और सुविधाओं के बारे में जानकारी कराई गई।

8.36 केन्द्र ने, समाज विज्ञानियों, अध्यापकों तथा अनुसंधानकर्त्ताओं की बढ़ती हुई मांगों को पूरा करने के लिए एक रेप्रोग्राफिक यूनिट स्थापित किया है। इसने, विश्वविद्यालय पुस्तकालय से कोरस्टेट 171 पुस्तकालय माडल फोटो-कापिंग मशीन प्राप्त की तथा तुरंत रेप्रोग्राफिक सेवा के लिए एक स्वचालित ओ० सी० ई०-1250 इलेक्ट्रो-कापियर खरीदा, जहां साधारण दरों पर सुविधाएं प्रदान की जाती हैं।

8.37 पंजाब विश्वविद्यालय, पुस्तकालय में समाज विज्ञानों के क्षेत्र में पुस्तकालय तथा संदर्भ सेवा को समर्थन प्रदान करने के उद्देश्य से केन्द्र ने, पंजाब विश्वविद्यालय पुस्तकालय द्वारा पहले से खरीदी जाने वाली पत्रिकाओं के अलावा समाज विज्ञानों को लगभग 45 नई पत्रिकाएं खरीदना शुरू कर दिया। इसके अतिरिक्त, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्, सामाजिक विज्ञान प्रलेखन केन्द्र, नई दिल्ली से साभार स्वरूप अनेक पत्रिकाएं तथा पुस्तकें प्राप्त होती हैं।

8.38 केन्द्र ने, वर्ष के दौरान निम्नलिखित सेमिनार आयोजित किए :

(1) 'अनुसंधान नीति निर्माण में कुछ सुविधाएं'—टाटा समाज विज्ञान संस्थान, बम्बई के निदेशक प्रोफेसर एम० एस० गोरे द्वारा।

(2) 'सामाजिक आन्दोलन में कृषकों की भूमिका'—मेनचेस्टर विश्वविद्यालय में समाज शास्त्र के प्रोफेसर, प्रोफेसर ट्योडर शनीन द्वारा।

(3) 'वर्तमान बजट का समालोचनात्मक विश्लेषण'—बम्बई विश्वविद्यालय के प्रोफेसर पी० आर० ब्रह्मनन्दा द्वारा।

केन्द्र ने, 5 से 7 दिसम्बर 1977 तक 'भारत में युवक समस्याओं' पर भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् क्षेत्रीय सेमिनार आयोजित करने में पंजाब विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग को सहायता प्रदान की।

8.39 केन्द्र में आने वाले व्यक्तियों में निम्नलिखित व्यक्ति शामिल थे : प्रोफेसर एम० एस० गौरे, डा० ट्योडर शनीन, श्री जे० पी० नायक, प्रोफेसर जे० बी० फेरेरिआ तथा प्रोफेसर पी० आर० ब्रह्मानन्दा।

IX

अन्य एजेन्सियों के साथ सहयोग

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्-भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् पैनल

9.01 भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् तथा भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् के संयुक्त वैज्ञानिक पैनल की तीसरी बैठक, श्री ए० वेंकठरमन की अध्यक्षता में 27 और 28 जून 1977 को हुई। पैनल की बैठक में मुख्यत: निम्नलिखित कागजातों पर चर्चा हुई ।

1. "भारत में चावल उत्पादन के स्तर और विकास—1962-65 से 1970-73"—जी० एस० भल्ला द्वारा ।
2. "पश्चिम बंगाल की चावल अर्थ-व्यवस्था पर टिप्पणियां"—रणजीत साऊ द्वारा ।
3. "बिहार में चावल की कम पैदावार के कारण"—पी० एच० प्रसाद द्वारा ।
4. "मध्य प्रदेश में चावल उत्पादन में स्थिरता"—सी० एस० मिश्र द्वारा ।
5. "उड़ीसा में चावल की पैदावार"—बी० मिश्र द्वारा ।
6. "जिला तन्जावूर, तमिलनाडु में चावल उत्पादन : प्रगति तथा समस्याएं' —ए० वेंकटरमन द्वारा ।
7. "भारत में चावल उत्पादनं बढ़ाने के प्रौद्योगिकीय पहलू"—एस० पटनायक तथा आर० सीतारमन द्वारा ।

9.02 जिन कागजों पर चर्चा हुई उनके तथा बैठक में हुई चर्चा के अनुसार संशोधित कागजों के आधार पर "चावल" पर एक प्रकाशन प्रकाशित करने तथा शुरू किए जाने वाले निम्नलिखित अतिरिक्त कागजों को उसमें शामिल करने का निर्णय किया गया :

1. "चावल में छिपी पैदावार क्षमता"—एस० के० शर्मा द्वारा ।
2. "चावल उत्पादन के लिए प्रभावी जल व्यवस्था"—ए० एम० माइकल द्वारा ।
3. "चावल में कटाई-उपरान्त प्रौद्योगिकी"—सी० पी० गुप्त द्वारा ।

4. "चावल में कटाई-उपरान्त प्रौद्योगिकी"—एच० के० पाण्डे द्वारा ।
5. "कृषि प्रबंध तथा प्रशासन"—एस० एच० देशपाण्डे द्वारा ।
6. "चावल के विशेष संदर्भ में जनजातीय कृषि"—कुलामणि महापात्र द्वारा ।

9.03 पैनल ने वित्तीय सहायतार्थ निम्नलिखित अनुसंधान प्रस्ताव अनुमोदित किए :

1. आर० रविन्द्र, तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, कोयम्बतूर—तमिलनाडु के चुने हुए ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि समुदायों में खेती के अतिरिक्त अव्यावसायिक रुचि तथा अवसर ।
2. के० राधाकृष्णामेनन, कृषि कालेज तथा अनुसंधान संस्थान, कोयम्बतूर—कामगर प्रभावों के रूप में ग्राम स्कूल अध्यापकों की क्षमता का अध्ययन ।

9.04 "प्रौद्योगिकीय परिवर्तनों के प्रभाव अध्ययन" के संबंध में अपने विचार बताते हुए डा० एम० एस० स्वामीनाथन ने न केवल उत्पादन और आय पर बल्कि इसके सामाजिक और आर्थिक प्रभावों पर भी" प्रौद्योगिकीय परिवर्तन के प्रभावों के संबंध में अध्ययन करने की आवश्यकता पर बल दिया और उसके संदर्भ में बायो गैस संयत्र, समुद्री ट्रावलरों, पादप संरक्षण रसायनों, और कृषि के मशीनीकरण का उल्लेख किया ।

9.05 उड़ीसा में जनजातीय खेती, विशेष रूप से चावल के संदर्भ में, एक कार्यशाला आयोजित करने का निर्णय किया गया । ब्योरे तैयार किए जा रहे हैं ।

9.06 वर्तमान पैनल की कार्यावधि 1977 तक समाप्त हो गई । इस सहयोग को अन्य लाभप्रद कार्यों के लिए जारी रखने के उद्देश्य से कार्यक्रम को दो और वर्ष के लिए बढ़ाने का निश्चय किया गया है । तदनुसार पैनल का निम्न प्रकार पुनर्गठन किया गया है :

अध्यक्ष

1. प्रोफेसर ए० वैद्यनाथन, विकास अध्ययन केन्द्र, उल्लूर, त्रिवेन्द्रम ।

सदस्य

2. प्रोफेसर वी० एस० व्यास, भारतीय प्रबंध संस्थान, वस्त्रपुर, अहमदाबाद ।
3. प्रोफेसर वी० एम० राव, सामाजिक तथा आर्थिक परिवर्तन संस्थान, बंगलौर ।

4. प्रोफेसर सी० एच० शाह, अर्थशास्त्र विभाग, बम्बई विश्वविद्यालय, बम्बई ।
5. डा० एल० के सेन, अध्यक्ष, अनुसंधान तथा मूल्यांकन प्रभाग, ग्रामीण विद्युतीकरण निगम, नई दिल्ली ।
6. डा० (श्रीमती) शीला भल्ला, आर्थिक अध्ययन केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, न्यू महरोली रोड, नई दिल्ली ।
7. डा० रणबीर सिंह, कुलपति, उदयपुर विश्वविद्यालय, उदयपुर
8. डा० एन० पी० पाटिल, निदेशक, भारतीय सामाजिक-आर्थिक अध्ययन संस्थान, 32,रेस कोर्स रोड, बंगलौर ।
9. डा० एच० के० पाण्डे, निदेशक, केन्द्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक
10. डा० (श्रीमती) एस० बजाज, गृह विज्ञान कालेज, पंजाब कृषि विश्व-विद्यालय, लुधियाना (पंजाब) ।
11. डा० ई० जी० सिलास, निदेशक, केन्द्रीय समुद्री मत्स्य अनुसंधान संस्थान, कोचिन ।
12. डा० आर० के० पटेल, अध्यक्ष, दुग्ध अर्थशास्त्र, राष्ट्रीय दुग्ध अनु-संधान संस्थान, करनाल (हरियाणा) ।

सदस्य-सचिव

13. डा० एस० के० शर्मा, सहायक निदेशक, सामान्य (विस्तार), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली ।

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् की ओर से

14. प्रोफेसर डी० डी० नरूला, निदेशक, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनु-संधान परिषद्, नई दिल्ली ।

9.08 संयुक्त पैनल का कार्यकाल 31 दिसम्बर 1977 को समाप्त हो गया और भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद के परामर्श से इसका जनवरी 1978 से दो वर्ष की अवधि के लिए निम्न प्रकार पुनर्गठन किया गया :

अध्यक्ष

1. डा० सी० गोपालन, महानिदेशक, भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद् ।

सदस्य

2. डा० वी० एन० राव, उप-महानिदेशक, भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद् ।

3. डा० श्रीकान्तिया, निदेशक, केन्द्रीय पोषण संस्थान, हैदराबाद ।
4. डा० ताजुज्ह, भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद
5. डा० राज आरोले, जामखेड
6. प्रोफेसर पी० जी० के० पाणिकर, विकास अध्ययन केन्द्र, त्रिवेन्द्रम
7. श्री जे० पी० नायक, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्
8. प्रोफेसर वी० एन० कोठारी, एम० एस० विश्वविद्यालय, बड़ौदा ।
9. प्रोफेसर अली बाक़र, विकासशील सोसायटियों के लिए अध्ययन केन्द्र, दिल्ली ।

सदस्य-सचिव

10. प्रोफेसर टी० एन० मदान

पैनल को, उसके द्वारा अध्ययन या चर्चा किए जाने वाले विभिन्न विषयों के लिए विशेषज्ञों को सहयोजित या आमंत्रित करने के लिए प्राधिकृत किया गया है ।

अन्य परियोजनाएं

9.09 राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान तथा प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली के सहयोग से सहयोगात्मक अनुसंधान परियोजनाएं जारी रही ।

9.10 निर्माण तथा आवास मंत्रालय के सहयोग से आवास (शहरी तथा ग्रामीण) में वैकल्पिक घटनाओं के संबंध में एक पैनल का गठन किया गया है ।

X

अन्य कार्यक्रम

समाज विज्ञानियों के व्यावसायिक संगठनों के लिए अनुरक्षण तथा विकास अनुदान

10.01 समाज विज्ञानों की संस्थात्मक संरचना को समर्थन तथा सुदृढ़ करने की योजना के अन्तर्गत भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्, राष्ट्रीय स्तर पर कार्य कर रहे समाज विज्ञानियों के व्यावसायिक संगठनों को पांच वर्ष की अवधि के लिए उपस्कर आदि की खरीद के लिए 5,000 रु० प्रति वर्ष का अनावर्ती सहायक-अनुदान तथा 5,000 रु० प्रतिवर्ष का आवर्ती सहायक-अनुदान इस शर्त पर देती है कि लाभ-प्राप्तकर्त्ता व्यावसायिक संगठन कम से कम 3,000 रु० प्रति वर्ष अपने संसाधनों से इकट्ठे करे। तथापि भारतीय आर्थिक एसोसिएशन को 10,000 रु० का वार्षिक अनुदान इस शर्त पर दिया जा रहा है कि एसोसिएशन अपनी सदस्यता तथा चन्दे के शुल्क के रूप में कम से कम 50,000 रुपये एकत्र करेगी।

10.02 आलोच्य वर्ष के दौरान, निम्नलिखित संस्थाओं को सहायक अनुदान स्वीकृत किए गए :

1. भारतीय आर्थिक एसोसिएशन
2. भारतीय प्रशिक्षित सामाजिक कामगर एसोसिएशन
3. जनसंख्या अध्ययन के लिए भारतीय एसोसिएशन
4. भारतीय इकानामेट्रिक सोसायटी
5. भारतीय भाषाई सोसायटी
6. भारतीय मनोवैज्ञानिकी एसोसिएशन
7. क्षेत्रीय विज्ञान एसोसिएशन
8. पूर्व-स्कूल शिक्षा के लिए भारतीय एसोसिएशन।

सेमिनार

10.03 परिषद् ने, आलोच्य वर्ष के दौरान निम्ननिलिखित सेमिनारों, सम्मेलनों के लिए वित्तिय सहायता दी :

(1) **भारत में लोक प्रशासन शिक्षण :** भारतीय लोक प्रशासन संस्थान, भारतीय लोक प्रशासन एसोसिएशन, नीति अनुसंधान केन्द्र तथा भारतीय

सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् द्वारा भारत में लोक प्रशासन के शिक्षण के संबंध में संयुक्त रूप से प्रायोजित सेमिनार का आयोजन 22 और 23 अप्रैल 1977 को लोक प्रशासन संस्थान में किया गया । सेमिनार के निम्न-लिखित उद्देश्य थे : (क) भारतीय विश्वविद्यालयों में लोक प्रशासन में शिक्षण तथा अनुसंधान में हुई घटनाओं का जायजा लेना, और (ख) लोक प्रशासन में अध्ययन तथा अनुसंधान को सुदृढ़ करने के उपाय तथा साधन सुझाना । विभिन्न विश्वविद्यालयों तथा संस्थाओं के लगभग 35 समाज विज्ञानियों ने चर्चा में भाग लिया । सेमिनार पर 6,465.80 रुपये खर्च हुए ।

(2) **औसत दुरुपयोग के संबंध में कार्यशाला : अनुसंधान समस्याएं तथा प्राथमिकताएं :** औषध व्यसन संबंधी राष्ट्रीय समिति ने, अखिल भारतीय चिकित्सा विज्ञान संस्थान के सहयोग से "औषध दुरुपयोग : अनु-संधान समस्याओं तथा प्राथमिकताओं" के संबंध में एक कार्यशाला आयोजित की । भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् ने खर्चे के लिए 5,000 रुपये का सहायक-अनुदान दिया ।

(3) **बच्चे तथा उनके माता-पिताओं में समकालीन परिवर्तनों के प्रभावों की एक परस्पर-राष्ट्रीय जांच :** बाल मनः चिकित्सा तथा सम्बद्ध व्यवसायों की अन्तर्राष्ट्रीय एसोसिएशन के अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन दल ने बी० एम० मानसिक स्वास्थ्य संस्थान, अहमदाबाद में 30 अक्तूबर से 2 नवम्बर 1977 तक एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया । सम्मेलन का विषय था : 'बच्चे तथा उनके माता-पिताओं में समकालीन परिवर्तनों के प्रभावों की एक परस्पर-राष्ट्रीय जांच' । सम्मेलन में लगभग 25 विदेशी प्रतिनिधियों तथा 15 भारतीय प्रतिनिधियों ने विचार-विमर्श में भाग लिया । भारतीय प्रतिनिधियों को यात्रा खर्च के लिए 10,000 रुपये का सहायक-अनुदान स्वीकृत किया गया ।

(4) **भारत में कानूनी शिक्षा का स्तर :** विश्वविद्यालय में कानूनी शिक्षा के स्तर की जांच करने तथा उसमें सुधार तथा पुनर्गठन के लिए सिफारिशें करने के लिए मद्रास विश्वविद्यालय द्वारा नियुक्त विधि आयोग की रिपोर्ट में दी गई सिफारिशों पर विचार करने के लिए बार परिषद्, मद्रास के सदस्यों, विधि कालेज, मद्रास के संकाय अध्यापकों तथा छात्रों और विश्व-विद्यालय अनुदान आयोग, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् तथा तमिलनाडु सरकार के प्रतिनिधियों का एक तीन दिवसीय सम्मेलन 28 जून 1977 को मद्रास विश्वविद्यालय में आयोजित किया गया । भारतीय सामा-जिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् ने अपनी ओर से सम्मेलन में भाग लेने के

लिए दिल्ली विश्वविद्यालय के विधि संकाय के अध्यक्ष प्रोफेसर उपेन्द्र बक्शी को प्रतिनियुक्त किया ।

(5) **कुष्ठ रोग नियंत्रण के लिए नीति :** केन्द्रीय कुष्ठ रोग शिक्षण तथा प्रशिक्षण संस्थान तथा कुष्ठ रोगविदों की भारतीय एसोसिएशन के संयुक्त तत्वावधान में कुष्ठ रोग नियंत्रण के लिए नीति के संबंध में चिंगल-पाटू में एक सेमिनार आयोजित किया गया । भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् ने सेमिनार में भाग लेने के लिए सामाजिक तथा आर्थिक परिवर्तन के लिए संस्थान, बंगलौर के वरिष्ठ फैलो तथा समाजशास्त्र यूनिट के अध्यक्ष, प्रोफेसर एम० एन श्रीनिवास को प्रतिनियुक्त किया ।

(6) **ग्रामीण विकास की गति को तेज करने में ग्रामीण सामाजिक वर्गों तथा कृषि प्रणाली की भूमिका के संबंध में गोष्ठी :** ग्रामीण विकास की गति को तेज करने में 'ग्रामीण सामाजिक वर्गों तथा कृषि प्रणाली की भूमिका' के संबंध में भारतीय समाज विज्ञान अकादमी की तीसरी भारतीय सामाजिक विज्ञान कांग्रेस में 5 से 8 फरवरी 1978 तक कानपुर में एक तीन द्विसीय चर्चा आयोजित की गई । संगोष्ठी के लिए 1,500 रु० का सहायक-अनुदान स्वीकृति किया गया ।

(7) **पूर्व-स्कूल बच्चों की रचनात्मक गतिविधियों पर संगोष्ठी :** 'पूर्व-स्कूल बच्चों की रचनात्मक गतिविधियों पर एक एक-द्वितीय संगोष्ठी का आयोजन पूर्व-स्कूल शिक्षा के लिए भारतीय एसोसिएशन तथा भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् के संयुक्त तत्वावधान में फरवरी 1978 में कोयम्बतूर में किया गया । संगोष्ठी के लिए 1,500 रुपये का सहायक-अनुदान स्वीकृत किया गया ।

(8) **संविधान तथा पिछड़े वर्गों के संबंध में कार्यशाला :** भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् तथा अखिल भारतीय विधि अध्यापक एसोसिएशन के संयुक्त तत्वावधान में 28 और 29 दिसम्बर 1977 को उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद में आयोजित सत्रहवें अखिल भारतीय विधि अध्यापक सम्मेलन में 'संविधान तथा पिछड़े वर्गों के संबंध में एक एक-द्विसीय सामाजिक-कानूनी कार्यशाला आयोजित की गई । कार्यशाला के लिए 1,500 रु० का सहायक-अनुदान स्वीकृत किया गया ।

(9) **विद्यालय तथा कालेज वित्त के संबंध में राष्ट्रीय सेमिनार :** भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् तथा भारतीय विश्वविद्यालय एसोसिएशन के संयुक्त तत्वावधान में 'विश्वविद्यालय तथा कालेज वित्त' के संबंध में, भारतीय लोक प्रशासन संस्थान, नई दिल्ली में 10 से 12 मार्च

1978 तक तीन द्विसीय राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किया गया। कुलपतियों, कालेजों के प्रधानाचार्यों शिक्षाविदों तथा शैक्षिक प्रशासकों सहित लगभग 25 प्रतिनिधियों ने सेमिनार में भाग लिया। सेमिनार के लिए 18,658 रु० का सहायक-अनुदान स्वीकृत किया गया।

भारत में सामाजिक विज्ञान अनुसंधान के लिए वित्त-व्यवस्था-1974-75 से 1977-78—का समालोचनात्मक अध्ययन

10.04 समाज विज्ञानों में शोध कार्यकलापों के समन्वय की अपनी भूमि निभाने तथा साथ ही समाज विज्ञान अनुसंधान के क्षेत्र में निकासी गृह कार्य करने के लिए परिषद् को समर्थ बनाने के उद्देश्य से, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् ने उपरोक्त अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य, अन्य बातों के साथ-साथ, समाज विज्ञान अनुसंधान प्रायोजित करने वाली धन देने वाली एजेन्सियों का पता लगाना तथा वित्तिय सहयोग की मात्रा, वित्त के स्रोत तथा विभिन्न एजेन्सियों/सरकारी विभागों तथा संस्थाओं द्वारा किए जाने वाले कार्यकलापों का विश्लेषण करना है। इसका उद्देश्य, इन परियोजनाओं के लिए वित्तिय सहायता प्रदान करने की नीतियों तथा प्रक्रियाओं को तेज करने व उन्हें तर्कसंगत बनाने, समाज विज्ञान अनुसंधान करने वाली। सहायता प्रदान करने वाली विभिन्न एजेन्सियों के बीच नीतियों के समन्वय और सूचना के आदान-प्रदान की प्रणाली में सुधार करने के संबंध में सुझाव देना है। आशा है कि यह अध्ययन दो वर्ष की अवधि में पूरा हो जाएगा। छः समाज विज्ञानियों, आयोजकों तथा समाज विज्ञानों में अनुसंधान से संबंधित व्यक्तियों की एक सलाहकार समिति गठित की गई है ताकि अध्ययन करने के लिए मार्गदर्शन प्राप्त हो सके।

परिशिष्ट-I

31-3-1978 की स्थिति के अनुसार भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् का गठन

अध्यक्ष

प्रोफेसर रजनी कोठारी
प्रोफेसर, राजनैतिक विज्ञान
दिल्ली विश्वविद्यालय
तथा
वरिष्ठ फैलो, विकासशील सोसायटियों
के लिए अध्ययन केन्द्र, दिल्ली

सदस्य

1. प्रोफेसर (कुमारी) अलू जे० दस्तूर
   नागरिक-शास्त्र तथा राजनीति-शास्त्र विभाग, बंबई विश्व-विद्यालय
   बम्बई ।
2. प्रोफेसर एम० एन० श्रीनिवास,
   सामाजिक तथा आर्थिक
   परिवर्तन संस्थान,
   बंगलौर ।
3. प्रोफेसर बलवंत रेड्डी
   भारतीय प्रशासानिक
   स्टाफ कालेज,
   हैदराबाद ।
4. प्रोफेसर मोहम्मद शफी
   समकुलपति
   अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय,
   अलीगढ़
5. डा० डी० के० दत्त,
   निदेशक,
   भारतीय समाज कल्याण
   तथा व्यापार प्रबन्ध संस्थान,
   कालेज स्केअर वैस्ट,
   कलकत्ता ।
6. श्री आर० के० पाटिल,
   सर्व सेवा संघ
   सिविल लाइन्स,
   नागपुर ।
7. प्रोफेसर सतीश चन्द्र,
   अध्यक्ष,
   विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
   बहादुर शाह जफर मार्ग,
   नई दिल्ली ।
8. प्रोफेसर रामकृष्ण मुखर्जी,
   भारतीय सांख्यिकी संस्थान,
   203, बैरेकपुर ट्रंक रोड,
   कलकत्ता ।
9. प्रोफेसर डी० एम० ननजुन्डप्पा,
   सलाहकार,
   कर्नाटक सरकार,
   योजना विभाग,
   विधान सौधा,
   बंगलौर ।

10. प्रोफेसर एस० चक्रवर्ती,
दिल्ली अर्थशास्त्र स्कूल,
विश्वविद्यालय एनक्लैव,
दिल्ली ।

11. प्रोफेसर वाई० के० अलघ,
सलाहकार
परिप्रेक्ष्य योजना प्रभाग,
योजना आयोग,
योजना भवन,
पार्लियामेन्ट स्ट्रीट,
नई दिल्ली ।

12. प्रोफेसर इकबाल नारायण,
राजनीति शास्त्र विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर ।

13. प्रोफेसर अबद अहमद,
डीन,
प्रबन्ध-अध्ययन संकाय,
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली ।

14. प्रोफेसर वी० पी० दत्त,
17, बलवंत राय मेहता लेन,
नई दिल्ली ।

15. प्रोफेसर ए० के० सिंह,
अध्यक्ष,
मनोविज्ञान विभाग,
रांची विश्वविद्यालय,
रांची ।

16. प्रोफेसर सी० पर्वतम्मा,
समाज-विज्ञान विभाग,
मैसूर विश्वविद्यालय,
मैसूर ।

17. श्री पी० सबानाचगम,
सचिव,
शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय,
शिक्षा विभाग,
शास्त्री भवन,
नई दिल्ली ।

18. श्री जी० रामचन्द्रन,
सचिव
वित्त मंत्रालय,
व्यय विभाग,
नई दिल्ली ।

19. श्री टी० सी० ए० श्रीनिवास-वर्धन,
सचिव,
गृह मंत्रालय,
नई दिल्ली ।

20. प्रोफेसर आर० एस० शर्मा,
22, कैवलरी लाइन्स,
दिल्ली ।

21. डा० एम० एस० स्वामिनाथन,
भारतीय कृषि अनुसंधान
परिषद, कृषि भवन,
नई दिल्ली ।

22. श्री पी० पद्मनाभ
भारत का महापंजीयक,
2-ए०, मान सिंह रोड,
नई दिल्ली ।

23. श्री सरन सिंह,
सचिव,
शिक्षा तथा समाज कल्याण
मंत्रालय,
समाज कल्याण विभाग,
शास्त्री भवन,
नई दिल्ली ।

24. न्यायमूर्ति श्री वी० आर० कृष्ण
अय्यर,
6, मोतीलाल नेहरू प्लेस,
नई दिल्ली ।

सदस्य-सचिव

श्री जे० पी० नायक

परिशिष्ट-II

वे संस्थाएं । संगठन, जिन्हें प्राप्त हुए दान को आय कर अधिनियम 1961 की धारा 35 (i) (iii) के अन्तर्गत आय कर से छूट दी गई ।

1. कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़ ।
2. बनस्थली विद्यापीठ, जयपुर ।
3. राष्ट्रीय प्रेरणात्मक तथा संस्थागत विकास संस्थान, बम्बई ।
4. राष्ट्रीय लोक वित्त तथा नीति संस्थान, नई दिल्ली ।
5. किशोर भारती, होशंगाबाद ।
6. दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय, सूरत ।
7. जेवियर श्रम सम्बन्ध संस्थान, जमशेदपुर ।
8. सागर विश्वविद्यालय, सागर ।
9. सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, राजकोट ।
10. विकास अध्ययन तथा कार्यकलाप केन्द्र, पूना ।
11. गान्धी शिक्षण भवन, नई दिल्ली ।
12. डी० पी० धर स्मारक प्रतिष्ठान, नई दिल्ली ।
13. पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ ।
14. एशियाटिक सोसायटी आफ बम्बई, बम्बई ।
15. कर्नाटक ऐतिहासिक अनुसंधान सोसायटी, धारवाड़ ।
16. भारतीय राष्ट्रीय थियेटर, बम्बई ।
17. कृषि अनुसंधान प्रशिक्षण तथा शिक्षा केन्द्र, गाजियाबाद ।
18. सरदार पटेल आर्थिक तथा सामाजिक अनुसंधान, संस्थान, अहमदाबाद ।
19. विवेकानन्द कालेज, मायलापुर, मद्रास ।
20. टैक्स्टाइल कमेटी, बम्बई ।
21. भारतीय अर्थशास्त्र संस्थान, हैदराबाद ।

परिशिष्ट-III

31-3-1978 की स्थिति के अनुसार भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद का स्टाफ

पदनाम	स्वीकृत पदों की संख्या	भरे गए पदों की संख्या	रिक्त पदों की संख्या	अनु०जा० अनु० ज० । जा० के उम्मीदवार जिन पदों पर कार्य कर रहे हैं, उनकी संख्या	कैफियत
1	2	3	4	5	6
1. सदस्य-सचिव	1	1	—	—	
2. निदेशक	6	4	2	—	
3. वित्तीय सलाहकार तथा मुख्य लेखा अधिकारी	1	1	—	—	
4. प्रशासनिक अधिकारी	1	1	—	—	
5. संयुक्त निदेशक	2	1	1	—	उप-निदेशक कार्य कर रहे हैं।
6. उप-निदेशक	7	7	—	1	
7. सहायक निदेशक	8	8	—	—	

1	2	3	4	5	6
8. अनुसंधान सहायक ग्रेड-I	7	7	—	1	
9. अनुसंधान सहायक ग्रेड-II	23	20	3	4	
10. प्रलेखन । पुस्तकालय अधिकारी	2	2	—	—	
11. प्रलेखन । पुस्तकालय सहायक ग्रेड-I	10	9	1	—	
12. प्रलेखन पुस्तकालय सहायक ग्रेड-II	9	7	2	5	
13. अध्यक्ष के निजी सचिव	1	1	—	—	
14. आशुलिपिक ग्रेड-I, II	8	8	—	—	
15. आशुलिपिक ग्रेड-III	19	15	4	—	
16. अधीक्षक (लेखा)	1	1	—	—	
17. सहायक (रोकड़)	1	1	—	—	
18. आन्तरिक लेखा परीक्षक	1	1	—	—	

1	2	3	4	5	6
19. लेखा सहायक	2	2	—	—	
20. कार्यालय अधीक्षक	1	1	—	—	
21. सहायक प्रोग्रामर	1	1	—	—	
22. सम्पर्क अधिकारी	1	1	—	—	
23. सचिवालय सहायक	2	2	—	-	
24. प्रूफ रीडर	2	2	—	—	
25. प्रवर श्रेणी लिपिक	6	6	—	1	
26. अवर श्रेणी लिपिक	28	28	—	6	
27. की पंच आपरेटर	2	1	1	1	
28. स्टाफ कार ड्राइवर	2	2	—	—	
29. डेस्पेच राइडर	1	1	—	—	
30. गैस्टेनर आपरेटर ग्रेड-I	1	1	—	—	
31. गैस्टेनर आपरेटर ग्रेड-II	1	—	1	—	
32. ब्राडमा आपरेटर	1	1	—	—	
33. पुस्तकालय परिचर	3	2	1	1	

1	2	3	4	5	6
34. दफतरी	3	3	—	—	
35. सन्देशवाहक	11	9	2	1	
36. जेनीटर	1	1	—	1	
37. झाड़ूकश एवं फराश	4	4	—	4	
38. फराश	4	4	—	—	
39. पैकर	2	2	—	—	
योग :	187	169	18	26	

परिशिष्ट-IV

विदेशों में भेजे गए शिष्टमण्डल (1977-78)

1. (क) अन्तर्राष्ट्रीय आय तथा सम्पत्ति अनुसंधान एसोसिएशन के मनीला में 3 से 7 अप्रैल, 1977 तक हुई एशियाई सम्मेलन में भाग लेने के लिए प्रोफेसर मणि मुखर्जी को भेजा गया। इसका व्यय भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् द्वारा वहन किया गया था।

1. (ख) विकास परियोजना के लक्ष्यों, प्रक्रियाओं तथा संकेतकों के सम्बन्ध में संयुक्त राष्ट्र विश्वविद्यालय की, डुब्रोविक, युगोस्लोविया में 11 से 15 अप्रैल, 1977 तक हुई बैठक में भाग लेने के लिए भी प्रोफेसर मुखर्जी को भेजा गया। इसका व्यय संयुक्त राष्ट्र विश्व-विद्यालय द्वारा वहन किया गया था।

2. न्यूयार्क में जून, 1977 में हुई जनसंख्या परिषद की बैठक में भाग लेने के लिए डा० (श्रीमती) वीना मजुमदार को भेजा गया। इसका व्यय जन संख्या परिषद् द्वारा वहन किया गया था।

3. पैरिस में 17 से 26 अक्तूबर, 1977 तक आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय समाज विज्ञान परिषद् की 25वीं जयन्ती में भाग लेने के लिए प्रोफेसर वी० पी० दत्त को भेजा गया। इसका व्यय भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् द्वारा वहन किया गया था।

4. प्रोफेसर मालकोम एस० आदिशेषैय्या, डा० राम कृष्ण मुखर्जी तथा डा० (श्रीमती) आर० बर्मन चन्द्र ने सिओल में 4 से 8 अक्तूबर, 1977 तक हुई एशियाई समाज-विज्ञान अनुसंधान परिषद एसो-सिएशन की बैठक में भाग लिया। प्रोफेसर आदिशेषैय्या तथा डा० मुखर्जी का सारा व्यय भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद द्वारा वहन किया गया था। डा० वर्मन चन्द्र की हवाई-यात्रा का व्यय एशियाई समाज-विज्ञान अनुसंधान परिषद् एसोसिएशन द्वारा वहन किया गया था जबकि उनके अनुरक्षण का व्यय भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् द्वारा वहन किया गया था।

5. डा० डी० डी० नरूला को, एथेन्स, यमन जन लोकतान्त्रिक गण-राज्य में 13 से 20 जनवरी, 1978 तक विश्व शान्ति परिषद् द्वारा आयोजित "विकासशील देशों में सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन" सम्बन्धी एक सेमिनार में भाग लेने के लिए भेजा गया। इसका व्यय विश्व शान्ति परिषद् ने वहन किया था।

परिशिष्ट V

(i) फोर्ड प्रतिष्टान द्वारा सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् को भारत में समाज-विज्ञानों को सुदृढ़ करने के लिए 1,000,000 डालर तथा (ii) ग्रामीण समाज विज्ञान के विकास से संबंधित विशेष परियोजनाओं के लिए 150,000 डालर का अनुदान दिया गया।

फोर्ड प्रतिष्ठान (फाउन्डेशन), भारतीय सामाजिक अनुसंधान परिषद् को भारत में समाज-विज्ञानों को सुदृढ़ करने के लिए 10 लाख डालर का अनुदान देने के लिए सिद्धांतत: सहमत हो गया हैं। इसके अलावा, फोर्ड प्रतिष्ठान (फाउन्डेशन) ग्रामीण समाज-विज्ञानके विकास से संबंधित विशेष परियोजनाओं के लिए 1,50,000 डालर का एक अतिरिक्त पुरक अनुदान देने के वास्ते भी सहमत हो गया है।

2. वर्ष 1973-74 से 1975-76 के लिए प्रथम किस्त के रूप में निम्नलिखित प्रयोजनों के लिए 4,50,000 डालर राशि भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् को स्वीकृत की गई :—

	डालर
(i) प्रलेखन के केन्द्र और आंकड़े अभिलेखागार के स्टाफ और भारतीय तथा विदेशी समाज वैज्ञानिकों के लिए अन्तर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण तथा यात्रा	1,80,000
(ii) प्रलेखन केन्द्रों तथा आंकड़ा अभिलेखागार के लिए उपस्कर	90,000
(iii) सामग्री और प्रकाशनों की प्राप्ति, इसमें मशीन पठनीय आधार सामग्री शामिल है।	1,80,000
योग :	4,50,000

वर्ष 1973-74 से 1975-76 के दौरान 4,50,000 डालर के सारे अनुदान का पूर्णत: उपयोग कर लिया गया था।

3. फोर्ड प्रतिष्ठान (फाउन्डेशन) ने, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् के तीन वर्षों, 1976-77 से 1978-79 के लिए, निम्नलिखित उद्देश्यों को पूरा करने हेतु 4,50,000 डालर का पूरक अनुदान स्वीकृत किया है :—

	डालर
(1) भारत के बाहर स्टाफ का प्रशिक्षण तथा विदेशों में भारतीय समाज विज्ञानियों और भारत आमंत्रित विदेशी समाज विज्ञानियों की अन्तर्राष्ट्रीय यात्रा ।	1,50,000
(2) पुस्तकों तथा अन्य सामग्री की प्राप्ति सहित क्षेत्रीय तथा राज्य भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् केन्द्रों का विकास ।	1,00,000
(3) आंकड़ा अभिलेखागार का विकास, उपस्कर का क्रय	50,000
(4) ग्रामीण समाज-विज्ञानों का विकास	1,50,000
योग	450,000 डालर

2,50,000 डालर का शेष अनुदान वर्ष 1979-80 से उपलब्ध कराए जाने की संभावना है ।

4. समीक्षाधीन वर्ष के दौरान, 140,000 डालर, जो भारतीय मुद्रा में 11,91,849 रु० के बराबर हैं, फोर्ड फाउन्डेशन से प्राप्त हुए थे । वर्ष के दौरान किया गया व्यय 10,80,554 रु० था । फोर्ड प्रतिष्ठान (फाउन्डेशन) से प्राप्त धन और इसके अन्तर्गत किए गए व्यय को दर्शाने वाला एक संक्षिप्त विवरण नीचे दिया गया है :

प्राप्तियां		अदायगियां	
लेखा शीर्ष	रु०	लेखा शीर्ष	रु०
1-4-77 को पिछले वर्ष का बकाया	4,86,976	(!) भारत के बाहर स्टाफ का प्रशिक्षण तथा विदेशों में समाज विज्ञानियों तथा भारत में आमंत्रित विदेशी समाज विज्ञानियों	
वर्ष के दौरान प्राप्त सहायक-अनुदान की राशि	11,91,848.52		
	16,78,824.61		

प्राप्तियां		अदायगियां	
लेखा शीर्ष	रु०	लेखा शीर्ष	रु०
		की अन्तर्राष्ट्रीय यात्रा	7,29,392.60
		(ii) पुस्तकों तथा अन्य सामग्री की प्राप्ति सहित क्षेत्रीय तथा राज्य केन्द्रों का विकास	2,91,886.70
		(iii) आधार सामग्री (आंकड़े) अभिलेखागार का विकास उपस्कर का क्रय	59,275
			10,80,554.30
16,78,824.61		अन्त में बकाया	5,98,270.31
			16,78,824.61

परिशिष्ट-VI

स्वीकृत अनुसंधान परियोजनाएं (1977-78)

1. सुभाष कान्ति बासु, मोतीलाल नेहरू कालेज, नई दिल्ली, "ग्रामीण क्रेडिट का संस्थानीकरण, प्रौद्योगिकीय परिवर्तन तथा कृषि में मूल्य निर्धारण : पश्चिम बंगाल के सी० ए० डी० पी० क्षेत्र का एक मामला अध्ययन," 5,000 रु० ।
2. ए० घोष, अर्थ-शास्त्र विभाग, यादवपुर विश्वविद्यालय, कलकत्ता, आय वितरण तथा समाज कल्याण : "आय अर्जन तथा वितरण की समस्याओं के संबंध में निवेश उत्पादन तकनीकों का अनुप्रयोग, आवास, स्वास्थ्य, शिक्षा जनसंख्या के क्षेत्रीय तथा भौगोलिक आने-जाने की समस्याओं सहित उपभोग तथा समाज कल्याण," 5,000 रु० ।
3. राज कृष्ण, नई दिल्ली, श्रम "सह-अंगों की गणना करने तथा 1951-71 के लिए निरन्तर क्षेत्रीय कार्य शक्ति शृंखलाओं का निर्माण करने की परियोजना," 17,850 रु० ।
4. अतुल शर्मा, सरदार पटेल अर्थ-शास्त्र तथा सामाजिक अनुसंधान संस्थान, अहमदाबाद, "भारतीय अर्थ-व्यवस्था पर केन्द्रीय सरकार के व्यय का प्रभाव-निवेश उत्पादन प्रणाली में अध्ययन," 46,200 रु० ।
5. नित्य गोपाल बासु, सिटी कालेज, कलकत्ता, "भीधापुर जिले में ग्रामों का सर्वेक्षण करने के लिए परियोजना," 18,090 रु० ।
6. एस० सी० मिश्र, ए० एन० सिन्हा समाज अध्ययन संस्थान, पटना, "क्षेत्रीय अर्थ-व्यवस्था का अध्ययन : एक वैकल्पिक दृष्टिकोण के निर्माण की शिक्षा में मार्गदर्शी परियोजना," 5,000 रु० ।
7. सिव सुब्रहामणिम, डी०एन०आर० कालेज, भीमावरम,—"आन्ध्र प्रदेश में नगरपालिका वित्त-व्यवस्था—आन्ध्र प्रदेश में कुछ नगरपालिका संस्थाओं का मामला अध्ययन," 5,502 रु० ।
8. श्री प्रहलाद राज गग्गर, राजकीय कालेज, कोटा—"ग्रामीण राजस्थान में गैर-आर्थिक कार्यक्रम का मूल्यांकन—बरन विकास ब्लाक का मामला अध्ययन," 4,725 रु० ।

9. एल० एस० भट भारतीय सांख्यिकीय संस्थान, नई दिल्ली, "एकीकृत ग्रामीण विकास के लिए नीति—कर्नाटक में जिला उत्तर कन्नारा का मामला अध्ययन," 50,000 रु० ।
10. के० एस० चौहान, उच्च अध्ययन संस्थान, मेरठ विश्वविद्यालय, मेरठ, "नेपाल में कृषक संगठन," 5,000 रु० ।
11. डी० मोहन, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली "औषध दुरुपयोग पर ग्रन्थसूची का निर्माण," 15,300 रु० ।
12. एम० बी० नदकर्णी, सामाजिक तथा आर्थिक परिवर्तन संस्थान, बंगलौर, "कर्नाटक कृषि में उत्पादन अनिश्चितता," 35,000 रु० ।
13. आर० एन० त्रिपाठी, राँची विश्वविद्यालय, रांची, "बिहार में काश्तकारी सुधार—एक मामला अध्ययन," 50,000 रु० ।
14. एस० बी० साखलकर, महाराष्ट्र आर्थिक विकास परिषद, "बम्बई, विकास नीतियों की सहायता के लिए महाराष्ट्र में क्षेत्रीय असंतुलनों का अध्ययन," 49,500 रु० ।
15. बी० के० मदान, प्रबन्ध विकास संस्थान, नई दिल्ली, "लघु उत्पादन उद्यम," 50,000 रु० ।
16. ए० एन० सेठ, सी० ए० आर० टी० ई०, गाजियाबाद (उ० प्र०), "मामला अध्ययन में उल्लिखित सामग्री का विश्लेषण करना तथा भारत में कृषक संगठन की स्थिति पर एक समेकित रिपोर्ट प्रकाशित करना" : 22,600 रु० ।
17. देव शर्मा, उदयपुर विश्वविद्यालय, उदयपुर, "निर्णय करना : 1977 विधान सभा चुनाव," 7,000 रु० ।
18. एस० डी० बोदगयन, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, "राज्य विधान सभा चुनाव, 1977 (मध्य प्रदेश)," 35,000 रु० ।
19. अली अशरफ, ए० एन० सिन्हा समाज अध्ययन संस्थान, पटना, "राज्य विधान सभा चुनाव, 1977 (बिहार)," 20,000 रु० ।
20. एस०एन० रथ उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर, "राज्य विधान सभा चुनाव, 1977 (उड़ीसा)," 20,000 रु० ।
21. डी० एस० चौधरी, रोहतक विश्वविद्यालय, रोहतक, "राज्य विधान सभा चुनाव जून, 1977 का अध्ययन : औद्योगिक कामगरों के मतदान-आचरण का अध्ययन : (2) सार," 25,000 रु० ।
22. वी० एस० बुधराज, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, "हरियाणा में

मतदान आचरण-1977 विधान सभा चुनावों का अध्ययन," 20,000 रु० ।

23. पी० एन० मुखर्जी, सामाजिक पद्धति अध्ययन केन्द्र, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, "पश्चिम बंगाल के मिदनापुर जिले के एक चुनाव-क्षेत्र में विधान सभा चुनाव का अध्ययन," 10,000 रु० ।
24. शान्ति स्वरूप, पंजाब, विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़, -'विधान सभा चुनाव, 1977 का अध्ययन," 20,000 रु० ।
25. बलबीर सिंह, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू तवी, "विधान सभा चुनाव जून, 1977 का अध्ययन," 20,000 रु० ।
26. इकबाल नारायण, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, "विधान सभा चुनाव जून, 1977 का अध्ययन," 20,000 रु० ।
27. बी० आर० मेहता, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला, "राज्य विधान सभा चुनाव, जून, 1977 का अध्ययन," 20,000 रु० ।
28. के० आर० बोम्बवाल, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर (पंजाब), "विधान सभा चुनाव, 1977 : चुनाव प्रक्रिया के सामाजिक-राजनैतिक आयाम की जांच," 15,500 रु० ।
29. सारटो एस्टेव्स, बम्बई विश्वद्यालय, बम्बई, "विधान सभा चुनाव (गोआ) जून, 1977 का अध्ययन," 5,000 रु० ।
30. रामाश्रय राय, विकासशील सोसायटी अध्ययन केन्द्र, नई दिल्ली, "राज्य विधान सभा चुनाव, जून, 1977 का अध्ययन," 15,000 रु० ।
31. देव राज राष्ट्रीय नगर कार्य संस्थान, नई दिल्ली, नए तथा "विकास-शील कस्बों का अध्ययन—फरीदाबाद का एक मामला अध्ययन," 50,000 रु० ।
32. एम० जी० कालरा, रोहतक विश्वविद्यालय, रोहतक, "अभियान प्रक्रिया तथा चुनाव मामले : राज्य विधान सभा चुनाव," 1977 5,000 रु० ।
33. एस० आर० महेश्वरी, आई० आइ० पी० ए०, नई दिल्ली "दिल्ली, महानगर परिषद् के चुनाव का अध्ययन," 10,000 रु० ।
34. रेणुका पमेचा, कनोरिया महिला महाविद्यालय, जयपुर, "जनजातीय समाज में चुनाव राजनीति तथा मतदान आचरण," 5,000 रु० ।
35. बंगेन्दु गंगुली, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता, "विधान सभा चुनाव जून, 1977," 20,000 रु० ।

36. इम्तियाज अहमद, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली, "विधान सभा चुनाव जून,1977 में मुस्लिम मतदाताओं का अध्ययन," 10,000 रु० ।
37. एस० सुब्रह्मणयम, मदुरै विश्वविद्यालय, मदुरै, राज्य "विधान सभा चुनाव जून, 1977 (तमिलनाडु)," 20,000 रु० ।
38. एस० ए० एच० हक्की, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़, "राज्य विधान सभा चुनाव जून, 1977 (उ० प्र०)," 35,000 रु० ।
39. दवेश चक्रवर्ती, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता, नए तथा "विकास-शील कस्बों का अध्ययन—चितरंजन का एक मामला अध्ययन," 50,000 रु० ।
40. ए० रमेश, मद्रास विश्वविद्यालय, मद्रास, "नए तथा विकासशील कस्बों का अध्ययन—नवयेली का मामला अध्ययन," 50,000 रु० ।
41. वी० एस० डिसुजा पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़, "नए तथा विकास-शील कस्बों का अध्ययन—चण्डीगढ़ का एक मामला अध्ययन" ।
42. हरि मोहन सक्सेना, राजकीय कालेज (बायज), श्रीगंगानगर, "राज-स्थान, राजस्थान के मार्केट टाउनों का भौगोलिक अध्ययन," 5,000 रु० ।
43. एस० आर० गणेश, भारतीय प्रशासनिक स्टाफ कालेज, हैदराबाद, "संस्था निर्माण की प्रक्रिया," 35,910 रु० ।
44. जनक पांडे, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर, "एक सामाजिक-मनोवैज्ञानिक अध्ययन," 19,530 रु० ।
45. एस० नारायण राव, एस० वी० यू० कालेज, तिरुपति (आन्ध्र प्रदेश), "सामाजिक-आर्थिक दृष्टि से अलाभान्वित बच्चों की धारणा का निर्माण तथा अध्ययन का आयोग्यताओं के साथ उसका सम्बन्ध," 50,000 रु० ।
46. (श्रीमती) पी० सिन्हा तथा नीरज सिन्हा, पटना विश्वविद्यालय, पटना. एम० एम० कालेज, पटना, "बिहार में नौकरशाह तथा राज-नैतिक विकास," 4,988 रु० ।
47. (कुमारी) टी० एस० सरस्वती, एम० एस० बड़ौदा विश्वविद्यालय, बड़ौदा, "बच्चों में मातृक अनुशासनात्मक प्रक्रियाओं का ज्ञान तथा 10-15 आयु के बच्चों में नैतिक निर्णय के विकास के साथ उसका सम्बन्ध," 10,000 रु० ।

48. पुलिन के० गर्ग, भारतीय प्रबन्ध संस्थान, वस्त्रपुर, अहमदाबाद, "कल्पना और वास्तविकता का विश्लेषण करने के लिए विकास रीति-विज्ञान," 4,998 रु० ।
49. बी० एच० अग्रवाल, एच० डी० जैन कालेज, आरा (भोजपुर), "उत्तर-पूर्वीय क्षेत्र के विशेष सन्दर्भ में भारत में केन्द्र-राज्य सम्बन्ध," 14,910 रु० ।
50. अनीमा सेन, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, "ध्यान तथा भ्रान्ति," 4,305 रु० ।
51. ओ० वी० विजायन, द्रविड़ भाषाई एसोसिएशन, केरल विश्वविद्यालय, त्रिवेन्द्रम, "मलयालम की पालघाट बोली का सर्वेक्षण," 42,420 रु० ।
52. राजीव धवन, भारतीय विधि संस्थान, नई दिल्ली, "विधि तथा विकास के संबंध में कार्य," 11,000 रु० ।
53. श्रीमती देवकी जैन, सामाजिक अध्ययन संस्थान, नई दिल्ली, "महिलाओं को शामिल करने वाली भारतीय परियोजनाओं का वर्णन," 15,000 रु० ।
54. श्रीमती कमला देवी चट्टोपाध्याय, सामाजिक अध्ययन संस्थान, नई दिल्ली, "भारत में महिलाओं का आन्दोलन," 45,496 रु० ।
55. एस० एन० कुलकर्णी, आर्थिक विकास संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय, "महिलाओं से सम्बन्धित विद्यामान स्वास्थ्य आंकड़ों की उपयोगिता," 5,9000 रु० ।
56. श्रीमती मोली मैथ्यू, भारतीय क्षेत्रीय विकास अध्ययन संस्थान, केरल, "केरल में नारियल रेशम उद्योग के गैर-संगठित क्षेत्र में महिला-कामगर," 40,950 रु० ।
57. एन० के० अरविंदाक्षण, भारतीय क्षेत्रीय विकास अध्ययन संस्थान, केरल, "केरल में काजू उद्योग में महिला कामगर," 38,640 रु० ।
58. एल० सी० जैन, भारतीय सहकारी संघ, नई दिल्ली, "शिल्प कलाओं में महिलाएं," 9,4000 रु० ।
59. के० निश्चल, भारतीय विश्वविद्यालय महिला एसोसिएशन फेडरेशन, नई दिल्ली, "लड़कियों में महिलाओं की प्रतिष्ठा निर्धारित करने में बच्चों की हास्य पुस्तकों का मूल्यांकन," 8,610 रु० ।
60. आर० के० माथुर, रा० शै० अनु० प्र० प०, नई दिल्ली, "महिलाओं की शिक्षा संबंधी आंकड़े : उनके स्रोत तथा सीमाएं," 6,500 रु० ।

61. एस० पी० चौपड़ा, बी० एन० सी० विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, "भारत-पाकिस्तान सम्बन्धों के सामान्यीकरण की प्रकिया," 4,500 रु० ।
62. रहमुल्ला खां, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, "नई अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था की खोज-एक कानूनी परिप्रेक्ष्य," 50,000 रु० ।
63. एस० डी० मुनी, अन्तर्राष्ट्रीय अध्यतन स्कूल, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, "तीसरा विश्व : सौदेबाजी की नीति," 24,900 रु० ।
64. सुलभा ब्राह्मे, गोखले अर्थ-शास्त्र तथाराज नीति-शास्त्र संस्थान, पूना, "कुली महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति," 2,500 रु० ।
65. पी० एन० सेठ, समाज-विज्ञान का विश्वविद्यालय स्कूल, गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद, "महिलाओं की राजनैतिक सहभागिता—एक सांख्यिकी विश्लेषण," 1,725 रु० ।
66. जी० सी० तिवारी, देशबन्धु कालेज, नई दिल्ली, "महिला रोजगार पद्धति में क्षेत्रीय भिन्नता," 5,000 रु० ।
67. लीला कस्तूरी, नई दिल्ली ; "नई दिल्ली में प्रवासी दक्षिण भारतीय महिला कामगरों का अध्ययन," 4,000 रु० ।
68. के० जी० कृष्णामूर्ति, समाज कल्याण योजना आयोग, नई दिल्ली, "जन जातीय महिलाएं," 5,600 रु० ।
69. इन्द्रा राजारमण, भारतीय प्रबन्ध संस्थान, बंगलौर, "महिलाओं की सामाजिक आर्थिक स्थिति का आंकड़ा स्रोत, एन० एस० एस० तथा श्रम मंत्रालय के सर्वेक्षण," 1,000 रु० ।
70. इकबाल नारायण, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, "राजनैतिक प्रक्रिया विधान सभा चुनाव, 1977 में महिलाओं की भूमिका, 10 राज्यों के अध्ययनों का चित्रण," 50,000 रु० ।
71. श्रीमती जोया खालिक, सामाजिक अध्ययन केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, "उत्तर प्रदेश में 1977 के चुनावों के दौरान निम्न वर्ग की महिलाओं का राजनैतिक चित्रण," 5,000 रु० ।
72. कान्ता अहूजा, एच० सी० एम० राज्य लोक प्रशासन संस्थान, जयपुर, "राजस्थान में घरेलू आर्थिक कार्यकलापों में महिलाओं की भूमिका," 2,000 रु० ।
73. विठल राजन, भारतीय प्रशासनिक स्टाफ कालेज, हैदराबाद, "महिला ग्रामीण कामगरों की आर्थिक तथा सामाजिक स्थितियों पर कृषि

सम्बन्धी आधुनिकीकरण तथा सिंचाई के प्रभाव का एक मामला अध्ययन," 29,715 रु० ।

74. एस० डी० सावन्त, बम्बई विश्वविद्यालय, बम्बई, "विकास प्रक्रिया में ग्रामीण महिला कामगरों का एकीकरण," 1,000 रु० ।

75. सुरिन्दर जेतली, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस, "विकास प्रक्रिया में ग्रामीण महिला कामगरों का एकीकरण," 1,000 रु० ।

76. अशोक मित्रा क्षेत्रीय विकास केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, "परम्परागत भारतीय अर्थ-व्यवस्था के आधुनिकीकरण मिश्रित परम्परागत आधुनिक क्षेत्रों में महिला सहभागिता की गति, पद्धतियां," 18,000 रु० ।

77. के० सारदामोनी, भारतीय सांख्यिकी संस्थान, नई दिल्ली, "परिवर्तनशील भूमि सम्बन्ध तथा महिलाएं," 21,000 रु० ।

78. लीला गुलाटी, विकासशील अध्ययन केन्द्र, केरल, "मछली विकास परियोजनाओं का महिलाओं पर प्रभाव," 13,000 रु० ।

79. सच्चिदानन्द, ए० एन० सिन्हा सामाजिक अध्ययन संस्थान, पटना "ग्रामीण बिहार में 17 ग्रामों के सर्वेक्षणों से उपलब्ध महिलाओं के सम्बन्ध में आंकड़ों का विश्लेषण—1969-72," 3,045 रु० ।

80. वसुधा धागम्वर, पूना विश्वविद्यालय, पूना, "महिला तथा तलाक—महिलाओं को कानून की जानकारी," 25,000 रु० ।

81. पी० डी० सैकिया, कृषि-आर्थिक अनुसंधान केन्द्र, असम कृषि विश्वविद्यालय, असम, "(क) जन-जातीय महिलाओं की परिवर्तनशील भूमिका (ख) असम में भूतपूर्व-बागान श्रमिकों की परिवर्तशील भूमिका," 3,000 रु० ।

82. एम० एस० ए० राव, समाज शास्त्र विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, "महिलाओं का प्रवजन," 3,000 रु० ।

83. वी० आई० सुब्रह्मणयम, केरल विश्वविद्यालय, त्रिवेन्द्रम, "द्विभाषावाद के वित्तीय पहलू," 50,000 रु० ।

84. एन० पी० चौबे, भारतीय समाज-विज्ञान अकादमी, इलाहाबाद, "नेतृत्व की तथा मतदान आचरण की परिकल्पित वैधता का अध्ययन," 15,000 रु० ।

85. दुर्गानन्द सिंहा, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद । "विभिन्न आजीविका प्रणालियों को अपनाने वाले बिरहरों के दो वर्गों के बीच कुछ बोधात्मक क्षमताओं में भेद," 5,250 रु० ।

86. डी० सी० जैन, भाषा स्कूल, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली। "भारतीय महिलाओं की बोलियों का मानवजातीय वर्णन," 4,935 रु०।
87. वाई० बी० दामले, पूना विश्वविद्यालय, पूना, "ग्रामीण विकास तथा शहरी प्रशासन में नागरिकों की सहभागिता-एक तुलनात्मक अध्ययन," 16,000 रु०।
88. एच० आर० चतुर्वेदी, नीति अनुसंधान केन्द्र, नई दिल्ली। "स्थानीय नौकरशाही तथा विकास-राज्यों में नागरिकों की सहभागिता का एक तुलनात्मक अध्ययन," 50,000 रु०।
89. एच० जे० पांडया, दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय, सूरत, "विकास में नागरिकों की सहभागिता के सम्बन्ध में नौकरशाही का रुख," 50,000 रु०।
90. सी० जे० दासवाणी, भाषा स्कूल, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, "भारतीय सिंधियों का एक सामाजिक-भाषाई सर्वेक्षण," 11,097 रु०।
91. मोहम्माद हसन, भाषा स्कूल, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, "उर्दू में पाकिस्तानी लेख-समकालीन प्रवृत्तियों का एक विश्लेषण," 43,770 रु०।
92. दया कृष्ण, दर्शन शास्त्र विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर। "भारतीय परम्परा में सामाजिक-सांस्कृतिक एवं दार्शनिक संकल्पनाओं के अर्थ का एक अनुभूति-मूलक अध्ययन," 23,940 रु०।
93. वी० ए० पाई—पनन्दीकर, नीति अनुसंधान केन्द्र, नई दिल्ली, "विकास में नौकरशाही क्षमताएं तथा योग्यताएं," 49,500 रु०।
94. सी० आर० प्रसाद राव, समाज-शास्त्र विभाग, आंध्र विश्वविद्यालय वाल्टेयर, "ग्रामीण-शहरी एकीकरण तथा ग्रामों का अधुनिकीकरण," 5,000 रु०।
95. देव राज, राष्ट्रीय शहरी कार्य संस्थान, नई दिल्ली, भारत के "कस्बों तथा नगरों की मास्टर-योजनाओं का अध्ययन," 31,000 रु०।
96. श्रीमती रेणुका राय, कलकत्ता, "मेरे संस्मरण तथा भारत में सामाजिक विकास," 14,300 रु०।
97. नरेन्द्र सिंह, जबलपुर विश्वविद्यालय, जबलपुर, "बौद्धिक तथा औद्योगिक समृद्धि से संबंधित कानूनों की प्रकृति तथा कार्यों का एक सर्वेक्षण तथा आलोचनात्मक अध्ययन," 13,650 रु०।

98. श्रीमती दफाने एम० डेरेबल्लो, शिक्षा विभाग, "आंध्र प्रदेश सरकार हैदराबाद, औपचारिक स्कूल शिक्षा तथा व्यक्तिगत कार्य कुशलता," 13,600 रु० ।
99. वी० डी० गुप्त, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता, "परित्यक्त अनुसंधानों की खोज," 25,100 रु० ।
100. सिनारी रामाकर, मानविकी तथा समाज-विज्ञान विभाग, बम्बई, "आधुनिक भारत में विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के विकास के संबंध में एक कारण के रूप में कर्म के कानून में विश्वास," 7,500 ।
101. रोबर्ट वरीकायील, दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय, सूरत, समुद्रतटीय बस्तियों में सामाजिक परिवर्तन, 1,706 रु० ।
102. बलबीर सिंह, दिल्ली अर्थ-शास्त्र स्कूल, दिल्ली, "आबादी का स्वरूप तथा आय वितरण-पंजाब तथा उत्तर प्रदेश का एक मामला अध्ययन" 7,350 रु० ।
103. आर० के० पटेल, सी० ए० आर० टी० ई० गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश) "ग्रामीण निर्धनों की संस्थाओं तथा संगठनों का विकास (सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण तथा कार्रवाई योजना का विकास)," 50,000 रु० ।
104. वी० एच० जोशी, समष्ठ विश्वविद्यालय, राजकोट, "सौराष्ट्र के आर्थिक सर्वेक्षण पर अनुएर्ती कार्रवाई," 50,000 रु० ।
105. श्रीमती प्रभा रामालिंगमस्वामी, सामाजिक औषधि तथा सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, जवाहरलाज नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, "मेडिकल शिक्षा की लागत का अनुमान," 50,000 रु० ।
106. वी० दत्त राय, समाज विज्ञान अनुसंधान परिषद्, बी० टी० हास्टल, शिलांग, "शिलांग के खासियों, जवाई के प्नार और जूरा के लोगों के बीच व्यावसायिक गतिशीलता मेघालय के तीन शहरी केन्द्र," 47,070 रु० ।
107. ए० वैद्यदाथन, विकास अध्ययन केन्द्र, त्रिवेन्द्रम, "दक्षिण राज्यों की बोविन अर्थ-व्यवस्था के चुने हुए पहलुओं का अध्ययन," 50,000 रु० ।
108. एच० आर० सेषाद्रि राव, सार्वजनिक उद्यम संस्थान, हैदराबाद, "भारत में सार्वजनिक वितरण प्रणाली की एजेन्सियों की प्रबन्ध तथा संचालन सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन," 45,000 रु० ।
109. वी० एम० दांडेकर, भारतीय राजनैतिक अर्थ-व्यवस्था स्कूल,

लोनावाला, स्वतन्त्रता के बाद से भारतीय अर्थ-व्यवस्था, 7,000 रु० ।

110. ब्रह्मप्रकाश, टाट समाज विज्ञान संस्थान, बम्बई, "समाज विज्ञान अनुसंधान, एक आर्थिक विश्लेष्ण," 4,935 रु० ।

111. धर्म राज यादव, गान्धी अध्ययन संस्थान, राजघाट वाराणसी, "पूर्वी उत्तर प्रदेश में कमजोर वर्गों पर भूमि वितरण का आर्थिक प्रभाव," 5'000 रु० ।

112. ए० तिम्माप्पाया आई० सी० एम० आर०, नई दिल्ली, "मेडिकल शिक्षा प्रशिक्षण तथा अनुसंधान में विकास अध्ययन में विकल्प," 6,500 रु० ।

113. एस० बी० राव, राष्ट्रीय सहकारी प्रबन्ध संस्थान, पूना, "भारतीय व्यापार संगठन में प्रबन्ध पद्धतियों का अध्ययन," 5,250 रु० ।

114. ए० के० बागची, समाज विज्ञान अध्ययन केन्द्र कलकत्ता, "भारतीय उद्योग में विदेशी सहयोग प्रौद्योगिकी का स्थानांतरण तथा स्वदेशी प्रौद्योगिकी का विकास," 20,000 रु० ।

115. एम० आर० पांडेय, टैक्साज विश्वविद्यालय, आस्टिन, "भारत में वर्तमान लघु ग्रामीण विकास परियोजनाओं का एक निष्पादन विश्लेषण," 8,8000 रु० ।

116. के० तिरुवेन्कटाचारी, राष्ट्रीय कालेज, तिरुचिरापल्ली, "तमिलनाडु में कृषि श्रमिकों की स्थिति," 7,500 रु० ।

117. सी० क्रिस्टेफर, बेन्निगर, विकास अध्ययन तथा कार्यकलाप केन्द्र, पूना, "तकनीकी-आर्थिक निवेश तथा ग्रामीण विकास की सम्बद्ध पद्धतियां," 23,350 रु० ।

118. विनोद एस० दास, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, खड़गपुर, "उड़ीसा के आर्थिक इतिहास में अध्ययन-1833-85," 20,000 रु० ।

119. बी० एन० जुयाल, गान्धी अध्ययन संस्थान, वाराणसी, "पूर्वी उत्तर प्रदेश में विशिष्ट एजेन्सियों के कार्यक्रमों की जिला रूपरेखाएं तथा मामला अध्ययन तैयार करना । पूर्वी उत्तर प्रदेश में पिछड़ेपन के तथ्यों तथा विकास नीति पर सेमिनार के लिए पृष्ठ भूमि-सामग्री," 5,000 रु० ।

120. के० आर० शान, वाणिज्य संकाय, एम० एस० विश्वविद्यालय, बड़ौदा, "उच्चतर शिक्षा, भारत की राजकीय वित्त-व्यवस्था में निहित

समानता समस्याओं की जांच-एम० एस० विश्वविद्यालय, बड़ौदा का एक अध्ययन," 36,490 रु० ।

121. सुरेश डी० ब्रेन्दुलकर, भारतीय सांख्यिकी संस्थान, नई दिल्ली, "केअर' के रूप में निर्धनों को रहन-सहन के न्यूनतम स्तर को सुनिश्चित करने के मूलभूत सामाजिक लक्ष्य को लेकर एक वैकल्पिक योजना," 50,000 रु० ।

122. वी० एम० दान्डेकर, गोखले राजनैतिक तथा अर्थ-शास्त्र संस्थान, पूना, "भारत के एतिहासिक आंकड़े," 2,87,700 रु०+70,000 रु० ।

123. एम० एस० गोरे, टाटा समाज विज्ञान संस्थान, बम्बई तथा बी० एन० दातार, अम्बेदकर श्रम अध्ययन संस्थान, बम्बई, "ग्रेटर बम्बई में निर्धनता के स्वरूप का एक अध्ययन," 1,07,500 रु० ।

124. के० एस० संजीवी, स्वैच्छिक स्वास्थ्य सेवा मेडिकल केन्द्र, माद्रा, "स्वास्थ्य देखभाल वितरण प्रणाली के सिद्धान्त तथा पद्धतियां," 45,000 रु० ।

125. टी० मैथ्यु, उत्तर पूर्वी पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग, "उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में उत्पादन का तरीका तथा उत्पादन संबन्ध: मेघालय के सन्दर्भ में एक अध्ययन," 50,000 रु० ।

126. भारत झुनझुनवाला, फैजाबाद (उत्तर प्रदेश) "ग्रन्थ सूची तथा रिपोर्टों के संग्रह के लिए प्रस्ताव," 3,990 रु० ।

127. जयदेव दास, भारतीय समाज-विज्ञान संस्थान, त्रिवेन्द्रम, केरल, "पिछड़े वर्ग की इसाई महिलाओं का सामाजिक-आर्थिक स्तर," 10,000 रु० ।

128. कुमुदिनी दान्डेकर, "रोजगार गारन्टी योजना में महिलाओं का रोजगार-अवसर तथा समस्याएं," 35,000 रु० ।

129. टी० बनर्जी, प्रबन्ध परामर्शदाता, भारतीय प्रशासनिक स्टाफ कालेज, हैदराबाद, "पश्चिम बंगाल के जलपाईगुडी पश्चिम दीनाजपुर जिलों तथा दार्जिलिंग जिले के सिलीगुडी सब-डिवीजन में चालीस वर्ष पूर्व से लेकर अब तक की राजबंशी महिलाओं की व्यवसायिक पद्धति तथा सामाजिक और आर्थिक स्तरों में परिवर्तन," 50,000 रु० ।

130. आई० एन० मुखर्जी, प्रन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन स्कूल, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, "बैंगकाक करार : एशिया का प्रथम बहु-व्यापार उदारता कार्यक्रम," 43,713 रु० ।

131. उर्मिला वर्मा, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, "चीन के समाचार-पत्रों के माध्यम से भारतीय मामलों का अध्ययन", 1,700 रु० ।
132. सी० वी० राघवुलु, आन्ध्र विश्वविद्यालय, वाल्टेयर (आन्ध्र प्रदेश) "आन्ध्र चक्रवात, सामुहिक मृत्यु तथा सहायता प्रयत्नों की राजनैतिक तथा प्रशासनिक प्रक्रिया का एक अध्ययन", 3,969 रु० ।
133. टी० एस० पपोला, काशी विद्यापीठ, वाराणसी, "अनुसूचित जातियों के मनोवैज्ञानिक अध्ययनों की एक समीक्षा", 1,500 रु० ।
134. ओ० पी० जोशी, दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय, सूरत, "चौथी त्रैवार्षिकी : कला समाज का एक अध्ययन", 5,000 रु० ।
135. एल० एम० भौले, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, पोवई, बम्बई, "भारत में धन सम्बन्धी तकनीकों में परिवर्तनों की दिशा में निवेश की प्रतिक्रिया—एक आनुभविक अध्ययन", 50,000 रु ।
136. अशोक रूद्र, भारतीय सांख्यिकी संस्थान, "कलकत्ता, कानूनों, श्रम तथा ऋण करारों की प्रकृति तथा ग्रामीण निर्धन", 2,500 रु० ।
137. बी० सी० मेहता, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, "ग्रामीण शोषण : इससे संबंधित समस्याओं का एक सामाजिक-आर्थिक अध्ययन", 47,460 रु० ।
138. जी० के० सूरी, श्रीराम औद्योगिक सम्बन्ध तथा मानवीय संसाधन केन्द्र, नई दिल्ली, "बोनस को उत्पादकता से जोड़ना" 49,110 रु० ।
139. एम० ए० ओम्मर, त्रिचूर, केरल, "लघु-उद्योगों का अन्तराज्यीय स्थानान्तरण—त्रिचूर में श्वेत लोहा ढलाई घर उद्योग का एक मामला अध्ययन", 45,225 रु० ।
140. विट्ठल राजन, भारतीय प्रशासनिक स्टाफ कालेज, हैदराबाद, "तेलंगाना क्षेत्र में बन्धुआ मजदूरों के संबंध में तीन अध्ययनों का एक परस्पर सम्बद्ध कार्यक्रम", 50,000 रु० ।
141. पी० आर० पंचमुखी, कर्नाटक ऐतिहासिक अनुसंधान सोसायटी, धारवाड़, "सार्वजनिक व्यय के लाभों का वितरण—एक आनुभविक खोज", 40,425 रु० ।
142. सुलभा ब्राह्मे, गोखले राजनैतिक-शास्त्र तथा अर्थशास्त्र संस्थान, पूना, तथा "ब्रह्म प्रकाश, टाटा समाज विज्ञान संस्थान, बम्बई, जिला चन्द्रपुर (महाराष्ट्र) के कुछ ग्रामों का सामाजिक-आर्थिक अध्ययन", 39,375 रु० ।
143. टी० एस० पपोला, गिरी आर्थिक विकास तथा औद्योगिक संबंध

संस्थान, लखनऊ, "निर्माण संबंधी कार्यकलापों की स्थानिक विविधता— [उत्तर प्रदेश (1960-1975) में औद्योगिक यूनिटों की स्थान-निर्धारण पद्धति का एक अध्ययन]", 50,000 रु० ।

144. हृण्मय धर, ए० एन० सिन्हा, समाज अध्ययन संस्थान, पटना, "विकास के सन्दर्भ में बिहार की मंडियों की पारस्परिक सम्बद्धता का एक अध्ययन", 23,625 रु० ।

145. आर० एस० राव, संबलपुर विश्वविद्यालय, संबलपुर (उड़ीसा)— "उड़ीसा की कृषि की राजनैतिक अर्थ-व्यवस्था का एक अध्ययन" 45,875 रु० ।

146. जी० एस० भट्ट, डी० ए० वी० कालेज, देहरादून "रवई जौनपुर में महिलाओं का स्तर", 10,000 रु० ।

147. नीरा देसाई एस० एन० डी० आई० नथीबाई ठाकरसी रोड, बम्बई : "ग्रामीण महिलाओं के स्तर पर नगरीकरण तथा आधुनिकीकरण का प्रभाव" 43,000 रु० ।

148. एस० सी० अग्रवाल अन्तरिक्ष अनुप्रयोग केन्द्र, नई दिल्ली, "अन्तर्राष्ट्रीय बैठकों में संचार की पद्धतियां : मानव-विज्ञान तथा मानव-जाति-विज्ञान की दसवीं कांग्रेस का एक प्रायोगिक अध्ययन", 4,950 रु० ।

149. आर० बी० जैन, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, "नौकरशाही और और विकास : विकास तथा गैर-विकास कार्यों में व्यस्त नौकरशाही के व्यवहार तथा अनुस्थापना का तुलनात्मक अध्ययन", 50,000 रु० ।

150. कुमारी आनन्दलक्ष्मी, लेडी इर्विन कालेज, नई दिल्ली, "कागनेटिव कम्पीटेंस इन इनजेंसी", 46,930 रु० ।

151. श्रीमती मोहिन्द्रा के० सिंगी, पूना विश्वविद्यालय, पूना, "सेवा-निवृत सैनिकों तथा सेवा-निवृत सेना अधिकारियों की समस्याओं का निपटारा, 7,500 रु० ।

152. परमेश आचार्य, आई० आई० एम० कलकत्ता, "ग्रामीण समुदाय के कमजोर वर्ग की शिक्षा की समस्याएं", 10,965 रु० ।

153. जी० डी० ठाकुर, दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय, सूरत, "छोटे-छोटे खेतों की कृषि समस्याओं का समाज-शास्त्रीय अध्ययन", 18,960 रु० ।

154. जय पी० बी० सिन्हा, ए० एन० सिन्हा समाज अध्ययन संस्थान, पटना, "कार्य स्थान पर प्रजातन्त्र", 49,245 रु० ।

परिशिष्ट VII

फैलोशिप

राष्ट्रीय फैलोशिप

1. के० एन० राज, पिछले 25 वर्षों में भारतीय अर्थव्यवस्था में क्या हुआ है (और नहीं हुआ है) ?
2. एस० सी० दूबे (अनुसंधान का विषय अभी तक तय नहीं हुआ है)।
3. रवि जे० मथाई (अनुसंधान का विषय अभी तक तय नहीं हुआ है)।
4. एस० चक्रवर्ती (अनुसंधान का विषय अभी तक नहीं हुआ है)।
5. बी० आर० नन्दा, महात्मा गान्धी पर एक पुस्तक लिखने के लिए।

वरिष्ठ फैलोशिप

1. के० के० जार्ज, "भारतीय अर्थ-व्यवस्था में धन का प्रवाह : क्षेत्रीय पद्धति"।
2. के० एल० शर्मा, "विकासशील सोसायटियों में, विशेष रूप से भारत के सन्दर्भ में, राजनैतिक संरचना तथा उद्यमशीलता की गतिशीलता"।
3. महमूद ममदानी, बम्बई में आधुनिक औद्योगिक श्रमिक वर्ग का इतिहास।
4. ई० ए० रामास्वामी, "कोयम्बटूर में औद्योगिक सम्बन्ध : औद्योगिक संघर्ष के विशेष सन्दर्भ में औद्योगिक सम्बन्धों का एक समाज शास्त्रीय अध्ययन"।
5. जी० वी० कोयले, "स्वास्थ्य शिक्षा (ऐतिहासिक तथा समकालीन आयाम) के लिए आश्रम धारणा"।
6. रत्ना नायडु (श्रीमती) बच्चों के विशेष सन्दर्भ में शहरी योजना में सामाजिक अवस्थापना।
7. वी० पोथना, "शहरी विकास तथा औद्योगिक स्थान-निर्धारण"।
8. के० एन० गोपी, "हैदराबाद शहर में शहरी विकास तथा औद्योगिक स्थान-निर्धारण का अध्ययन"।
9. डब्ल्यू एस० के० फिलिप्स, "शहरी भारत में सामाजिक स्तर-निर्माण

की उभरती हुई पद्धति"।

10. टी० के० महादेवन, महात्मा गान्धी का संचित कार्य"।
11. एम० रफीक खां, जांच आयोग रिपोर्टों में सामने आई हिंसात्मक घटनाओं के वैचारिक ढांचे का अध्ययन"।
12. गिरजा शरण, "ग्रामीण शिक्षा के पुनर्नुस्थापन की आवश्यकता"।
13. रामचन्द्र गांधी, "गांधी जी के नैतिक तथा धार्मिक विचार"।
14. सुकुमारी भट्टाचार्य (श्रीमती) "वैदिक साहित्य का आधुनिक इतिहास"।
15. सी० के० जोहरी, "औद्योगिक सम्बन्ध तथा मजदूरी नीति : पुनरीक्षण तथा सम्भावनाएं"।
16. विश्वनाथ पान्डेय, हिमालयाई बौद्ध धर्म: एक समाजिक-धार्मिक अध्ययन।
17. सुमित्रा चिस्ती (श्रीमती), "संसाधनों का अन्तर्राष्ट्रीय स्थानान्तरण तथा विकासशील देशों का आर्थिक विकास-पुनः विचार किया गया।
18. विनायक पुरोहित, "आधुनिक भारतीय वास्तुकला-1905-75 का समाज-विज्ञान"।
19. बी० पी० आर० विट्ठल, प्रशासनिक पुनर्गठन तथा सुधार की कुछ समस्याएं।
20. ऊषा अग्रवाल (श्रीमती), "1550 से 1850 तक भारतीय उप-महाद्वीप के उत्तरीय मार्गों की ऐतिहासिक एटलस"।

युवा समाज विज्ञानियों को फैलोशिप

1. चम्पा लाल गुप्त, "भारत के सामाजिक विकास में वैश्य समाज का योगदान"।
2. चन्द्र प्रकाश बर्थवाल, "लखनऊ जिले के शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों में अस्पृश्यता (अपराध) अधिनियम के प्रभाव का एक तुलनात्मक अध्ययन"।
3. एस० एम० वाल्कर, "ग्राम पंचायत तथा ग्रामीण आर्थिक विकास का प्रबंध"।
4. के० शिव प्रसाद, "आन्ध्र प्रदेश कृषि में प्रौद्योगिकीय प्रगति के सामाजार्थिक निहितार्थ"।
5. केया देब, "असम की अर्थ-व्यवस्था में चाय-बागान"।
6. प्रोमिला बासुदेव (श्रीमती), "कुछ मनोवृत्ति सम्बन्धी तथा व्यक्तित्व

भिन्नताओं के सम्बन्ध में विवाहित कार्य करने वाली तथा कार्य न करने वाली महिलाओं का एक तुलनात्मक अध्ययन" ।

7. एस० के० गुप्त, "राष्ट्रीय एकता के परिचायक के रूप में अन्तर-राज्यीय प्रव्रजन—एक लेन-देन सम्बन्धी प्रवाह—विश्लेषण" ।
8. एस० के० पाटिल, "शिक्षा : विस्तार सुधार तथा लाभों का वर्ग विभाजन ।
9. भंवर सिंह, "भारत में दवाइयों, उरवर्क तथा तेल उद्योगों की राजनैतिक अर्थ-व्यवस्था : परतंत्र प्रणाली में एक विश्लेषण" ।
10. शरीन पी० रत्नागर (कुमारी) "तीसरी सहस्त्राब्दी बी० सी० में महान भारतीय सिन्धु घाटी तथा समीपवर्ती क्षेत्रों की शहरी सभ्यता के उद्भव तथा स्वरूप का अध्ययन" ।
11. सुखदेव हांडा, "एक पिछड़े ग्राम का शहरीकरण : 1947 से प्रदीप में हुए परिवर्तनों का एक अध्ययन" ।

डाक्ट्रेट उपरान्त फैलोशिप

1. रामाचक्रवर्ती (श्रीमती), "दक्कन (हैदराबाद) के शहरी, ग्रामीण तथा जन-जातीय आबादी वर्गों के बीच उर्वरता पद्धति" ।
2. बी० राय वर्मन (श्रीमती) "तिब्बती बौद्ध धर्म के सम्प्रदायों के आर्थिक तथा राजनैतिक संबंधों की अन्तर्राष्ट्रीय संरचना तथा कड़ी" ।

डाक्टोरल फैलोशिप

(1) सी० देवरांगुलु नायडु, "चितूर जिले में हरिजन कृषि श्रमिकों का रोजगार—मजदूरी" ।

(2) इशीता मुकुर्जी (कुमारी), "पूना में फल विपणन का अर्थशास्त्र—प्रोफेसर डी० आर० गाडगिल तथा वी० आर० गाडगिल द्वारा 1931-33 में किए गए पिछले सर्वेक्षण को लेकर एक तुलनात्मक अध्ययन" ।

(3) जीवन कुमार घोष, "बीरभूम कृषि में भमि आधार तथा ऋण मंडियों का कार्यकरण" ।

(4) दिलीप टंडन, "लघु विद्युत वस्तु उद्योग" ।

(5) सुरिन्दर पाल सिंह सैनी, "आई० सी० डी० पी० लुधियाना (पंजाब) के लघु तथा सीमान्त डेयरी कृषकों के डेयरी आधुनिकीकरण के सहसम्बन्ध" ।

(6) अशोक खंडेलवाल, "राजस्थान में कृषि प्रणाली"।
(7) ज्योति घोष (कुमारी), "भारत में औद्योगिक रुग्ण यूनिटें"।
(8) सुरिन्दर कुमार अरोड़ा, "भिन्न चावल प्रक्रिया तकनीकों का एक आर्थिक मूल्यांकन"।
(9) कृष्ण पी० मंधोत्रा, "साम्यवादी बाजारों में भारतीय उद्योगों के निर्यात बाजार की समस्याएं तथा सम्भावनाएं"।
10. डेंजिल सल्दन्हा, "वर्ग जागरूकता (महाराष्ट्र के एक ग्रामीण यूनिट में) के विकास का एक समाज-मनोवैज्ञानिक अध्ययन"।
11. रविकला कामथ (श्रीमती), "पूर्व-स्कूल बच्चों की मौखिक क्षमताओं के कुछ सहसम्बन्धों का अध्ययन"।
12. मंजु अग्रवाल (कुमारी) "भारतीयों में जीवन पद्धतियों का अध्ययन"।
13. अब्दुल "मजीद, बोधात्मक भेदीकरण : कुछ व्यक्तित्व तथा सामाजिक सह-सम्बन्ध"।
14. नरेश दधीच, "एम० के० गांधी, अस्तित्ववादी विचारक"।
15. बी० एल० भोले, "भारत के किसानों तथा कामगरों का अध्ययन"।
16. अरविन्द मायाराम, "राजस्थान के वैधानिक विशिष्ट-वर्ग के राजनैतिक समाजीकरण तथा राजनैतिक संस्कृति की पद्धतियाँ: छठी विधान सभा के सन्दर्भ में अध्ययन"।
17. मंजुला मजुमदार (कुमारी), "राजनैतिक ताकतों का ध्रुवीकरण : पश्चिम बंगाल 1966-67 का एक अध्ययन"।
18. रंजना रथ (श्रीमती), "भारतीय राज्यों में मुख्य सचिव की भूमिका: उड़ीसा के विशेष सन्दर्भ में एक तुलनात्मक मामला अध्ययन।
19. मंजु पंडी (कुमारी) "जापानी आर्थिक चमत्कारों में विदेशी व्यापार"।
20. देबल दास गुप्त, समकालीन सोवियत समाज में समाज स्तर-निर्माण की विकासशील पद्धति, 1946-76"।
21. आशुतोष वार्ष्णेय, राष्ट्रीय विधान मंडल तथा विदेश नीति : भारत—पाकिस्तान सम्बन्धों की दिशा में भारतीय संसद तथा पाकिस्तान राष्ट्रीय विधान सभा के रुख का एक तुलनात्मक अध्ययन (1962-66)।
22. सविता बर्डे (कुमारी), "फ्रान्स का साम्यवादी दल तथा यूरोपीय साम्यवाद"।
23. अरुण टंडन, "भारत की सांस्कृतिक कूटनीति"।
24. प्रभा उन्नीथन, "मद्रास की गन्दी बस्तियों के निवासियों में मद्यपान

तथा औषधि प्रयोग का स्वरूप" ।

25. रोहित वांचू, "उत्तर प्रदेश में समाज-आर्थिक निर्माण, राजनैतिक विरोध तथा परिवर्तन और आर्थिक विकास (1927-67)
26. रंजना कक्कड़ (श्रीमती), एशियाई लोगों पर पाश्चात्य प्रभाव: सुनयत सैन तथा जवाहरलाल नेहरू के समन्वयवाद का एक मामला अध्ययन" ।
27. वी० गांधी माथी (कुमारी), "सामाजिक विचार धारा में समुदाय, प्राधिकार तथा शक्ति : एक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण" ।
28. जय प्रकाश राव, (प्रोफेसर हैनियम डोफ के साथ आन्ध्र प्रदेश में जन जातीय वर्गों से संबंधित उनकी परियोजना पर कार्य कर रहे हैं) ।
29. शीला राउतरे (कुमारी) "उड़ीसा में मलेरिया के प्रभाव में स्थानिक तथा अस्थायी परिवर्तन : चिकित्सा भूगोल का अध्ययन" ।
30. एम० उत्तरा प्रभु (कुमारी), "तमिलनाडु में शहरीकरण की प्रवृत्ति तथा पद्धति" ।
31. शील चन्द नूना, "भारत में मतदान पद्धत्ति का विभाजन (1977 के आम चुनाव की प्रवृत्तियों का विश्लेपण")
32. कमलेश प्रसाद, "बिहार के गगाँ के किनारे वाले नगरों में शहरी परिवहन तथा संचार का विकास तथा प्रगति" ।
33. नसरीन अनवर सिद्दीकी (कुमारी), "समुदाय में मुस्लिम विशिष्ट वर्गों की भूमिका" ।
34. सुजाता पटेल (कुमारी) "स्वतन्त्रता के बाद गुजरात में पूंजीवादी वर्ग का विकास" ।
35. जोसेफ एल० पालकोट्टम, "अनौपचारिक शिक्षा तथा ग्रामीण विकास" ।
36. कल्पना शाह (श्रीमती), "स्वैच्छिक संगठन तथा महिलाओं की मुक्ति : अखिल हिन्द महिला परिषद् सूरत का मामला अध्ययन" ।
37. अतलूरी सत्यनारायण, प्रौद्योगिकी : "ग्रामीण वातावरण में सामाजिक सम्बन्धों के कार्य तथा पद्धतियों का स्वरूप" ।
38. बाल गोविंद बाबू, "ग्राम अर्थ-व्यवस्था के पहलू तथा ग्रामीण बेरोजगारी की समस्याएं" ।
39. श्यामाला देवी भूक्य (कुमारी), "आन्ध्र प्रदेश में लम्बाडों की समाज-आर्थिक परिस्थितियां" ।

40. नन्द गोपाल राजू, "तमिलनाडु में कृषि में पूंजी निर्माण"।
41. जगन्नाथ, "उत्तर प्रदेश के पर्वतीय जिलों में आप्रवास की पद्धति"।
42. डब्ल्यू० बी० सम्भाजी, "भारत (महाराष्ट्र) में राजनैतिक स्तर-निर्माण।"
43. गोथाल गवरगुरू नारायण, सुरक्षित निर्वाचन क्षेत्रों में अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित जन-जातियों के राजनैतिक अवयव: महाराष्ट्र का एक मामला अध्ययन"।
44. ऊषा देवी पुलापाकोरी (कुमारी) "प्रशासनिक पद्धति में लाल-फीताशाही"।
45. हरजीत कुमारी (कु०) "ग्रामीण भारत में समाज सुधारों, सरकारी नीतियों तथा अन्य एजेंसियों के अधीन पिछड़ी जातियों तथा समुदायों का बदलता हुआ स्तर"।
56. राम दास मौर्य, "जनजातीय समाज में सामाजिक परिवर्तन : बस्तर जिले का एक मामला अध्ययन"।
47. बुद्ध देव मजुमदार, "नैपाल का सामाजार्थिक आधुनिकीकरण, 196!-72"।
48. ए० बी० मकवाना, "1965-75 के दौरान अन्तर्राष्ट्रीय कानून के विकास में भारतीय न्यायालयों का योगदान"।
49. कमला गणेश (श्रीमती), "श्री वैकुन्तम् का कोट्टाईपिल्लामर"।
50. एस० नलिनी (कुमारी), "केरल में हाल की जनांकिकी प्रवृत्तियां"।
51. एन० मेहताब (श्रीमति), "ग्रामीण विकास के लिए संस्था निर्माण"।
52. एम० दास, "पश्चिम बंगाल में राजनैतिक विचाराधारा तथा प्रैस"।
53. अशोक कुमार झा, "आर्थिक कार्यकलाप में महिला सहभागिता की दर के कारण तथा परिणाम: बिहार का एक मामला अध्ययन"।
54. एच० सी० हनुमाप्पा, 'शहरी निर्धनता"।
55. ए० बी० शर्फउद्दीन अहमद, "बंगला देश के एक गांव में सामाजिक स्तर-निर्धारण की बदलती पद्धति"।

डाक्टोरल फैलोशिप (अल्पावधि)

1. एच० एफ० जारेत (कुमारी) "सामाजिक तथा आर्थिक दृष्टिकोण से भारत में पोषण की समस्याएं'।
2. एस० के० चौपड़ा (कुमारी), "औषधि तथा समुदाय प्रतिक्रिया की प्रणाली : कड़ियों का एक अध्ययन"।

3. पी० रामास्वामी (श्रीमति), "दिल्ली में राजनिति में हरिजन: एक मामला अध्ययन"।
4. पी० सिंह (श्रीमती), "भारत में जीवन बीमा निगम तथा पूंजी बाजार"।
5. के० सी मुन्द्रा, "अमेरिका के कुछ आर्थिक पहलू"।
6. वी० भादोवा, 'कृषि में श्रम का उपयोग"।
7. एम० अवस्थी (कुमारी) पोलिसेन्ट्रीज्म : "यूगोस्लाविया तथा रुमानिया की विदेशी नीतियों के प्रति सोवियत रुख"।
8. एस० कुलकर्णी (कुमारी), "भारत का राजनायिक प्रतिनिधित्व : ढांचा, कार्य तथा मूल्यांकन"।
9. जी० गौरी (श्रीमती), "बंगला देश में औद्योगिकीकरण की नीतिया"।
10. वी० दुआ (श्रीमति), "पंजाब के शहर में आर्य समाज के कुछ वर्गों का एक समाज-शास्त्रीय अध्ययन"।
11. पी० राव, "एक उच्चतर माध्यमिक शिक्षा संस्था में अनुसूचित जाति के छात्रों की समाज-आर्थिक पृष्ठभूमि तथा शैक्षिक उपलब्धियां"।
12. एम० नय्यर, "केरल में संयुक्त खेती बाड़ी के सामाजिक परिणाम"।
13. ए० खालिक, "धार्मिक बोध का विकास तथा मुस्लिम-स्कूल-छात्रों में पूर्वधारणा"।
14. एन० के० गौरवा, "एक भारतीय ग्राम की सामाजिक संरचना तथा राजनैतिक कड़ी"।
15. नहीद अहमद (कुमारी), "1840 से 1950 तक एलफिन्स्टन कालेज : उच्चतर शिक्षा बम्बई प्रेसीडेन्सी में एक मामला अध्ययन"।
16. एस० वी० वी० एस० एन० राव, "भारत में सामाजिक संरचना तथा कृषि : कार्यात्मक-पारस्परिक-कार्रवाई का एक प्रणाली विश्लेषण"।
17. सुधा वी० राव, (कुमारी), "ग्रामीण प्राथमिक स्कूलों का समाज-विज्ञान"।

आकस्मिक (फुटकर) अनुदान

1. ए० भारद्वाज (श्रीमती), "भारत में दिल्ली के विशेष सन्दर्भ में, महिला पुलिस का एक अध्ययन," 3250 रु०
2. एन० जी० पटेल, "सिंचाई तथा खेत के आकार पर विशेष जोर देते हुए कृषि में निवेश उत्पादकता," 3677 रु०।
3. के० पिछोलया, "महानगर अहमदाबाद में शहरी निर्धनता", 3,500 रु०।

4. एस० रहमतुल्ला, "संसद तथा भारत—अमेरिका सम्बन्ध (1970-73)", 3,400 रु० ।
5. एस० एन० एम० रिज़वी, "जन-जातीय समाज की स्वास्थ्य प्रथाएं : एक समाज-सांस्कृतिक विश्लेषण", 3,306 रु० ।
6. एस० के० देशपांडे (कुमारी), "ग्रेटर बम्बई में उत्प्रवास", 4,800 रु० ।
7. डी० एस० कर्की, "भारत की विदेश नीति, 1962-74 : भारत की सुरक्षा को बाहरी चुनौती के प्रति प्रतिक्रिया", 2,390 रु० ।
8. सुशीला राय (कुमारी), "जन-जातीय समाज की कुछ अभिवृति तथा व्यक्तित्व भिन्नताओं का एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन", 2,000 रु० ।
9. आई० एम० त्रिवेदी, "भारत में गुणात्मक क्षणिक नियन्त्रण की एक समालोचना", 3,840 रु० ।
10. सी० आनन्द (श्रीमती), "पंजाब के किसानों में विभेदीकरण की प्रक्रिया", 2,500 रु० ।
11. आर० वर्मा (श्रीमती), "भारत में मनःचिकित्सा-सामाजिक कार्य", 4,500 रु० ।
12. बी० डी० शर्मा, "हिमाचल प्रदेश में अति मानुषी का भूगोल : गद्दियों का एक मामला अध्ययन", 1,256.95 रु० ।
13. के० पांडुरगंम, "भारत में महिला पुलिस", 1,500 रु० ।
14. के० गोयल (कुमारी), "सोशलिस्ट पार्टी तथा भारत की विदेश नीति", 2,500 रु० ।
15. वी० एम० सिंह (श्रीमती), "उड़ीसा का परिवहन भूगोल", 3,100 रु० ।
16. एच० एस० धनी, "पंजाब में दलगत राजनीति", 3,000 रु० ।
17. सी० के० भट्ट, "राजस्थान में उच्चतर शिक्षा का अर्थ-शास्त्र", 2,400 रु० ।
18. के० एल० भाटिया, "जम्मू तथा कश्मीर, पंजाब तथा हरियाणा के राज्यों में कामगरों के मुआवजा कानूनों का प्रशासन", 3,250 रु० ।
19. असीरवादम (कुमारी), "तमिल लोक बेले का समाज शास्त्रीय अध्ययन", 3,650 रु० ।
20. आर० मुरडिया (कुमारी), "मानव सेवा संगठन के वितरण तथा पुनः वितरण में प्रबंध प्रक्रिया का तुलनात्मक अध्ययन", 1,000 रु० ।

21. ए० एस० शास्त्री, "मानसिक पीडितों का सामाजिक-धार्मिक उपचार तथा सामाजिक स्वीकार्यता", 2,800 रु० ।
22. टी० सी० शर्मा, उत्तर प्रदेश में "प्रमुख फसलों का उत्पादन तथा उत्पादकता का एक भूगोलिक विश्लेषण", 2,308 रु० ।
23. मंजु अग्रवाल (कुमारी), "भारतीयों में जीवन-पद्धतियों का एक अध्ययन", 4,000 रु० ।
24. आर० गौतम, "कक्षा वातावरण, छात्र संतोष और उपलब्धि के बीच संबंध", 5,000 रु० ।
25. मीरा सिन्हा (कुमारी), "मध्य वर्ग के परिसिग्रों के बीच आचरण सम्बन्धी विचार", 3,200 रु० ।
26. एफ० टेरेन्स, "मुस्लिम छात्रों के आचरण की धार्मिक प्रतिबद्धता, धार्मिक तथा सामाजिक स्थिति के बीच सम्बन्ध", 2,525 रु० ।
27. ए० के० सिंह, "भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की भूमिका", 2,500 रु० ।
28. जी० सिंह, "हाई स्कूल के शिक्षकों तथा छात्रों द्वारा परिकल्पित शैक्षिक उपलब्धियों का सह-सम्बन्ध", 4,200 रु० ।
29. ए० नाथु, "शिक्षकों के रोजगार-संतोष तथा छात्रों की उपलब्धियों के सम्बन्ध में स्कूल के संगठनात्मक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन", 2,500 रु० ।
30. आर० सुजाता राव (कुमारी), "भारत में सामाजिक संतोष के आर्थिक प्रभाव", 2,500 रु० ।
31. जे० बी० अनन्तरे, "जन-जातीय शिक्षा में आश्रम स्कूलों की भूमिका", 1,900 रु० ।
32. रीता गुप्ता (श्रीमती), "सामाजिक संरचना तथा युग : शहरी व्यवस्था में सेवा-निवृत पुरुषों की बदलती हुई भूमिकाओं, सम्बन्धों तथा समायोजन पद्धति का एक समाज-शास्त्रीय अध्ययन", 3,900 रु० ।
33. आर० डी० पन्जाबी, "भारत में सार्वजनिक कार्यालयों में भ्रष्टाचार का एक समाज-कानूनी अध्ययन", 5,000 रु० ।
34. सी० मिश्र, "सम्बलपुर में स्वतन्त्रता आन्दोलन", 2,850 रु० ।
35. आर० सिंह, "ग्रामीण विशिष्ट वर्ग तथा कृषि शक्ति संरचना : उत्तर प्रदेश में एक जिले का अध्ययन", 5,000 रु० ।
36. अब्राह्म जोसेफ, "जापान के साथ भारत के व्यापार की समस्याएं

तथा संभावनाएं", 2,300 रु० ।

37. टी० मोहम्मद, "उत्तर प्रदेश में स्थानीय वित्त तथा शहरी आर्थिक विकास : सहारनपुर तथा बरेली का एक अध्ययन", 2,750 रु० ।
38. बी० जी० आसारी, "भारत में ग्रामीण विकास में प्रौद्योगिकीय परिवर्तनों का आयात", 1,170 रु० ।
39. वी० धर्मलिंगम, "तमिलनाडु में चाय की खेती, उपयोग तथा व्यापा"र, 1,000 रु० ।
40. आर० पी० खंताने, "जम्मू तथा कश्मीर के गुजारा बाकेरवाला का ट्रेन्शुसेन्स, 4,300 रु० ।
41. ए० एस० मूर्ति, मद्रास नगर में आपराधिक वृद्धि पद्धति का एक भूगोलिक विश्लेषण", 5,000 रु० ।
42. एस० देना, "बंगलौर शहर में यात्रा आचरण पद्धति", 500 रु० ।
43. के० सीता (श्रीमती), "दक्षिण कोंकण के शहर तथा उनकी क्षेत्रीय व्यवस्था", 2,500 रु० ।
44. कृष्ण कुमार, "स्वामित्व तथा संगठनात्मक पद्धतिलां", 2,000 रु० ।
45. एस० एस० महादेव राव, "हैदराबाद जिले के विशेष सन्दर्भ में पंचायत, निकायों की वित्तीय व्यवस्था", 1,200 रु० ।
46. गीता कोहली (कुमारी), "इन्डियन एयरलाइन्स कोरपोरेशन का कार्यकरण", 1,443 रु० ।
47. ए० आर० मेहन्दला, "महाराष्ट्र में देहनु विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र के विशेष सन्दर्भ में सुरक्षित निर्वाचन क्षेत्रों की उपयोगिता का एक अध्ययन", 3,200 रु० ।
48. गोकुलनन्दा बासू, "उड़ीसा में शहरी स्थानीय निकायों का वित्तीय प्रशासन", 2,000 रु० ।
49. महेन्द्र चम्पती, "उड़ीसा की लिफ्ट सिंचाई परियोजना में जल के मूल्य पद्धति के आर्थिक पहलू", 3,440 रु० ।
50. संतोख राम, "जम्मू तथा कश्मीर राज्य में श्रम मध्यस्थता", 1,700 रु० ।
51. ए० खालिक, मुस्लिम स्कूल छात्रों में धार्मिक बोध पूर्व धारणाओं का विकास, 3,590 रु० ।
52. एस० सी० पांडे, "उड़ीसा में नागा प्रभाव", 1,800 रु० ।
53. रानी, कुट्टी कूरियाकोज (श्रीमती), "वीपीओन द्वीप, केरल के एक मछेरा समुदाय की परम्परा तथा आधुनिकता का एक

अध्ययन", 3,500 रु० ।

54. पी० सत्यनारायण, "राज्य विधान मंडल की वित्तीय समिति के आयोजन तथा कार्यकरण का एक अध्ययन", 3,000 रु० ।
55. विद्युत मोहन्ती, "1891 से 1921 तक उड़ीसा प्रभाग के विशेष सन्दर्भ में महिला, लिंग अनुपात तथा परिवर्तनशील व्यावसायिक पद्धति" ।
56. अमृत श्री निवासन (कुमारी), "जि० तंजोर (तमिलनाडु) मालाकरार समुदाय, के विवाह तथा सम्बन्ध प्रणाली, का एक समाज-शास्त्रीय अन्वेषण" ।
57. डी० आर० डबी (कुमारी), "महिलाओं द्वारा कार्य में सहभागिता : उपजाऊपन पर इसके निर्धारक तथा प्रभाव", 1000 रु० ।
58. आर० के० गोयल, "इन्दौर के विशेष सन्दर्भ में व्यवसायों का सामाजिक वर्गीकरण", 2500 रु० ।
59. एल० के० राउत, "उड़ीसा ग्राम में परिवर्तनशील वर्ग तथा प्रशासन प्रणाली", 2950 रु० ।
60. ए० शतनागर (श्रीमती), "अध्ययनों में लगे छात्रों को प्रभावित करने वाले तथ्यों का एक अध्ययन", 2500 रु० ।
61. एम०डी० मोंगा, "हरियाणा में श्रम कानूनों का कार्यान्वयन", 3700 रु० ।
62. एस० के० बारी, "रिजर्व बैंक आफ इंडिया के मुद्रा संबंधी नीति दस्तावेज", 1,480 रु० ।
63. बी० वी० एस० रेड्डी, "परम्परा तथा परिवर्तन: आन्ध्र प्रदेश के यहन्दी के बीच समाज-आर्थिक गतिशीलता का एक अध्ययन", 3,750 रु० ।
64. बी० के० राजू, "दक्षिण भारत में किसानों का उत्प्रवास तथा समायोजन : एक संक्षिप्त अध्ययन", 3000 रु० ।
65. सी० रत्नम, "विशाखापटनम में दूध की मांग तथा आपूर्ति का चित्रण", 4,450 रु० ।
66. हरविन्दर विर्क (कुमारी), "हिमाचल प्रदेश में कृषि विकास की योजना तथा प्रशासन", 379 रु० ।
67. ऊषा अग्रवाल (कुमारी), "भारत में शैक्षिक विचार तथा प्रथा में ब्रह्मविद्या सोसायटी का योगदान", 500 रु० ।
68. विद्या सागर (कुमारी), "राजस्थान में कृषि विकास का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन", 2,145 रु० ।

69. उमा रामास्वामी, "औद्योगिक कामगरों का एक समाज-शास्त्रीय अध्ययन", 4,500 रु० ।
70. जी० एस० लाल, "उत्तर प्रदेश के चमोली जिले की भूमि उपयोग पद्धति", 5000 रु० ।
71. एम० बी० सिंह, "इम्फाल तथा उसका वातावरण : शहरी भूगोल का एक अध्ययन", 3633 रु० ।
72. जे० एस० मेहता, "राजस्थान के अलवर जिले के स्कूल छोड़ने वालों का व्यावसायिक सर्वेक्षण तथा व्यावसायिक शिक्षा तथा प्रशिक्षण का आयोजन", 4,900 रु० ।
73. एच० एस० वर्मा, "उद्यमों के प्रबन्ध से संबंधित परिवार प्रणाली का प्रभाव", 5000 रु० ।
74. एस० पी० मलिक, "अध्ययन के आधार पर सापेक्ष प्रभावशीलता, पुस्तक बन कार्यक्रमों तथा बहुमाध्यम कार्यक्रमों की जांच", 2,260 रु० ।
75. महेन्द्र एस० पाल, "उत्तर प्रदेश में पिछले दो दशकों के दौरान कर—निर्धारण नीति की प्रवृत्तियां", 2000 रु० ।
76. मैरी जोसफिन (कुमारी), "शिक्षा कालेजों द्वारा अपनायी गई संचार पद्धतियों का एक आलोचनात्मक अध्ययन", 1,500 रु० ।
77. रामाधर दीक्षित, "अवध में कृषि-उद्योगों का स्थान-निर्धारण तथा विकास", 2,600 रु० ।
78. एस० एस० पांडी, "छः से दस वर्ष की आयु के बच्चों (राजस्थानी ग्रामीण बच्चे) की वर्गीकरण संबंधी योग्यता", 2,850 रु० ।
79. जक्तादर विदब्ला (श्रीमती), "उद्योग में वैज्ञानिक", 3,400 रु० ।
80. बी० एम० नायडू, "आ० प्र० राज्य विद्युत बोर्ड की वित्त व्यवस्था," 4,500 रु० ।
81. सी० जे० पुरेणी, "एक परिवर्तन माध्यम के रूप में भारतीय शिक्षक", 2,565 रु० ।

परिशिष्ट VIII

पिछली तिथि से संचयीग्रन्थ सूची : 31-3-1978 तक की प्रगति

1. नीचे दी गई पत्रिकाओं के सूचीकरण का कार्य पूरा कर लिया गया है :

क्रम सं०	शीर्षक	सूचीकरण		
1.	अफ्रीका त्रैमासिक	1(1961/62)	—	10(1970)
2.	मानव-वैज्ञानिक	1(1954)	—	17(1970)
3.	सांस्कृतिक अनुसंधान संस्थान, कलकत्ता का बुलेटिन	1(1962/63)	—	8(1969/70)
4.	परम्परागत संस्कृति संस्थान, मद्रास का बुलेटिन	1957	—	1970
5.	पूर्वीय मानव-वैज्ञानिक	1(1947/48)	—	23(1970)
6.	आर्थिक तथा राजनैतिक साप्ताहिक	1(1966)	—	5(1970)
7.	पौराणिक कथाएं भारतीय पौराणिक कथाओं सहित—1958-59)	1(1958)	—	2(1959)
		1(1960)	—	11(1970)
8.	विदेशी कार्य रिपोर्ट	1(1952)	—	19(1970)
9.	भारत त्रैमासिक	1(1945)	—	26(1970)
10.	भारतीय डेमोग्राफिक एन बुलेटिन (भारतीय जनसंख्या बुलेटिन 1960-67 सहित)	1(1960)	—	4(1967)
		1(1968)	—	बन्द हो गया
11.	भारतीय सामाजिक अनुसंधान पत्रिका	1(1960)	—	11(1970)
12.	भारतीय सामाजिक कार्य पत्रिका	1(1940/41)	—	31(1970/71)

क्रम सं०	शीर्षक	सूची कनण		
13.	भारतीय मनोवैज्ञानिक रीव्यू	1(1964/65)	—	7(1970/71)
14.	भारतीय समाज-शास्त्रीय बुलेटिन	1(1963/64)	—	7(1969/70)
15.	अन्तर्राष्ट्रीय इतिहास तथा राजनीति विज्ञान रीव्यू	1(1964)	—	7(1970)
16.	अन्तर्राष्ट्रीय समाज कार्य	1(1958)	—	13(1970)
17.	अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन	1(1959/60)	—	11(1969)
18.	इस्लामिक संस्कृति	1(1927)	—	50(1976)
19.	शिक्षा तथा मनोविज्ञान पत्रिका	1(1943-44)	—	27(1969-70)
20.	एशिया में पुनर्वास पत्रिका (एशिया में व्यावसायिक प्रशिक्षण तथा पुनर्वास सहित)	1(1961)	—	10(1970)
21.	भारत में पुरुष	1(1921)	—	50(1970)
22.	राजनीति विज्ञान रीव्यू	1(1962)	—	9(1970)
23.	जनसंख्या रीव्यू	1(1957)	—	14(1970)
24.	सेमिनार	एन 1(1959)	—	136(1970)
25.	सामाजिक कार्रवाई	1(1951-52)	—	20(1970)
26.	समाज कार्य मंच	1(1963)	—	8(1970-71)
27.	समाज शास्त्रीय बुलेटिन	1(1952)	—	19(1970)
28.	वन्य जाति	1(1963)	—	18(1970)

II निम्नलिखित पत्रिकाओं की सूची तैयार की जा रही है :

क्रम सं०	शीर्षक	31-3-78 तक की सूची तैयार की गई		
1.	ए० आई० सी० सी० आर्थिक रीव्यू	8(1956-57)	—	12(1960-61)
2.	आदिवासी	3(1958-59)	—	
		8(1966-67)	—	11(1969-70)

क्रम सं०	शीर्षक	31-3-78 तक की सूची		
3.	भारतीय मानव-वैज्ञानिक सर्वेक्षण का बुलेटिन (मानव-विज्ञान विभाग की बुलेटिन 1952-60 सहित)	1(1952)	—	6(1967)
		8(1959)	—	17(1968)
4.	जन-जातीय अनुसंधान संस्थान, छिंदवाड़ा का बुलेटिन	1(1961)	—	4(1964)
5.	आर्थिक साप्ताहिक	11(1959)	—	17(1965)
6.	विदेश कार्य रिकार्ड	1(1955)	—	2(1956)
7.	गांधी मार्ग	1(1957)	—	12(1968)
8.	भारतीय राजनीति विज्ञान पत्रिका	1(1939-40)	—	4(1942-43)
9.	भारतीय मनोविज्ञान पत्रिका	1(1926)	—	20(1945)
		30(1955)	—	31(1956)
		37(1962)	—	
		39(1964)	—	45(1970)
10.	मानव-वैज्ञानिक सोसायटी (बम्बई) एन० एस० की पत्रिका	9(1955)	—	12(1967)
11.	समाज अनुसंधान पत्रिका	1(1958)	—	3(1960)
		5(1962)	—	13(1970)
12.	ग्रामीण भारत	1(1938)	—	19(1956)
		22(1959)	—	25(1962)
		30(1967)	—	33(1970)
13.	समाज सेवा त्रैमासिक	2(1916-17)	—	22(1936-27)
		50(1064)	—	55(1969-70)
14.	समाज कार्य रीव्यू (एम० एस० बड़ौदा विश्वविद्यालय समाज कार्य संकाय मैगजीन सहित)	1(1954)	—	11(1964)

परिशिष्ट-IX

स्वीकृत प्रकाशन अनुदान (1977-78)

डाक्टर की उपाधि के लिए शोध-प्रबन्ध

1. अतुल गोस्वामी, अर्थशास्त्र के रीडर, डिबरूगढ़ विश्वविद्यालय, डिबरूगढ़ (असम), "असम में कीमतें तथा जीवन-निर्वाह व्यय"।
2. श्री प्रकाश, रीडर, अर्थशास्त्र विभाग, उत्तर-पूर्वी पर्वतीय विश्व-विद्यालय, शिलांग, "भारतीय आंकड़ों के अनुप्रयोग के साथ जन-शक्ति आयोजन के एक गाईड के रूप में शैक्षिक संरचना का गणितीय आधार"।
3. एस० जफ्फर हुसैन, विधि लैक्चरर, कैम्पस विधि केन्द्र- विधि संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, "भारत तथा अमेरिका में तलाक कानून तथा सुधार : तुलनात्मक कानून का अध्ययन"।
4. प्रताप सिंह वर्मा, 6, शिक्षक हास्टल, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, "राजस्थान में नगरपालिका कार्मिक : नौकरशाही के कुछ पहलुओं का एक अध्ययन"।
5. गंगानाथ झा, स्टाफ एसोसिएट, ए० एस शाखा, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली, "थाईलैंड की विदेश नीति" 1954-71।
6. ओ० पी० गोयल, बी 208, जनता कालोनी, जयपुर "भारत की वित्तीय संस्थाएं तथा आर्थिक विकास"।
7. सत्येन्द्र एस० नायक, जूनियर अनुसंधान अधिकारी, अर्थशास्त्र विभाग, बम्बई विश्वविद्यालय, विद्यानगरी, कलीना, बम्बई। "मुद्रास्फीति तथा भुगतान संतुलन"।
8. डब्ल्यू० एन० तुंगर, 408, नारायण पेठ, पुणे, "भारतीय उद्योग में नौकरशाही-एक समाजशास्त्रीय अध्ययन"।
9. के० वेन्कटा रेड्डी, लैक्चचर, अर्थ-शास्त्र विभाग, आन्ध्र विश्व-विद्यालय, वाल्टेयर (आ० प्र०) "आन्ध्र प्रदेश में कृषि उत्पादकता का एक अध्ययन"।
10. ओ० एस० मरवाह, विज्ञान तथा अन्तर्राष्ट्रीय कार्य के लिए

अनुसधान फैलो कार्यक्रम, 9, डिवीनिटी एवेन्यू, कैम्ब्रिज, मेसायूसेट्स, अमेरिका, "भारत : विरोधात्मक पद्धति सुरक्षा वातावरण तथा रक्षा सम्बन्धी नीति"।

11. पी० रामा राव, मनोविज्ञान रीडर, मद्रास विश्वविद्यालय, मद्रास "व्यक्तित्व तथा समय बोध के कुछ तथ्यों के बीच सम्बन्ध का एक अध्ययन"।
12. के० महादेवन पिल्लै, रीडर, जनसंख्या अध्ययन केन्द्र, श्रीवेन्कटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरूपति (आन्ध्र प्रदेश), "उर्वरता पद्धति के समाज शास्त्रीय निर्धारक"।
13. अंकुश बी० सावंती, अनुसंधान सहायक, अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन स्कूल, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, "मिश्र उप-सहारा अफ्रीका नीति : 1952-70 लक्ष्य, कार्यान्वयन तथा मूल्यांकन।"
14. सुरेन्द्र के० सिंह, रीडर तथा अध्यक्ष, भूगोल विभाग, उदय प्रताप कालेज, वाराणसी, "रिहन्द ग्रिड क्षेत्र के कृषि तथा औद्योगिक विकास पर विद्युतीकरण का प्रभाव"।
15. दिलीप कुमार मल, अर्थ-शास्त्र विभाग, उलुबेरिया कालेज, उलुबेरिया, हावड़ा, "पंच वर्षीय योजनाओं के दौरान भारत में आय तथा धन का वितरण"।
16. आर० के० शर्मा, के० सी०-32 बी०, अशोक बिहार, दिल्ली "भारत में उद्यम सम्बन्धी परिवर्तन"।
17. ए० सी० राय, पी०-15, गरियाहाट रोड, कलकत्ता, "मिजोरम निर्माण तथा समस्याओं में प्रशासन"।
18. बी० जी० राव, अनुसंधान एसोसिएट, सामाजिक तथा आर्थिक परिवर्तन संस्थान बंगलौर, "भारत में निगम आयकर का स्थानान्तरण-1950-1965"।
19. मारिल कोरेटा, प्रोफेसर, गृह-विज्ञान, सेंट टेरेसा कालेज, इर्नाकुलम "शारीरिक रूप से विकलांग बच्चों का मनोवैज्ञानिक समायोजन"।
20. मंजु विश्वास द्वारा पी० विश्वास, डी० 44/127, रामपुरा, वाराणसी, "मानसिक रूप से पिछड़े तथा सामान्य बच्चों की पारिवारिक स्थितियों का एक तुलनात्मक अध्ययन"।
21. सुमिता मलिक द्वारा कुमारी औरन्दमैनी, डी० सी० एम०, पहली मंजिल, कन्चेनजुंगा, 18, बारहखम्भा रोड, नई दिल्ली, "अनुसूचित जातियों में सामाजिक गतिशीलता के सामाजिक परिणाम।"

22. एस० के० बासू, बी० I/58/1, सफदरजंग एनक्लेव, नई दिल्ली "वाणिज्यक बैंक तथा कृषि साख-भारत में क्षेत्रीय असमानता का एक अध्ययन"।
23. रंजन कुमार लाहिड़ी, 3/6, टाइप iv क्वार्टर्स, कालेज तिल्ला, अगरतला-"विकासशील अर्थ-व्यवस्था में पारिवारिक कृषि-त्रिपुरा के खेत प्रबंध सर्वेक्षण पर आधारित एक अध्ययन"।
24. राजेन्द्र कुमार धवन, नं० 1, पंचकुईयां रोड, नई दिल्ली, "सर्व-साधारण की शिकायतें तथा लोकपाल"।
25. एस० पी० कश्पय, अर्थ-शास्त्री, सरदार पटेल संस्थान, अर्थ-शास्त्र तथा सामाजिक अनुसंधान, पोस्ट बोक्स नं० 4062 नवरंगपुरा, अहमदाबाद, "क्षेत्रीय निवेश-उत्पादन नमूने : गुजरात का एक मामला अध्ययन"।
26. के० के० वशिष्ठ, शिक्षा में लैक्चरर, क्षत्रीय शिक्षा कालेज, शिक्षा विभाग, अजमेर "तकनीक में शाब्दिक परस्पर कार्रवाई के प्रशिक्षण के माध्यम से माध्यमिक विज्ञान तथा गणित छात्र शिक्षकों की शाब्दिक पद्धति तथा कुछ विशेषताओं में परिवर्वन का एक प्रयोगात्मक अध्ययन"।
27. डी० एन मिश्र, लैक्चरर, राजनैतिक शास्त्र विभाग, मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा (विहार), "विधान मंडल में प्रश्न"।
28. एम० डी० गोडबोले, 161, बुराना विस्ता, जनरल जगन्नाथ भोसले मार्ग, बम्बई, "औद्योगिक विकेन्द्रीकरण नीतियों का प्रभाव महाराष्ट्र का एक मामला अध्ययन"।
29. वी० एस० कावेरी, राष्ट्रीय बैंक प्रबंध संस्थान, 85, नेपीयन सी रोड, बम्बई, "भारत में लघु उद्योगों के विशेष सन्दर्भ में ऋण लेने वालों की प्रवृत्तियों की संभावनाओं के रूप में वित्तिय अनुपात।"
30. सुव्रत कुमार; विकासशील सोसायटी अध्ययन केन्द्र, 29 अलीपुर रोड, "दिल्ली-वैचारिक संरचना नीति तथा मंत्रिमंडल अस्थिरता : एक सैद्धान्तिक तथा अनुभूतिमूलक स्पष्टीकरण"।
31 ओमर बीन सईद, मनोविज्ञान लैक्चरर, मानविकी तथा समाज-विज्ञान विभाग, भारतीय प्रौद्योगिक संस्थान, "संगठनात्मक प्रवृत्ति, उत्पादकता तथा प्रभावशीलता के सहसंवन्ध"।
32. प्रेम चन्द जैन, राजनैतिक शास्त्र विभाग, राजकीय वी० जी० कालेज, पी० पी० दामोह (मध्य प्रदेश), "फ्रांस, यू० के०, अमेरिका

तथा भारत में प्रशासनिक मध्यस्थता का एक तुलनात्मक अध्ययन"।

33. डा० नन्दू राम, मानविकी तथा समाज-विज्ञान विभाग, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर, "अनुसूचित जातियों में सामाजिक गतिशीलता तथा स्तर समरूपता : कानपुर शहर में अनुसूचित जाति के सरकारी कर्मचारियों का एक अध्ययन"।
34. के० एस० नायर, लैक्चरर, मानव-विज्ञान विभाग, पूना विश्व-विद्यालय, पुणे, "शहरी व्यवस्था एक क्षेत्रीय समुदाय"।
35. एम० पी० सिंह, बी० बी०/18-ए० जनकपुरी, नई दिल्ली "भारतीय संविधान के अन्तर्गत भारत में व्यापार, वाणिज्य तथा पारस्परिक व्यवहार की स्वतन्त्रता"।

अनुसंधान रिपोर्ट

1. पी० जे० लवकरे, कार्यकारी सचिव, भारतीय पुगवश सोसायटी, कमरा नं० 218, विज्ञान भवन एनैक्सी, मौलाना आजाद रोड, नई दिल्ली, "विकास के लिए वैकल्पिक नीतियों में आत्म-निर्भरता की भूमिका"।
2. सी० एम० ई० मैथ्यूज, लैक्चरर, स्वास्थ्य शिक्षा सामुदायिक स्वास्थ्य विभाग, क्रिश्चियन मेडिकल कालेज, वेलोर, "एक दक्षिण भारतीय ग्राम में स्वास्थ्य तथा संस्कृति"।
3. के० वी० रमाना, अध्यक्ष, सामाजिक कार्य विभाग, आन्ध्र प्रदेश विश्वविद्यालय, वालटेयर, विशाखापटनम "निर्धनता तथा समाज कार्य शिक्षा की चुनौति"।
4. डी० वी० चिवकेसमान्से, ग्रामीण शिक्षा अनुसंधान केन्द्र, "जी० के० ग्रामीण शिक्षा संस्थान, पी० ओ० गरगोती (जिला कोल्हापुर), महाराष्ट्र "ग्रामीण शिक्षा में परीक्षण"।
5. एस० सी० दूबे, "स्वतन्त्रता के बाद भारत : भारत के संबंध में सामाजिक रिपोर्ट-1947-1972"
6. सिसिर मित्रा, राष्ट्रीय संस्थान, पूर्वी भारत परियोजना कार्यालय, 20- के० वैलीगंगे टैरेस, कलकत्ता "एक सार्वजनिक सुविधा इसका प्रबन्ध, इसका विकास तथा ह्रास (1939-1975)"।
7. जार्ज थामस, निदेशक, भारत-ब्रिटिश ऐतिहासिक सोसायटी, 4-राजा राम मेहता एवेन्यु, मद्रास, "नो एलीफेन्ट फार महाराजा"

8. राजीव धवन तथा एलाइस जैकोब, भारतीय विधि संस्थान, भगवान-दास रोड, नई दिल्ली, "सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीशों का चयन तथा नियुक्ति"।
9. टी० जे० रमैया, सह-प्रोफेसर तथा अध्यक्ष, सांख्यिकीय तथा जनांकिकी विभाग, राष्ट्रीय स्वास्थ्य तथा परिवार कल्याण संस्थान, एल-17, ग्रीन पार्क- नई दिल्ली-16,"स्वास्थ्य परिवार-नियोजन तथा पौष्टिक आहार कार्यक्रमों तथा परियोजनाओं में पी० ई० आर० टी० । सी० पी० एम० का सिद्धान्त तथा अनुप्रयोगों"।
10. (कुमारी) एप० खांडेकर, अध्यक्ष, शिशु तथा युवा अनुसंधान टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान, सीओन ट्राम्वे रोड, दिन्नार, बम्बई, "शिशु कल्याण एजेन्सी के लिए वित्तीय अनुपात : बम्बई में एक प्रारम्भिक अध्ययन"।
11. एस० एम० डी० टी० विश्वविद्यालय, बम्बई, "महिलाओं की मुक्ति की दिशा में गान्धी जी योगदान"।

परिशिष्ट X

प्राप्त आंकड़े सैट

1974-75

1. रिजर्व बैंक आफ इंडिया, "छठा अनुवर्ती साख सर्वेक्षण (1963-66)" (कार्ड)।
2. रिजर्व बैंक आफ इंडिया, "पंजाब में ट्यूब-वैलों से संबंधित लागत का लाभ अध्ययन (1966-67)" (अनुसूचियां)।
3. रिजर्व बैंक आफ इंडिया, "कुओं तथा पम्प-सैटों के निर्माण से होने वाले लाभों का मूल्यांकन करने हेतु क्षेत्र-अध्ययन (1967-68)" (अनुसूचियां)।
4. रिजर्व बैंक आफ इंडिया, "बैंक-सुविधाओं का अध्ययन" (अनुसूचियां)।
5. रिजर्व बैंक आफ इंडिया, "मानदंडों के निर्धारण, वापसी की क्षमता का मूल्यांकन तथा बन्धक के मूल्य-निर्णय का अध्ययन (1869-70)"। (अनुसूचियां)
6. घनश्याम शाह, "गुजरात के हरिजनों तथा आदिवासियों पर चुनाव-प्रणाली का प्रभाव : 1971 के चुनावों का अध्ययन" (कार्ड)।
7. डी० टी० लक्कड़वाला, "गुजरात में शैक्षिक व्यय का अधिकतम उपयोग" (कार्ड)।
8. अरुण एन० मिची, "ग्रामीण राजस्थान में आर्थिक परिवर्तन तथा राजनैतिक अभिवृत्तियां" (कार्ड)।
9. रामाश्रय राय, "1969 के मध्यविधि चुनावों का अध्ययन" (कार्ड तथा टेप)
10. के० जी० देसाई, "ग्रेटर बम्बई में सेवा-निवृत्त लोगों की समस्याएं" (अनुसूचियां)।
11. जे० एफ० बुलसारा, "ग्रेटर बम्बई के विशेष सन्दर्भ में महानगरीय जीवन का सामाजिक पहलू" (अनुसूचियां)।
12. के० मैथ्यु कूरियन, "केरल में चुने हुए ग्रामों में कृषि संरचना तथा सामाजिक परिवर्तन : एक प्रायोगिक अध्ययन" (कार्ड)।

13. यू० पी० सिंह, "जेल वासियों के पृष्ठभूमि तथ्य" (अनुसूचियां)।
14. माईसन वेयनर, राज्य विधान सभाओं के सभी चुनावों के चुनाव-सम्बन्धी आंकडे (टेप)।
15. एल० एस० सरस्वती, "बड़ौदा जिले के पद, जिन पर गृह वैज्ञानिक के पदों पर नियुक्त व्यक्तियों तथा उनके कर्मचारियों द्वारा परिकल्पित नौकरियों के लिए आवश्यक क्षमता तथा वैज्ञानिकों के पद" (अनुसूचियां)।
16. (कुमारी) एम० खड़ेकर, पूर्व स्कूल बच्चों की आवश्यकताओं तथा समस्याओं का एक क्षेत्र-अध्ययन (कार्ड)।
17. सच्चिदानन्द, "गहन कृषि विकास कार्यक्रम के सामाजिक आयाम" (अनुसूचियां)।
18. आर० सुब्रमण्यम, "मदुरै शहर तथा इसके आस-पास लघु उद्योगों में उद्यमशीलता" (अनुसूचियां)।

1975-76

19. योगेन्द्र के० मलिक, "भारत में माध्यमिक स्कूली बच्चों का राजनैतिक समाजीकरण" (कार्ड)।
20. योगेश अटल, "संचार सम्पर्क तथा राजनैतिक सहभागिता की पद्धति" (कार्ड)।
21. कामता प्रसाद, "उत्तर प्रदेश में चुने हुए निर्माणकारी उद्योगों की रोजगार संभावना" (कार्ड)।
22. योगेन्द्र मलिक, "हिन्दी भाषी बुद्धिजीवी" (कार्ड)।
23. एम० खांडेकर, "ग्रेटर बम्बई समाज कल्याण सेवाओं का उपयोग" (कार्ड)।
24. एम० खांडेकर, "ग्रेटर बम्बई में शिशु कल्याण सेवाओं का उपयोग" (कार्ड)।
25. एम० खांडेकर, "ग्रेटर बम्बई में पूर्व-स्कूल बच्चों के पौषाणिक मूल्यांकन का एक अध्ययन" (कार्ड)।
26. संचालन (आपरेशन) "अनुसंधान दल, बड़ौदा, अखिल भारतीय परिवार नियोजन सर्वेक्षण" (टेप)।
27. संचालन (आपरेशन) "अनुसंधान दल, बड़ौदा अखिल भारतीय रीडरशिप सर्वेक्षण" (टेप)।
28. के० के० सुब्रमणयन, "स्थानीय श्रम बाजार में वेतन संरचना तथा

गतिशीलता" (टेप)।

29. रिजर्व बैंक आफ इंडिया, "छोटे किसानों का अध्ययन" (अनुसूचियां)।
30. आई० पी० देसाई, "अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जन-जाति के छात्रों की शैक्षिक समस्याएं" (टेप)।
31. सी० एस० मिश्र, "मध्य प्रदेश के जन-जातीय जिले में कृषि मूल्य समर्थन नीति की समस्याएं : बस्तर का एक मामला अध्ययन (अनुसूचियां)।
32. सी० एस० मिश्र, "मध्य प्रदेश के रायपुर जिले में राजकीय बंजर भूमि का निपटान" (अनुसूचियां)।
33. एच० जे० पांडया, "पंचायती राज में नेतृत्व, इसका गठन तथा परिवर्तनशील पद्धति" (कार्ड)।
34. अमलान दत्ता, "पश्चिम बंगाल के कालेजों में शिक्षा का अर्थ-शास्त्र" (अनुसूचियां)।
35. के० एस० सौनाचलम, "तमिलनाडु में भूदान तथा भूमि वितरण कार्यक्रम का एक मूल्यांकन" (अनुसूचियां)।
36. आर० सी० प्रसाद, "राजनीतिज्ञ तथा दल प्रणाली" (कार्ड)।
37. बागेन्दु गंगुली, "पश्चिम बंगाल में मतदान प्रणाली 1972" (कार्ड)।
38. कृषि मंत्रालय तथा फोर्ड फाउन्डेशन, "विकास केन्द्रों में प्रायोगिक अनुसंधान परियोजना" (कार्ड तथा टेप)।

1976-77

39. थोमस पनहाम, "राजनैतिक दल तथा लोकतांत्रिक मतैक्य" (कार्ड)।
40. पी० सी० अग्रवाल, "विशेषाधिकारों के माध्यम से समानता हरियाणा में अनुसूचित जातियों के लिए स्वीकृत विशिष्ट विशेषाधिकारों का एक अध्ययन" (कार्ड)।
41. सी० के० जोहरी, "श्रम गतिशीलता तथा वेतन-संरचना : एक क्षेत्रीय अध्ययन" (अनुसूचियां)।
42. विमल पी० शाह, गुजरात के अनुसूचित जातियों तथा जन-जातियों के उत्तर-मैट्रिक अध्येताओं का एक अध्ययन" (टेप)।
43. बी० सर्वेश्वर राव, आन्ध्र प्रदेश के तटवर्ती क्षेत्र में वाणिज्यिक तथा औद्योगिक उद्यमशीलता" (कार्ड)।

44. वी० के० कूल, प्रयोगात्मक प्रेरित आक्रमण के सम्बन्ध में सत्तावादी तथा प्रत्यक्ष शत्रुता का एक अध्ययन" (प्रश्नावली)।
45. एस० एल० दोसी, अनुसूचित जाति अनुसूचित जन-जाति का राजनीतिक एकीकरण" (कार्ड)।
46. डी० एल० नारायण, "रायलसीमा में जन-जातियों की आर्थिक स्थितियों का एक मूल्यांकन" (प्रश्नावलों)।
47. पी० एस० हुंडल, उद्यम प्रेरणा तथा इसकी संरचना" (कार्ड)।

पारिशिष्ट XI

अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों अथवा सेमिनारों में भाग लेने के लिए भारतीय समाज विज्ञानियों को स्वीकृत अनुरक्षण (अनुदान)।

1977-78

1. सी० पी० भम्भरी को अमेरिका में बैठक में भाग लेने के लिए।
2. जी० एस० भल्ला को टोकियों में बैठक में भाग लेने के लिए।
3. आर० पी० ढकालिया को इरडिनबर्ग में बैठक में भाग लेने के लिए।
4. पी० के० दासगुप्ता को इटली में बैठक में भाग लेने के लिए।
5. ई० डब्ल्यू फ्रेन्कलिन को कुआलालम्पुर में एक वर्कशाप में भाग लेने के लिए।
6. आर० सी० हिंगोरानी को मनीला में एक बैठक में भाग लेने के लिए।
7. एन० के० एन० आयंगर को ब्राजील में और अधिक अवधि तक उनके ठहरने के लिए।
8. ताहिर मोहम्मद को मान्ट्रीयल में एक बैठक में भाग लेने के लिए।
9. एस० पी० माथुर को कनाडा में एक बैठक में भाग लेने के लिए।
10. मूनिस रज़ा को प्रेग में और अधिक अवधि तक उनके ठहरने के लिए।
11. के० के० मूर्ति को इस्तनबुल में एक बैठक में भाग लेने के लिए।
12. जे० एस० नेकी को होनुलुलु में बैठक में भाग लेने के लिए।
13. आर० एस० निगम को अम्स्टरडम में और अधिक अवधि तक उनके ठहरने के लिए।
14. पी० के० राव को फ्रान्स में एक बैठक में भाग लेने के लिए।
15. पी० मोहनन पिल्ले को इंग्लैंड में और अधिक अवधि तक उनके ठहरने के लिए।

16. (श्रीमती) राज वधवा को इंग्लैंड में और अधिक अवधि तक उनके ठहरने के लिए ।
17. रामेश्वर टंडन को टोकियो में एक बैठक में भाग लेने के लिए ।
18. रईस अखलर को हवाई में और अधिक अवधि तक उनके ठहरने के लिए ।
19. के० एस० सिंह को इंग्लैंड में अनुसंधान सामग्री एकत्र करने के लिए ।
20. डी० पी० सिंह को सिंगापुर में और अधिक अवधि तक उनके ठहरने के लिए ।
21. शीलावती रंगानाथन को स्टरलिंग, स्काट लैंड में एक बैठक में भाग लेने के लिए ।
22. पी० डी० चावला को अमेरिका में और अधिक अवधि तक ठहरने के लिए ।

परिशिष्ट XII

अनुसंधान संस्थानों के संबंध में एक नोट

सामाजिक विज्ञानों में अध्ययन के लिए केन्द्र, कलकत्ता

अनुसंधान

केन्द्र ने, 1977-78 के दौरान निम्नलिखित अनुसंधान परियोजनाओं को पूरा किया :—

(1) अमलेन्दु गुहा, मध्यकालीन उत्तर-पूर्वी भारत : राजतन्त्र, समाज तथा अर्थ-व्यवस्था, 1200-1750

(2) ए० बन्दोपाध्याय, तमिलनाडु में कृषि अर्थ-व्यवस्था तथा कृषि परिस्थितयां, 1820 से 1855।

(3) एन० एन० बन्दोपाध्याय, कृषि अर्थ-व्यवस्था के विकास में उप-क्षत्रीय पद्धतियां तथा राष्ट्रीय आयोजना के लिए इसके निहितार्थ प० बंगाल का एक मामला अध्ययन।

(4) एस० के० मुन्शी, ब्रिटिश राज के अन्तर्गत पूर्वी भारत में परिवहन के संबंध में एक पुस्तक।

28 अनुसंधान परियोजनाओं के संबंध में अनुसंधान कार्य प्रगति पर है।

प्रकाशन

केन्द्र ने निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित कीं :—

1. दोबेस राय, रविन्द्रनाथ ओ थार आडिगाड्या।
2. अशोक सेन, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर तथा उसके दूरगामी लक्ष्य।
3. एस० के० चौबे, परथा चटर्जी, एस० दत्ता गुप्ता तथा सुदिप्त कविराज राजनीतिक सिद्धान्त की स्थिति: कुछ मार्क्सवादी निबंध।
4. एस० के चौबे, सोवियत रूस का नया संविधान: एक विश्लेषण।
5. सोहनलाल दत्ता गुप्ता, भारत में न्याय तथा राजनीतिक पद्धति : संस्थाओं तथा विचार धाराओं की जांच : 1950-1972 इसके अतिरिक्त, संकाय के सदस्यों ने विभिन्न पत्रिकाओं/पत्रों में 38 लेख तथा पुस्तक समीक्षाएं प्रकाशित की।

सेमिनार/वर्कशाप/सम्मेलन

केन्द्र ने, पश्चिम बंगाल जिलों के उप-मंडलों में स्थानीय स्कूल स्तर पर इतिहास के स्कूली अध्यापकों के लिए दो पुनश्चर्या पाठ्यक्रम संचालित किए तथा "भारतीय औद्योगिकरण" पर अखिल भारतीय सेमिनार तथा "पूर्वी भारत में खाद्यान्नों के सार्वजनिक वितरण की समस्याओं पर एक वर्कशाप आयोजित कीं। इसके अतिरिक्त, सामाजिक विज्ञानों के क्षेत्र में विभिन्न विषयों पर 19 स्टाफ सेमिनारों की व्यवस्था की गई।

भारत तथा विदेश के विख्यात विद्वानों ने केन्द्र का दौरा किया। विदेशी विद्वानों में निम्नलिखित शामिल थे। श्री सी० ए० चार्लटन, पालीमाउथ पालिटेक्निक, यू० के०, डा० बेरी स्काट मार्गन, लन्दन विश्वविद्यालय कालेज, लन्दन, डा० डेविड सिलबोर्न, रस्किन कालेज, आक्सफोर्ड डा० रोबिन जेफरी आस्ट्रेलियाई राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, केनबरा। दो अनुसंधानकर्ता केन्द्र से रवाना हुए।

निधियां

केन्द्र को, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद तथा पश्चिम बंगाल सरकार से पांच-पांच लाख रुपये के अनुदान प्राप्त हुए। इसके अतिरिक्त, केन्द्र को, वेतनमान संशोधित करने के लिए भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद से 0.32 लाख रुपये प्राप्त हुए। खर्चे की प्रमुख मदें थी : वेतन तथा भत्ते और पुस्तकालय (6.86 लाख रुपये); परियोजनाएं तथा सेमिनार (0.98 लाख रुपये); अन्य स्थापना मदें (0.86 लाख रुपये) तथा पिछले वर्षों से बकाया घाटे की राशि को इस वर्ष समायोजित किया गया (1.37 लाख रुपये)।

ए० एन० सिन्हा सामाजिक अध्ययन संस्थान, पटना

सेमिनार

संस्थान ने वर्ष के दौरान अपने कार्यक्रम जारी रखे और बाहरी एजेंसियों के सहयोग से अनेक सेमिनार आयोजित किए। इनमें से कुछ प्रमुख इस प्रकार हैं : (i) भा० पु० से० एसोसियशन के साथ "आधुनिक भारत में पुलिस की भूमिका"; (ii) राष्ट्रीय श्रम संस्थान के साथ "कृषि संबंधी विवाद और आन्दोलन"; (iii) समाज शास्त्रीय सोसायटी के साथ "संसदीय तथा

विधान सभा चुनाव, 1977"; (iv) भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद के साथ "भारतीय युवाओं की समस्याएं"; और (v) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान तथा प्रशिक्षण परिषद के साथ "प्राथमिक शिक्षा का सर्वव्यापीकरण तथा अभिभावक-अध्यापक संघ की भूमिका"। इसके अतिरिक्त, संस्थान ने, "प्रबुद्ध वर्ग के अध्ययन" पर एक सेमिनार तथा 17 आवधिक सेमिनार आयोजित किए।

प्रकाशन

संस्थान ने, अपने संकाय सदस्यों के कार्य के आधार पर निम्नलिखित पांच प्रकाशन प्रकाशित किए : (1) सच्चिदानन्द द्वारा हरिजन प्रबुद्ध वर्ग; (2) अली अशरफ द्वारा सरकार तथा बड़े नगरों की राजनीति; (3) के० के० वर्मा द्वारा संस्कृति, परिस्थिति विज्ञान तथा जनसंख्या; (4) ए० के० लाल द्वारा निर्धनता की राजनीति; और (5) एस० एफ० रब द्वारा जय प्रकाश का आन्दोलन तथा जनता पार्टी का उद्भव।

संकाय

संकाय सदस्यों ने विभिन्न समितियों तथा पनलों में काम किया। डा० सच्चिदानन्द, शैक्षिक अनुसंधान तथा परिवर्तन और भारतीय विज्ञान कांग्रेस के पुरातत्व अनुभाग के एक सदस्य थे। प्रोफेसर पी० एच० प्रसाद तथा प्रोफेसर जे० पी० सिन्हा को क्रमश: बैंक आफ इण्डिया के गवर्नर्स बोर्ड तथा मनोविज्ञान में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग पैनल के एक सदस्य के रूप में नामजद किया गया। डा० अली अशरफ तथा डा० जैकस पोचेपादास ने संस्थान छोड़ दिया।

भ्रमणकारी

संस्थान में अनेक महत्वपूर्ण व्यक्ति आए, जैसे (1) श्री मेकजार्ज बुन्डी, प्रधान, फोर्ड प्रतिष्ठान, न्यू यार्क; (2) डा० रोबर्ड एफ० गोहीन, भारत में अमरीकी राजदूत, नई दिल्ली; (3) प्रोफेसर पाल ब्रास, वाशिंगटन विश्वविद्यालय; (4) प्रोफेसर कामारोव, भारत विद्या संस्थान, मास्को; (5) डा० मरी मिलनर, फुलब्राइट प्रोफेसर, वर्जिनिया विश्वविद्यालय; और प्रोफेसर ट्योडर शनीन, मेनचेस्टर विश्वविद्यालय।

अनुसंधान

वर्ष के दौरान निम्नलिखित अनुसंधान परियोजनाएं पूरी की गई :

(1) सच्चिदानन्द, "मुण्डा का पुनर्अध्ययन" ।
(2) जय पी० बी० सिन्हा, "दि नरटूरेन्ट टास्कमास्टर" ।
(3) मंजू सिन्हा, "पटना के साइकिल रिक्शा चालक" ।
(4) सच्चिदानन्द, "सिंहभूम जिले के मेसो क्षेत्र विकास के संबंध में परियोजना रिपोर्ट" ।
(5) एच० धर, "कृषि बाजारों के मूल्यांकन के संबंध में तीसरी वार्षिक रिपोर्ट" ।
(6) नई अनुसंधान परियोजनाओं के संबंध में कार्य शुरू किया गया।

पी० एच० डी० प्रदान की गई

चार अध्येताओं को, जिन्होंने संस्थान संकाय के पर्यवेक्षण में कार्य किया, बिहार के विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा पी० एच० डी० डिग्री प्रदान की गई ।

वर्ष के दौरान प्राप्तियों और व्यय के प्रमुख शीर्ष निम्न प्रकार थे :—

आय		व्यय	
स्रोत	रुपये		रुपये
बिहार सरकार से अनुदान	6,00,000,00	वेतन तथा भत्ते	5,81,435.48
भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद	3,00,000,00	पुस्तकालय	67,367.26
आन्तरिक प्राप्तियां	43,581,78	अनुसंधान	18,372.21
		शेष मद	2,38,821.22
		बकाया	37,585.56
जोड़	9,43,581,73		9,43,581,73

सार्वजनिक उद्यम संस्थान, हैदराबाद

सार्वजनिक उद्यम संस्थान, हैदराबाद की गतिविधियों ने वर्ष 1977-78 के दौरान गति पकड़ी । उन्हें, अनुसंधान, प्रशिक्षण तथा परामर्श गतिविधियों में वर्गीकृत किया जा सकता है ।

अनुसंधान

सार्वजनिक उद्यम संस्थान, हैदराबाद ने निम्नलिखितों के संबंध में अनुसंधान परियोजनाएं प्रारंभ की : (1) सार्वजनिक वितरण प्रणाली का प्रबंध, और (2) राज्य विद्युत बोर्डों की वित्तीय नीतियों तथा संगठनात्मक पद्धति का अध्ययन ।

इन परियोजनाओं के संबंध में कार्य पूरा ही होने वाला था । वर्ष के दौरान तीन और अनुसंधान परियोजनाएं तैयार की गई ।

प्रशिक्षण

संस्थान ने सार्वजनिक उद्यम ब्यूरो के सहयोग से सार्वजनिक उद्यमों में निगमित आयोजना' के संबंध में 11 से 13 जनवरी 1978 तक नई दिल्ली में एक राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किया । सेमिनार, देश के तीन प्रमुख सार्वजनिक उद्यमों, अर्थात् भारत हैवी इलेक्ट्रिकल्स लि०, हिन्दुस्तान मशीन टूल्स लि० और हिन्दुस्तान आर्गनिक केमिकल्स लि० में निगमित आयोजना पद्धतियों के संबंध में क्षेत्रीय अनुसंधान पर आधारित था । इसके अतिरिक्त, संस्थान ने, वर्ष 1977-78 के दौरान सिम्नलिखित कार्यकारी विकास कार्यक्रम आयोजित किए :

1. 23 से 28 मई 1977 तक बंगलौर में सार्वजनिक उद्यमों के संबंध में गैर-वित्तीय कार्यकारियों के लिए वित्त ।
2. 11 से 16 जुलाई 1977 तक हैदराबाद में राज्य विद्युत बोर्डों में सामग्री प्रबंध ।
3. 22 अगस्त से 15 अक्तूबर 1977 तक हैदराबाद में राष्ट्रीय खनिज विकास लि० के कार्यकारी प्रशिक्षार्थियों के लिए बुनियादी प्रबंध कार्यक्रम ।

उस्मानिया विश्वविद्यालय ने, संस्थान को, वाणिज्य तथा व्यापार प्रबंध संकाय में पी० एच० डी० के लिए उम्मीदवारों को प्रशिक्षित करने के वास्ते एक केन्द्र के रूप में, अपनी मान्यता को संशोधित किया ।

संस्थान ने सार्वजनिक उद्यम प्रबंध मे एक वर्षीय उत्तर-स्नातक डिप्लोमा के लिए पाठ्यचर्या को अन्तिम रूप दिया, उसके लिए उस्मानिया विश्व-विद्यालय से मान्यता प्राप्त की, और जुलाई 1978 से कार्यक्रम शुरू करने के लिए पाठ्यक्रम सामग्री का विकास किया ।

परामर्श

संस्थान, सार्वजनिक उद्यमों के संचालन तथा नीति संबंधी मामलों पर आन्ध्र प्रदेश सरकार को सलाह प्रदान करता है । एक दर्जन से भी अधिक अध्ययन किए गए और रिपोर्ट आन्ध्र प्रदेश सरकार को भेजी गई । संस्थान एक आंकड़े बैंक का भी संचालन करता है जिसमें सभी राज्य तथा केन्द्रीय सार्वजनिक उद्यमों के निष्पादन आंकड़े पुन: प्राप्त करने की स्थिति में रखे जाते हैं । संस्थान ने, निगमित आयोजना पद्धतियों की स्थापना में केन्द्रीय सार्वजनिक क्षेत्र उद्यमों की मदद की ।

पुस्तकालय तथा प्रकाशन

संस्थान ने अपने पुस्तकालय के लिए वर्ष 1977-78 के दौरान 25,000 रुपये मुल्य की पुस्तकें प्राप्त कीं प्रबंध सम्बद्ध विषयों से संबंधित लगभग 50 पत्र-पत्रिकाओं का ग्राहक बना । 'दि इंस्टिट्यूट आफ पब्लिक एन्टरप्राइज न्यूजलैटर' को आई० पी० आई० जनरल में परिवर्तित किया गया और इसके अंकों में अनुसंधान आधारित लेख तथा देश में सार्वजनिक उद्यम प्रबंध में वर्तमान रूचि के मामलों पर लेख छापे जाते हैं ।

डा० एम० एस० आदिशेषय्या की अध्यक्षता में भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद की निरीक्षण समिति ने संस्थान का दौरा किया । समिति ने पांचवी योजना अवधि के दौरान इसके कार्य का मूल्यांकन किया तथा छठी योजना में इसके विकास के लिए सिफारिशें की ।

संस्थान को कुल 4.17 लाख रुपये का अनुदान प्राप्त हुआ जिसमें भारतीय सामाजिक अनुसंधान परिषद से प्राप्त 0.75 लाख रुपये, आन्ध्र प्रदेश सरकार से प्राप्त दो लाख रुपये तथा विविध स्रोतों से प्राप्त 1.42 लाख रुपये शामिल हैं । संस्थान ने 4.17 लाख रुपये खर्च किए जिसमें वेतन तथा भत्तो पर 3.05 लाख रुपये, अन्य स्थापना मदों और पुस्तकों तथा पत्रिकाओं पर 1.07 लाख रुपये का खर्च शामिल है ।

आर्थिक विकास संस्थान, दिल्ली

अनुसंधान

आलोच्य अवधि के दौरान संस्थान ने निम्नलिखित अध्ययन पूरे किए :

1. पी० सी० जोशी, "आर्थिक विकास के लिए गांधी का महत्व"।
2. आर० पी० गोयल, "शादी के अवसर पर स्त्री आयु में वर्तमान प्रवृत्तियां : कुछ नीति निहितार्थ"।
3. एन० के० गोयल (सं०), "संक्षिप्त टिप्पणी तथा सार के साथ एशियाई सामाजिक विज्ञान ग्रन्थसूची, 1969"
4. के० जी० जोली, "दिल्ली महानगर में शिक्षा तथा आवास स्तर की दृष्टि से उर्वरक आचरण"।
5. के० जी० जोली, "दिल्ली महानगर में महिलाओं के विवाह तथा कार्य स्तर पर शिक्षा, आयु की दृष्टि से विभेदक उर्वरकता"।
6. पी० सी० वर्मा, "भारत, बंगला देश तथा पाकिस्तान के चुने हुए निर्यात"।
7. बी० बी० भट्टाचार्य, "भारत में सार्वजनिक क्षेत्र लेन-देन तथा राष्ट्रीय लेखों के संबंध में एक नोट"।
8. डी० यू० सास्त्री, "भारत में सूती वस्त्र उद्योग में क्षमता उपयोग"।
9. जी० आर० सैनी, "कृषि में निवेशों का चयन—सिंचाई तथा रसायन उर्वरकों की सामाजिक उपादेयता का एक अध्ययन"।
10. राजेश मेहता, "नागालैण्ड में लुग्दी तथा कागज परियोजना का आर्थिक मूल्यांकन"।
11. स्वपन मुखोपाध्याय, "बेरोजगारी, रोजगार खोज तथा ऐच्छिक प्रतीक्षा समय"।
12. टी० एन० मदान, "भाषा विविधता तथा राष्ट्रीय एकता"।
13. ए० के० दासगुप्ता, "फसल भागीदारी काश्तकारी में विविधताएं : एक अन्तर-जिला विश्लेषण"।
14. बी० डी० धवन, "पूर्वी उत्तर प्रदेश में कुआं-सिंचाई के सम्भाव्य परिणामों के संबंध में एक नोट"।
15. बी० डी० धवन, "ट्यूबवेल सिंचाई में पैमाना अर्थशास्त्र"।
16. बी० डी० धवन, "पूर्वी उत्तर प्रदेश में भूजल सिंचाई (प्रारम्भिक कार्य)"।

17. जी० काडेकोडी, "लोह पिण्ड में गिरावट तथा मूल्य नीति"।
18. जी० काडेकोडी, "दोनीमलई लोह पिण्ड परियोजना का मूल्यांकन"।
19. जी० काडेकोडी (एस० एन० कुलकर्णी के साथ संयुक्त रूप से), "भारत में शेयर मूल्य आचरण : अविचारित व्यवसाय परिकल्पना का एक वर्णक्रमीय विश्लेषण"।
20. के० सुब्बाराव, "आन्ध्र प्रदेश में चावल के विपणन, सार्वजनिक वसूली वथा वितरण के कुछ पहलू"।
21. एन० एस० सिद्धार्थन, "मूल्य तथा वितरण नियंत्रण परिस्थितियों के अन्तर्गत लघु उद्योगों की मांग तथा क्षमता उपयोग"।
22. "भारत में लघु उद्योगों में बहु-राष्ट्रकों तथा सम्पिण्डित निवेश आचरण"।
23. एस० सी० गुलाटी, "भारतीय संघ की जनसंख्या विभाजन में दीर्घकालिक प्रवृत्तियाँ" : 1901-1971

22 अनुसंधान परियोजनाओं के संबंध में कार्य प्रगति पर है।

प्रकाशन

सन 1977-78 में संस्थान द्वारा निम्नलिखित प्रकाशन प्रकाशित किए गए :

(i) एस० एन० मिश्र, "भारत में पशु आयोजन"।
(ii) के० सुब्बाराव, "आन्ध्र प्रदेश में चावल विपणन पद्धति तथा अनिवार्य वसूली"।
(iii) जी० आर० सैनी, खेत का आकार, संसाधन-उपयोग कार्यकुशलता तथा आय वितरण।
(iv) आशिष बोस, "भारत का नगरीयकरण, 1901-2001 (द्वितीय संस्करण)"।

संकाय सदस्यों के अठारह लेख। कागज व्यावसायिक पत्रिकाओं/पत्रों में प्रकाशित किए गए।

पी० एच० डी० कार्य

संस्थान ने अपने पी० एच० डी० कार्यक्रम पर पर्याप्त बल दिया। दिल्ली विश्वविद्यालय से 31-3-1978 को अपना पी० एच० डी० कार्य करने के लिए 23 उम्मीदवारों को संस्थान के संकाय का पर्यवेक्षण प्राप्त हुआ। उनमें से दो ने अपने शोध निबन्ध प्रस्तुत किए।

प्रशिक्षण शिक्षण कार्यक्रम

भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा प्रयोजित 4 प्रशिक्षार्थियों और भारतीय आर्थिक सेवा परिवीक्षाधीन 9 व्यक्तियों के नवें बैच ने 6 अक्तूबर 1977 को अपना प्रशिक्षण पूरा किया । फिलहाल भारतीय आर्थिक सेवा परिवीक्षाधीन 11 व्यक्तियों तथा भारतीय रिजर्व बैंक के एक प्रशिक्षार्थी का दसवां बैच संस्थान में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहा है ।

इसके अतिरिक्त, संस्थान ने इस अवधि के दौरान निवेश आयोजना तथा परियोजना मूल्यांकन में पांच प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जिसमें विभिन्न राज्य सरकारों तथा केन्द्रीय मंत्रालयों के 65 अधिकारियों ने भाग लिया । दो वरिष्ठ स्तरीय, एक मिडिल स्तरीय तथा दो संचालनात्मक स्तरीय पाठ्यक्रम आयोजित किए गए ।

पत्रिका

संस्थान ने "कन्ट्रीब्यूशन्स टू इण्डियन सोसिओलाजी : नई क्रममाला" पत्रिका के अंकों का प्रकाशन कार्य जारी रखा । इस पत्रिका के खण्ड XI का अंक 2, दिसम्बर 1977 में प्रकाशित किया गया ।

अन्य कार्यकलाप

संस्थान ने 28 सितम्बर 1977 को "भारत में जनसंख्या नीति पर एक संगोष्ठी आयोजित की, जिसमें दिल्ली विश्वविद्यालय तथा विभिन्न कालेजों के अर्थशास्त्र अध्यापकों ने भाग लिया ।

योजना आयोग के सदस्य डा० राज कृष्ण ने "पंचवर्षीय योजना, 1978-83 का प्रारूप : कुछ उभरते हुए विवाद," पर 17 अप्रैल 1978 को संस्थान में व्याख्यान दिया ।

सेमिनार/सम्मेलनों में भाग लेना

संकाय के सदस्यों ने राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनारों/सम्मेलनों में भाग लिया और निबंध प्रस्तुत किए । इसके अतिरिक्त, संकाय सदस्य, केन्द्रीय, राज्य सरकार तथा भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, आन्ध्र विश्वविद्यालय तथा भारतीय समाज शास्त्रीय सोसायटी जैसे संगठनों की समितियों/आयोगों/परिषदों में कार्य कर रहे हैं ।

कुल आय

संस्थान के सभी अनुसंधान तथा प्रशिक्षण सेक्शनों के लिए वित्त की व्यवस्था केन्द्रीय सरकार के विभिन्न मंत्रालयों से प्राप्त अनुदानों में से की जाती है। संस्थान को, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद से अनुरक्षण तथा अनुसंधान एवं विकास अनुदान भी प्राप्त होता है, जो संस्थान के विभिन्न सेक्शनों में कार्यरत अनेक विद्वानों की सहायता करती है। प्राप्त अनुदान तथा खर्च की गई राशि के ब्यौरे दर्शाने वाला विवरण नीचे दिया गया है :

आय स्रोत	(लाख रुपये)	सेक्शन/खर्च	(लाख रुपये)
स्वास्थ्य तथा परिवार नियोजन मंत्रालय	4.57	जनांकिकी अनुसंधान केन्द्र	4.57
भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद	5.72	अनुरक्षण तथा विकास	5.67
योजना आयोग	1.30	योजना तथा विकास सेक्शन	1.30
कृषि तथा सिंचाई मंत्रालय	1.14	कृषि अर्थशास्त्र सेक्शन	1.14
गृह मंत्रालय	2.70	आई० एफ० एस० प्रशिक्षण कार्यक्रम	2.70
योजना आयोग	3.38	निवेश आयोजन सेक्शन	3.38
उपयोगकर्ताओं (होस्टल) से किराया	0.54	आई० ई० जी० होस्टल	0.54
स्टाफ क्वार्टरों से किराया	0.55	आई० ई० जी० सोसायटी एकाउन्ट	0.55
भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (परियोजनाएं)	0.72	तदर्थ परियोजनाएं	0.72
भारतीय स्टेट बैंक से ऋण	1.50	भवन निर्माण	1.50
		शेष	0.05
जोड़	22.12		22.12

गांधी अध्ययन संस्थान, वाराणसी

आपात काल के दौरान अनुदान बन्द हो जाने के कारण संस्थान को अपने कार्यकलाप स्थगित करने पड़े। आलोच्य वर्ष के पहले कुछ महिनों के दौरान संस्थान ने अपनी वित्तीय कठिनाइयों को दूर करने तथा समुचित कामकाज के लिए अपना पुनर्गठन करने के लिए अनेक कदम उठाए जैसे अपनी स्टाफ पद्धति का पुनर्गठन, विभिन्न राज्य सरकारों से धन प्राप्त करना तथा प्रोफेसर अमलान दत्ता की पूर्णकालिक निदेशक के रूप में नियुक्ति। स्वर्गीय प्रोफेसर बी० एन० गांगुली की अध्यक्षता में भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद द्वारा नियुक्त एक निरीक्षण समिति ने संस्थान की पिछली गतिविधियों की समीक्षा की, इसकी भावी क्षमता का मूल्यांकन किया तथा संस्थान के विकास तथा विस्तार के लिए अनेक सिफारिशें कीं। इन सिफारिशों के आधार पर संस्थान ने अनेक कदम उठाए जैसे अपने संकाय को सुदृढ़ करने के लिए बाहरी विद्वानों को भ्रमणकारी प्रोफेसरों के रूप में आमंत्रित करना, स्टाफ के सदस्यों को पदोन्नति प्रदान करना तथा संशोधित वेतनमान लागू करना तथा उत्तर प्रदेश सरकार से समानुपातिक अनुदान देने का अनुरोध करना।

अनुसंधान

अनेक गम्भीर बाधाओं के बावजूद संस्थान ने अनुसंधान के अपने प्रयास जारी रखे तथा निम्नलिखित अध्ययन पूरे किए।

1. स्थानीय दल संगठन : एक आचरणात्मक दृष्टिकोण।
2. जटिल आपराधिक स्थितियों में शान्ति के लिए अनुरोध; चम्बल डाकुओं के साथ सर्वोदय शान्ति मिशन का मामला अध्ययन।
3. समाकलित स्वास्थ्य तथा परिवार नियोजन : कार्रवाई अनुसंधान।
4. उत्तर प्रदेश में बाल कल्याण : नीति कार्यक्रम तथा संस्थात्मक प्रबंधों का एक अध्ययन।

निम्नलिखित अनुसंधान परियोजनाएं प्रगति पर हैं।

1. ग्राम कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण के संबंध में समेकित कार्यक्रमों पर अध्ययन यूनिट तथा निकासी गृह।
2. उत्तर प्रदेश की राजनीतिक प्रणाली के रूप में विधायी आचरण।
3. जांच आयोग की रिपोर्टों के सामने आई हिंसात्मक घटनाओं के वैचारिक ढांचे का एक अध्ययन।
4. पूर्वी उत्तर प्रदेश में बन्धुआ मजदूरों की आर्थिक स्थिति।

व्याख्यान देने के लिए समय-समय पर विख्यात विद्वान आमंत्रित किए गए, जैसे प्रोफेसर पी० आर० ब्रह्मानन्द, प्रोफेसर गौतम माथुर, श्री रघुकुल तिलक, प्रोफेसर अमिया चक्रवर्ती, श्री उमाशंकर जोशी तथा दादा धर्माधिकारी।

आलोच्य अवधि के दौरान निम्नलिखित प्रकाशन प्रकाशित किए गए :—

1. स्वास्थ्य तथा परिवार कल्याण के लिए जन कार्रवाई—एक बहु-दृष्टिकोण;
2. आधुनिक भारत में ग्रामीण विकास का इतिहास, खण्ड II तथा IV

पुस्तकालय

संस्थान के पुस्तकालय में सामाजिक विज्ञानों तथा मानविकी के विभिन्न विषयों की लगभग 15,000 पुस्तकें हैं। 64 विदेशी तथा भारतीय पत्रिकाएं खरीदी गई।

वित्त

संस्थान को भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद तथा उत्तर प्रदेश सरकार से क्रमश: 4.4 लाख रुपये और 4,50 लाख रुपये का अनुदान प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त, संस्थान को वर्ष 1976-77 के लिए आवर्ती अनुदान के रूप में भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद से 2.21 लाख रुपये प्राप्त हुए। अन्य राज्य सरकारों से 10.00 लाख रुपये से अधिक राशि का तदर्थ अनुदान भी प्राप्त हुआ।

इस प्रकार संस्थान इन अनुदानों के साथ 10.00 लाख रुपये की अपनी वित्तीय प्रतिबद्धता को पूरा कर सका। खर्च की प्रमुख मदें थीं :

(i) वेतन तथा भत्ते; 5.23 लाख रुपये; (ii) स्थापना तथा फुटकर; 1.35 लाख रुपये; (iii) प्रकाशन 3500 रुपये; और (iv) अनुसंधान परियोजनाएं 0.57 लाख रुपये।

विकास अध्ययन केन्द्र, त्रिवेन्द्रम

अनुसंधान

केन्द्र के अनुसंधान कार्यकलापों में, विशिष्ट क्षेत्रों तथा प्रदेशों में विकास अनुभवों के विश्लेषण के माध्यम से राष्ट्रीय स्तर पर विकास के वृहत

अध्ययन से लेकर विशिष्ट वस्तुओं तथा परियोजनाओं के वृहत अध्ययन तक शामिल है। तथापि, अधिकतर ध्यान मेक्रों आर्थिक अध्ययन की अपेक्षा क्षेत्रीय, प्रादेशिक तथा पदार्थ स्तरों की समस्याओं पर दिया गया : 1977-78 में 34 शोध निबंध पूरे किये गये तथा 29 अनुसंधान अध्ययन चल रहे हैं या उन्हें अगले वर्षों के दौरान शुरू करने का प्रस्ताव है।

प्रशिक्षण

केन्द्र ने, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय की एम० फिल० डिग्री के लिए प्रयुक्त अर्थशास्त्र में एक वर्षीय पाठ्यक्रम प्रदान किया ताकि आर्थिक प्रश्नों के निपटने के लिए प्रयुक्त अर्थशास्त्र तथा विश्लेषणात्मक विधियों में पर्याप्त जानकारी प्राप्त हो सके। इसके अलावा कुछ विशिष्ट अल्पकालिक पाठ्यक्रम आयोजित किए गए।

केन्द्र, पी० एच० डी० छात्रों को रजिस्टर तथा मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए केरल विश्वविद्यालय तथा जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त है। केन्द्र के संकाय द्वारा मार्गदर्शित अधिकतर छात्र अपने-अपने शोध निबंधों पर अंशकालिक तौर पर कार्य कर रहे हैं।

सेमिनार/सम्मेलन

केन्द्र ने 19 से 21 दिसम्बर 1977 तक भारतीय इकानामेट्रिक सोसायटी के सत्रहवें वार्षिक सम्मेलन का आतिथ्य किया और वर्ष के दौरान अनेक सेमिनारों का आयोजन किया। फैलो तथा अनुसंधान एसोसिएटों द्वारा आयोजित कुछ सेमिनारों में वैयक्तिक अनुसंधान प्रयासों के प्रारम्भिक निष्कर्षों तथा रीति विज्ञान संबंधी समस्याओं को शामिल किया गया तथा अन्य सेमिनारों का नेतृत्व अतिथि वक्ताओं ने किया।

पुस्तकालय

पुस्तकालय ने, जुलाई 1977 से जून 1978 तक की अवधि के दौरान 10,575 पुस्तकें तथा जिल्द वाली पत्रिकाएं प्राप्त कीं। इसके अतिरिक्त, अप्राप्य पुस्तकें, रिपोर्टें, फार्म लेखे, लेजर इत्यादि, जिनकी कुल संख्या 226 थी, पाण्डुलिपि के रूप में, कोलेनकोड महल से प्राप्त किए गए। विदेशी पुस्तकालयों को प्रस्तुत किए गए रुचिकर विषयों के पी० एच० डी० शोध निबंधों को 72 माइक्रोफिल्में भी खरीदी गई। पत्रिकाओं के पिछले अंकों और दुर्लभ सामग्री को मिलाकर 30 जून 1978 को कुल पुस्तकों की संख्या 42,653 थी। इसके अतिरिक्त 7820 पुस्तकों के क्रय आदेश दिए गए हैं।

अन्य कार्यकलाप

केन्द्र के संकाय सदस्यों ने विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय एजेन्सियों से लेखक कार्य लिए। ऐसा परामर्श कार्य केवल ऐसे मामलों में स्वीकार किया गया जहां कि अध्ययन की जाने वाली समस्याएं संकाय सदस्यों के शोध हित से संबंधित थी। पी० जी० के० पाणिकर, टी० एन० कृष्णन और एन० कृष्णाजी द्वारा "जनसंख्या वृद्धि तथा कृषि विकास" खाद्य तथा कृषि संगठन के लिए ए० वैद्यनाथन द्वारा "भारतीय कृषि में श्रम उपयोग" (अन्तर्राष्ट्रीय श्रम कार्यालय के लिए), इस वर्ग के अन्तर्गत आने वाले दो अध्ययन हैं। प्रोफेसर आई० एस० गुलाटी ने, राष्ट्रमण्डल सचिवालय के लिए "अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा सुधार तथा तीसरे विश्व" पर एक निबंध तैयार किया। ए० वैद्यनाथन ने एशिया तथा प्रशान्त के लिए आर्थिक और सामाजिक आयोग की ओर से एक परामर्श कार्य स्वीकार किया।

ए० वैद्यनाथन तथा के० पी० कानन को, तीन प्रमुख विकास परियोजनाओं, अर्थात् केरल शास्त्र साहित्य परिषद द्वारा आयोजित धान के खेतों के ईर्द-गिर्द स्थायी बांधों के निर्माण, थानीरमुक्कोम रेगुलेटर, तथा थोटापल्ली स्पिलवे, के परिणामस्वरूप अध्ययन से सम्बद्ध किया गया।

केन्द्र ने अपनी छठी योजना के प्रस्ताव तैयार किए तथा भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद द्वारा नियुक्त निरीक्षण समितियों का स्वागत किया।

निधियां

केन्द्र को, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद से 6 लाख रुपये तथा केरल सरकार से 10 लाख रुपये का अनुदान प्राप्त हुआ। इसका कुल खर्च 19.3 लाख रुपये था, खर्च की प्रमुख मदें थीं : स्थापना (8.2 लाख रुपये), पुस्तकें तथा पत्र-पत्रिकाएं (5.2 लाख रुपये), फर्नीचर तथा उपस्कर (2 लाख रुपये), परियोजनाएं तथा फैलोशिप (1.3 लाख रुपये) तथा भवन निर्माण (1.9 लाख रुपये); 0.7 लाख रुपये की राशि भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा वित्त पोषित यूनिट पर खर्च की गई।

सामाजिक तथा आर्थिक परिवर्तन के लिए संस्थान, बंगलौर

वर्ष की प्रमुख घटनाएं

(i) शासी निकाय के संशोधित नियमों के अन्तर्गत, कर्नाटक के राज्यपाल, सामाजिक तथा आर्थिक परिवर्तन संस्थान, सोसायटी के अध्यक्ष

बन गए; (ii) भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद द्वारा नियुक्त एक निरीक्षण समिति ने संस्थान के पांचवी योजना अवधि के कार्य का मूल्यांकन करने तथा छठी योजना अवधि के लिए इसके विकास प्रस्तावों की जांच करने के लिए 28-29 जनवरी 1978 को संस्थान का निरीक्षण किया। संस्थान ने कर्नाटक सरकार तथा भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद को छठी योजना के लिए अपने प्रस्ताव प्रस्तुत किए; (iii) संस्थान ने, समझे जाने वाले विश्वविद्यालय का दर्जा प्राप्त करने के लिए कार्रवाई प्रारंभ की; (iv) मौलिक अनुसंधान कार्य शुरू करने के लिए युवा समाज विज्ञानियों को प्रोत्साहित करने तथा ज्ञान के विकास में उनके योगदान को मान्यता देने के लिए सामाजिक विज्ञान अनुसंधान में पांच-पांच हजार रुपये के तीन 'प्रोफेसर वी० के० आर० वी० राव' पुरस्कार प्रारंभ किए गए; और (v) कर्नाटक सरकार के संशोधित वेतनमान, गैर-शैक्षिक स्टाफ के लिए तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के वेतनमान, शैक्षिक स्टाफ के लिए जनवरी 1977 से लागू किए गए।

अनुसंधान

अपनी अनुसंधान परियोजनाओं के अलावा संस्थान ने केन्द्रीय तथा राज्य सरकारों के विभागों। एजेंसियों द्वारा उसे सौंपी गई अनुसंधान परियोजनाएं प्रारंभ की। संस्थान ने वर्ष के दौरान निम्नलिखित अनुसंधान परियोजनाएं पूरी की :

(i) बी० एल० एस० प्रकाश राव तथा वी० के० तिवारी, "भारत में नगरीयकरण : स्थानिक आयाम"; (ii) वी० एल० एस० प्रकाश राव तथा तथा वी० के० तिवारी, "शहरी जनसंख्या घनत्व: माडल्स तथा सह-संबंध"; (iii) ए० एस० सीताराम, "ग्रामीण क्षेत्रों में शैक्षिक वर्ग द्वारा विकास कार्यक्रम के प्रति प्रतिक्रिया का अध्ययन"; (iv) अमल रे तथा के० बी० कुप्पुस्वामी, "लघु किसान विकास प्रशासन"; (v) बी० एस० भार्गव, "पंचायती राज में उभरता हुआ संस्थात्मक नेतृत्व"; (vi) एन० भास्कर राव तथा रमेश कनवरगी, "कर्नाटक में गर्भ समाप्ति"; (vii) पी० एच० रायप्पा,, "विकासशील देशों में कामगरों की सहभागिता के निर्धारक; (viii) पी० जे० भट्टाचार्जी, "परिवार नियोजन स्वीकारकर्त्ताओं की नमूना जांच" ; (ix) एन० जे० ऊषा राय, "कर्नाटक में अनुसूचित जातियों का चित्रण"; (x) रामेश्वर टन्डन, "भारत के निर्यात प्रोत्साहनों का अध्ययन"; (xi) अपर कृष्णा (चरण I) (एम० जी० आई० पी०)—कर्नाटक सिंचाई

तथा सी० ए० डी० रिपोर्ट ; (xii) परमजीत वाहन तथा टी० वेंकटादासप्पा, "विद्युत मशीनरी तथा परिवहन उपस्कर उद्योग में यूनिट लागत, मूल्य तथा संसाधन आवंटन" ; (xiii) एस० रामा राव तथा एम० नागेश्वर राव, "शहरी स्थानीय व्यय के निर्धारक : कर्नाटक के प्रमुख नगरों का एक मामला अध्ययन" ; (xiv) एम० वी० नदकर्णी, "बाजार गए तथा बाजार योग्य अधिशेष का आचरण— जि० अहमदनगर, महाराष्ट्र के फार्म प्रबंध आंकड़ो का एक मामला अध्ययन; (xv) "बाढ़ पीड़ित जिले में वर्षा की अस्थिरता तथा कृषि पैदावार का एक अध्ययन"; (xvi) बंगलौर नगर माडल (बंगलौर महानगर का एव नमूना), और (xvii) बैंच मार्क सर्वेक्षण एक जनांकिकीय वृत्त ।

अठतीस अनुसंधान परियोजनाएं प्रगति पर हैं ।

अपने फोर्ड प्रतिष्ठान अनुदान के अन्तर्गत, प्रकाशित संसाधनों से जिले के संदंध में पृष्ठ-आँकढ़े एकत्र करके टुमकर परियोजना का कार्य, जिला जनगणना पुस्तिका में से ग्राम-सार आंकड़ों के सारणीकरण, अनुसंधान प्रस्ताव तैयार करने और संदर्भ पुस्तकों, रिपोर्टों तथा अन्य सामग्री का संकलन कार्य जारी रहा ।

स्नातकोत्तर प्रशिक्षण तथा अनुसंधान के लिए विदेशों में प्रतिनियुक्ति के लिए चुने गए 16 व्यक्तियों में से अब तक सात व्यक्ति भेजे गए हैं। उनपर 29,000 डालर खर्च किए गए हैं । तीन व्यक्ति 1977-78 में विदेश भेजे गए ।

पुस्तकें, पत्रिकाएं तथा उपस्कर

संस्थान के पुस्तकालय के लिए 2,993 पुस्तकें खरीदी गई जिनपर 53,178.59 डालर खर्च हुए । संस्थान को मेप-ओ-ग्राफ से सज्जित करने के लिए 4,570 डालर खर्च किए गए हैं, जिस के लिए मेसर्स आर्ट-ग्राफ इंक, माइनापोलिस को आदेश दिया गया है ।

पी० एच० डी० कार्यक्रम

वर्ष 1977-78 में पी० एच० डी० कार्यक्रम के लिए आठ उम्मीदवार चुने गए । दो उम्मीदवारों को भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद फैलोशिप तथा छः उम्मीदवारों सा० आ० प० सं० फैलोशिप प्रदान की गई । इन सभी उम्मीदवारों ने 9 महीने का पूर्व-पी० एच० डी० पाठ्यक्रम का अध्ययन किया ।

सन 1973 के तीन पी० एच० डी० फैलो ने अपने शोध-निबंध प्रस्तुत किए ।

प्रकाशन

संस्थान के स्टाफ सदस्यों की निम्नलिखित पुस्तकें वर्ष के दौरान जारी की गई :—

1. जी० तिमैय्या, "राज्यों पर संघीय ऋणों का बोझ" ।
2. वी० एस० भार्गव, सी० एस० शेषाद्रि तथा अमल रे, "परियोजना निर्धारण, निर्माण तथा मूल्यांकन" ।
3. वी० एस० भार्गव, "पंचायती राज प्रणाली में उभरता हुआ नेतृत्व" ।
4. वी० के० आर० वी० राव (सं०), "परिप्रेक्ष्य में आयोजना" ।
5. वी० एल० एस० प्रकाश राव तथा बी० के० तिवारी, "भारत में नगरीयकरण : स्थानिक आयाम" ।

सेमिनार/प्रशिक्षण कार्यक्रम

संस्थान ने निम्नलिखितों पर तीन सेमिनार आयोजित किए : (क) "ग्रामीण क्षेत्री में शैक्षिक वर्ग का विकास कार्यक्रम के प्रति प्रतिक्रिया", अप्रैल 1977; (ख) "शैक्षिक खेल सामग्री", अक्तूबर 1977; और (ग) "जनसंख्या अध्ययन मंच बैठक", नवम्बर 1977 ।

पूर्व-प्राथमिक शिक्षक-अध्यापकों के लिए एक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किया गया ।

संस्थान ने भारतीय तथा विदेशी समाज विज्ञानियों द्वारा 9 व्याख्यानों का आयोजन किया ।

स्टाफ

दो वरिष्ठ फैलो, एक फैलो, एक भ्रमणकारी वरिष्ठ फलो तथा एक अनुसंधान एसोसिएट संस्थान में शामिल हुआ तथा दो भ्रमणकारी वरिष्ठ फैलो, एक फैलो तथा एक अनुसंधान एसोसिएट ने संस्थान छोड़ दिया ।

कैम्पस

चिकित्सा केन्द्र, सहकारी भण्डार, बैंक तथा डाक घर और एक सामुदायिक हाल को मिलाकर सामुदायिक ब्रांच पूरी की गई । सेमिनार हालों, फोयरों तथा मुख्य लाबी को सज्जित किता गया ।

आय तथा व्यय

संस्थान को आलोच्य वर्ष के दौरान भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद से 7.50 लाख रुपये तथा कर्नाटक सरकार से 8,82,50.00 रुपये आवर्ती खर्च के लिए अनुदान के रूप में प्राप्त हुए। कुल 18.10 लाख रुपये खर्च हुए, जिसमें वेतन तथा भत्तों पर 12.38 लाख रुपये, फैलोशिपों पर 1.00 लाख रुपये, पुस्तकालय पर 0.96 लाख रुपये, अनुसंधान कार्यक्रमों पर 0.20 लाख रुपये, आंकड़ा संसाधन प्रशिक्षण। अनुसंधान प्रकाशन पर 0.11 लाख रुपये तथा मुद्रण, लेखनसामग्री, फुटकर आदि पर 3.45 लाख रुपये खर्च हुए।

विकासशील सोसायटियों के अध्ययन के लिए केन्द्र, दिल्ली

वर्ष की महत्वपूर्ण घटनाएं

(i) गत वर्षों के दौरान एकत्रित आंकड़ों को समुचित रूप में रहने के लिए अवस्थापना को स्थिर बनाने' पत्रिका की योजना तैयार करने तथा उसके और फोर्ड प्रतिष्ठान द्वारा केन्द्र को दिये जाने वाले 1,50,000 डालर के अनुदान के लिए भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद द्वारा की गई बातचीत की दिशा में केन्द्र ने संतोषजनक प्रगति की (ii) सर्वेक्षण अनुसंधान तकनीकों की स्थापना के लिए उपस्कर के वास्ते भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद के दस लाख रुपये के पूरक अनुदान के साथ पांच वर्षों की अवधि के दौरान 20 लाख रुपये का अनुदान उपलब्ध कराने के लिए केन्द्र ने ड़ेनिश अन्तराष्ट्रीय विकास एजेन्सी के साथ सामाजिक विकास के लिए परिषद के साथ बातचीत की। (iii) केन्द्र ने, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद तथा फोर्ड प्रतिष्ठान के अनुदानों से 29, राजपुर रोड की सम्पत्ति खरीदने के लिए बातचीत प्रारंभ की।

अनुसंधान

केन्द्र के अनुसंधान क्षेत्र हैं : संसदीय तथा विधान सभा चुनाव, परिवार आयोजन, राजनीतिक मनोविज्ञान, मनोविज्ञान तथा विज्ञान की संस्कृति, सामाजिक तथा संगठनात्मक परिवर्तन और अल्पसंख्यक समुदाय। आलोच्य वर्ष के दौरान निम्नलिखित अध्ययन पूरे किए गए :—

(i) बंगाल, उत्तर प्रदेश तथा उड़िसा के चुने हुए ग्रामीण क्षेत्रों में 1977 के संसदीय तथा विधान सभा चुनावों का मामला अध्ययन।

(ii) 1977 के चुनावों के दौरान बिहार में जनता और कांग्रेस दलों के लिए उम्मीदवारों के चयन की प्रक्रिया के संबंध में एक अध्ययन।

(iii) 1977 के आम चुनाव अध्ययन के आंकड़ों पर आधारित भारतीय उग्र सुधारवाद के स्रोतों का पता लगाने के लिए एक विश्लेषणात्मक अध्ययन।

(iv) 1971 की जनगणना के आधार पर भारतीय राजनितिक प्रबुद्ध वर्ग की सामाजिक श्रेणी तथा विश्वास प्रणालियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

(v) मुसलमानों का अध्ययन।

अनेक अनुसंधान परियोजनाओं पर कार्य शुरू किया गया, जैसे, (i) परिवार नियोजन नीतियां, (ii) आपातकाल के दौरान परिवार नियोजन की समस्याएं और भावी कार्रवाई के लिए इसके निति निहितार्थ. (iii) उपनिवेशवाद का मनोविज्ञान तथा वांछनीय राजनीतिक संस्कृति, (iv) परम्परागत विज्ञान की भूमिका तथा मनोवैज्ञनिक वातावरण पर बल देते हुए नृवंशीय प्रथाएं, (v) विकास में नागरिक सहभागिता का महत्व—गुजरात तथा उड़िसा में एक अध्ययन, (vi) संयुक्त राष्ट्र विश्व-विद्यालय द्वारा प्रायोजित विकास के लक्ष्य, प्रक्रिया तथा संकेतक, (vii) दिल्ली में पारसी समुदाय का सामाजिक—आर्थिक सर्वेक्षण, और (viii) सामाजिक विज्ञान, चीनी समुद्रीय शक्ति, चीन में विकेन्द्रीकरण तथा माओ और महात्मा गांधी के तुलनात्मक अध्ययन के संबंध में माओवादी दृष्टिकोण पर एक विनिबंध।

सेमिनार। सम्मेलन

केन्द्र ने, 'नि:शस्त्रीकरण' पर एक गैर-सरकारी अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित की और इसके कागजातों को "नि:शस्त्रीकरण, विकास तथा एक संयुक्त विश्व व्यवस्था" नामक एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया। नीति अनुसंधान केन्द्र के साथ सहयोग से केन्द्र ने 'योजना आयोग की भूमिका' पर एक संगोष्ठी आयोजित की। इसके अतिरिक्त, केन्द्र ने प्रमुख समाज विज्ञानियों के व्याख्यानों का आयोजन किया, जैसे (i) प्रोफेसर एलन रोलेण्ड (अनेरिका में मनोविश्लेषण के लिए राष्ट्रीय मनोविज्ञानीय एसोसिएशन के संकाय तथा वरिष्ठ सदस्य), (ii) डी० ई० सी० जी० सुदर्शन, निदेशक, कण-भौतिक केन्द्र, टेक्साज विश्वविद्यालय, (iii) डा० महबूबुल हक, निदेशक

विश्व बैंक नीति आयोजना कार्यक्रम समीक्षा विभाग. और (iv) क्लाउ आलवर्स, प्रधान, ग्रामीण अध्ययन तथा परिवर्तन सोसायटी।

शिक्षण कार्यक्रम

केन्द्र ने अपने स्टाफ सदस्यों द्वारा पाठ्यक्रम आयोजित करने के लिए दिल्ली और रोहतक विश्वविद्यालयों के साथ एक समझौता किया। दिल्ली विश्वविद्यालय में एक एम० फिल पाठ्यक्रम आयोजित किया गया।

प्रकाशन

केन्द्र ने निम्नलिखित प्रकाशन प्रकाशित किए :

(i) आशिष नन्दी, "अवसर तथा प्रतिक्रिया;" (ii) बशीरूद्दीन अहमद, "नागरिक तथा राजनीति: भारत में सामूहिक राजनीतिक आचरण,": (iii) सुब्रता मित्रा, "भारतीय राज्यों में सरकारी अस्थिरता;" और (iv) एच० आर० चतुर्वेदी, "नौकरशाही तथा स्थानीय राजनीति।"

स्टाफ

अनुसंधान एसोसिएटों के दो पद भरे गए और प्रोफेसर रजनी कोठारी ने दिल्ली विश्वविद्यालय में राजनीति विज्ञान के प्रोफेसर का पद संभालने के लिए केन्द्र में अपना कार्यभार छोड़ दिया।

वर्ष 1977-78 के दोरान केन्द्र का आय-व्यय वितरण इस प्रकार है:—

(लाख रुपये)

आय		व्यय	
भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद		वेतन, स्थापना आदि	5.05
(i) आवर्ती	4.00	संस्थापन के पास अनावर्ती निधि	3.14
(ii) अनावर्ती	4.50	विदेश मंत्रालय	
विदेश मंत्रालय	12.00	परियोजना	6.50
परियोजना अनुदान	1.46	परियोजनाएं	0.97
		शेष	6.30
जोड़	21.96	जोड़	21.96

सामाजिक अध्ययन केन्द्र, सूरत

अनुसंधान

केन्द्र के अनुसंधान अध्ययन निम्नलिखित विचारों पर आधारित रहे, अर्थात् सामाजिक स्तर-निर्धारण तथा संघर्ष, राजनीतिक आन्दोलन और विरोध अभियान, : शिक्षा तथा सामाजिक परिवर्तन; सामाजिक, धार्मिक तथा नृवंशीय अल्पसंख्यक; विवाद तथा एकता के विषय; और नागरिक सुविधाओं का वितरण; तथा निष्ठा और संबंध के प्रश्न, जिसमें सामाजिक तथा राजनीतिक आयाम पर जोर दिया गया हो। इन प्रमुख क्षेत्रों तक सीमित रहते हुए केन्द्र ने निम्नलिखित अनुसंधान परियोजानाएं पूरी कीं :

1. गुजरात की एक खानाबदोश जाति-चोढराओं की सामाजिक तथा आर्थिक स्थितियों का पुनः अध्ययन।
2. गुजरात में मध्य स्तरीत ग्रामीण परिवारों में ऊर्जा उपयोग प्रणाली।
3. गुजरात के सूरत तथा बालसाद जिलों की जनजातीय सोसायटियों में स्तर-निर्धारण का अध्ययन।
4. सूरत तथा वालसाद जिलों के जनजातीय क्षेत्रों में प्राथमिक स्कूलों की स्थिति का अध्ययन।

आठ अनुसंधान परियोजनाएं प्रगति पर हैं।

प्रकाशन

संकाय द्वारा किए गए कार्य के आधार पर निम्नलिखित लेख। समीक्षाएं तथा पुस्तकें प्रकाशित की गई :—

1. आई० पी० देसाई, "गुजरात में अनुसूचित जाति तथा जनजाति शिक्षा (लेख)"।
2. जी० शाह, "दो भारतीय राज्यों में विरोध आन्दोलन : गुजरात तथा बिहार आन्दोलनों का एक अध्ययन (पुस्तक)"।
3. जी० शाह, "क्रान्ति, सुधार या विरोध ? बिहार आन्दोलन का एक अध्यमन (लेख)"।
4. जी० शाह, "1977 के लोक सभा चुनाव (लेख)।
5. थामस पन्थम, "राजनीतिक दल तथा लोकतांत्रिक जनमत (समीक्षा)"।
6. इकबाल नारायण, के० सी० पाण्डय और मोहनलाल शर्मा, "एक भारतीय राज्य में ग्रामीण प्रबुद्ध वर्ग : राजस्थान का एक मामला अध्ययन (समीक्षा)।

सेमिनार

संकाय के सदस्यों ने अनेक सेमिनारों/सम्मेलनों/कार्यशालाओं में भाग लिया, जिनका आयोजन अन्य एजेन्सियों द्वारा किया गया था, जैसे (i) "अन्तरिक्ष अनुप्रयोग केन्द्र, अहमदाबाद में कार्यशाला; (ii) पूना विश्वविद्यालय द्वारा "भारतीय युवाओं की समस्याएं"; (iii) मिथिबाई कला कालेज और च्वहाण विज्ञान संस्थान तथा भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद पश्चिम क्षेत्रीय केन्द्र, बम्बई द्वारा "भारत में राजनीतिक दल प्रणाली की उभरती हुई पद्धतियां"; (iv) "नई दिल्ली में राष्ट्रीय आयोजना में कल्याण इकाई के रूप में परिवार।

संकाय के सदस्यों ने, कालेजों, असंधान संस्थानों तथा संगठनों में, "जनता सरकार के सामने समस्याएं," "समाज पर विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी का प्रभाव," "सरकारी तंत्र" तथा "राज्य और गांधी," "राज्य और सोसायटी" जैसे विषयों पर व्याख्यान दिए।

केन्द्र ने, प्रमुख समाज विज्ञानियों द्वारा वार्ताएं तथा व्याख्यान आयोजित किए, अर्थात (i) प्रोफेसर इरेसमस विश्विविद्यालय, नीदरलैंड के प्रोफेसर जान ब्रेमान, (2) प्रोफेसर डे लांगे, प्रमुख डच अर्थशास्त्री, "नोविड" के अध्यक्ष, (3) डा० सी० बाक्स, यूटचर्ट विश्वविद्यालय, नीदरलैंड, (4) डा० क्लास डब्ल्यू वान डेर वीन, वरिष्ठ प्राध्यापक, सामाजिक नृविज्ञान, अमस्टरडम विश्वविद्यालय।

छोटे-छोटे दलों की चर्चाएं

केन्द्र ने, छोटे-छोटे दलों की चर्चाएं प्राय: आयोजित की, जिनमें केन्द्र के सभी सदस्यों तथा बाहरी विद्वानों ने भाग लिया और परस्पर कार्य किया। इन चर्चाओं का उद्देश्य जूनियर स्टाफ का विकास करना था और उन्होंने अनुसंधान के लिए स्वयं को प्रशिक्षित करने का प्रयास किया।

पुस्तकालय

पुस्तकालय में 517 पुस्तकें और शामिल की गई जिसके फलस्वरूप पुस्तकों की कुल संख्या 4524 हो गई। केन्द्र ने 90 पत्रिकाएं खरीदी, जिनमें 27 विदेशी पत्रिकाएं शामिल थीं। अन्तर-पुस्तकालय ऋण सेवा के रूप में भी पुस्तकें उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त, पुस्तकालय, लेखों के पुनर्मुद्रण उपलब्ध कराकर, समाचार-पत्रों की कतरने रखकर तथा चुनी हुई ग्रन्थसूचियों की व्यवस्था करके, केन्द्र प्रलेखन सेवाएं भी प्रदान करता है।

प्रोफेसर एम० एस० गोरे की अध्यक्षता में भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद द्वारा नियुक्त एक निरीक्षण समिति ने केन्द्र का दौरा किया, पांचवीं योजना अवधि के दौरान इसके कार्यों का मूल्यांकन किया तथा छठी योजना के दौरान इसके विकास के लिए सिफारिशें कीं।

निधियां

केन्द्र की कुल प्राप्तियां (आवर्ती तथा अनावर्ती) 4.16 लाख रुपये की थी, जिसमें भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद से 2.42 लाख रुपये, गुजरात सरकार से एक लाख रुपये तथा अन्य स्रोतों से 0.84 लाख रुपये की राशि शामिल है। खर्च की मदों में, 1.60 लाख रुपये पुस्तकों-पत्रकाओं और उपस्कर पर, 0.39 लाख रुपये फुटकर खर्च तथा 1.74 लाख रुपये देनदारी के रूप में शामिल हैं।

केन्द्र का आय-व्यय विवरण नीचे दिया गया है :

(लाख रुपये)

आय		व्यय	
भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद	2.43	वेतन	1.60
गुजरात सरकार	1.00	पुस्तकें तथा पत्रिकाएं	0.34
परियोजनाएं/विविध	1.12	फुटकर-विविध	0.49
		उपस्कर तथा फर्नीचर	0.17
		फैलोशिप	0.01
		देनदारियों के विरुद्ध बकाया	1.74
		निधियों में कमी	0.20
जोड़	4.45	जोड़	4.55

पं० जी० बी० पन्त सामाजिक विज्ञान संस्थान, इलाहाबाद

प्रोफेसर एस० चक्रवर्ती की रिपोर्ट के परिणामस्वरूप केन्द्रीय शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय ने, उत्तर प्रदेश में विकास समस्याओं पर विशेष जोर देते हुए वहां सामाजिक तथा आर्थिक अनुसंधान को प्रोत्साहित करने तथा

प्रयुक्त अनुसंधान के संबंध में उत्तर प्रदेश सरकार के परामर्श से उसी प्रकार एक सामाजिक विज्ञान अनुसंधान संस्थान स्थापित करने का निर्णय किया जैसे कि इसने प० बंगाल, केरल तथा कर्नाटक में सामाजिक विज्ञान अनुसंधान संस्थाएं स्थापित की हैं। संस्थान स्थापित करने के पहले कदम के रूप में, उत्तर प्रदेश सरकार से नवम्बर 1976 में एक विशेष-कार्य-अधिकारी की सेवाएं, कुछ स्टाफ के साथ, प्राप्त की गई तथा भवन प्राप्त किया गया। कार्यालय ने नवम्बर 1976 से कार्य करना आरंभ कर दिया। इसके साथ-साथ, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद ने भारत सरकार की ओर से प्रोफेसर एस० सी० दूबे को संस्थान के निदेशक के रूप में चुना। प्रोफेसर एस० सी० दूबे ने 29 अक्तूबर 1977 को संस्थान में अपना कार्यभार संभाल लिया। संस्थान का संस्था-ज्ञापन पत्र तथा नियमावली को संस्थान के निदेशक द्वारा भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद के परामर्श से अन्तिम रूप दिया गया तथा उसे स्वीकृति के लिए उत्तर प्रदेश सरकार के पास भेजा गया। अपनी अवस्थापना का निर्माण करने के लिए संस्थान ने कार्यालय उपस्कर तथा अन्य आवश्यक वस्तुएं खरीदने के लिए कदम उठाए। संस्थान के उद्देश्य तथा लक्ष्य बताने वाली एक पुस्तिका प्रकाशित की गई तथा विश्वविद्यालयों और अनुसंधान संस्थाओं के पास टिप्पणियां तथा सुझाव देने के लिए भेजी गई। प्रोफेसर दूबे ने दो महीने के बाद त्याग-पत्र दे दिया और वे जम्मू विश्वविद्यालय के कुलपति बन गए।

इस बात पर सहमति हुई कि भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद तथा उत्तर प्रदेश सरकार संस्थान को, इसकी स्थापना तथा कार्यकरण के लिए आनुपातिक आधार पर आवर्ती तथा अनावर्ती दोनों प्रकार के अनुदान देगी। वर्ष 1977-78 के दौरान भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद ने दो लाख रुपये का अनुदान दिया। इसमें से संस्थान ने वेतन की अदागयी, कार्यालय फुटकर आदि पर 1.59 लाख रुपये खर्च किए।

सरदार पटेल आर्थिक तथा सामाजिक अनुसंधान संस्थान, अहमदाबाद

महत्वपूर्ण घटनाएं

(1) प्रोफेसर एम० एस० गोरे की अध्यक्षता में भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद की निरीक्षण समिति ने पांचवी योजना अवधि के दौरान संस्थान के कार्य का मूल्यांकन करने और छठी योजना के दौरान

इसके विकास के लिए सिफारिशें करने हेतु संस्थान का दौरा किया। (2) भारतीय लोक प्रशासन संस्थान गुजरात सरकार के सुझाव पर संस्थान को "जिला आयोजना सैलों के निर्माण तथा सेवा करने" संबंधी कार्यक्रम के लिए एक कड़ी-संस्थान के रूप में चुना; और (3) कैम्पस विकास के दूसरे चरण के एक भाग के रूप में छात्रावास के निर्माण से संबंधित कार्य 6.50 लाख रुपये की अनुमानित लागत से शुरू किया गया।

अनुसंधान

निम्नलिखित अनुसंधान परियोजनाएं पूरी की गई :

1. 2001 ए० डी० में गुजरात।
2. महानगरीय क्षेत्र में गन्दी तथा स्क्वेटर बस्तियां।

तीन अनुसंधान परियोजनाओं के संबंध में विश्लेषणात्मक कार्य पूरा किया गया तथा दो अनुसंधान परियोजनाओं के संबंध में आंकड़े संग्रह करने का कार्य प्रगति पर है। चार नई अनुसंधान परियोजनाएं शुरू की गई।

प्रकाशन

संस्थान की अर्ध-वार्षिक पत्रिका "अन्वेषक" का आठवां खण्ड प्रकाशित किया। "मधुकरी" संस्थान की अर्ध-वार्षिक गुजराती पत्रिका ने अपने प्रकाशन के चौथे वर्ष में प्रवेश किया। संस्थान में स्थित भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद की सार तथा समीक्षा पत्रिका : अर्थशास्त्र, ने मार्च 1979 तक सातवें खण्ड के चार अंक प्रकाशित किए।

परिचालन के लिए अनुमुद्रण श्रृंखला की योजना के अन्तर्गत अठारह अनुसंधान निबंधों को इकट्ठा किया गया तथा संस्थान की विनिबंध श्रृंखला के अन्तर्गत 'गुजरात में शैक्षिक प्रयोगों के अधिकतम उपयोग' नामक एक नया प्रकाशन जारी किया गया।

सेमिनार और सम्मेलन

संस्थान ने, आयोजना/स्कूल के सहयोग से 24-25 फरवरी 1978 को क्षेत्रीय विज्ञान एसोसिएशन के ग्यारहवें वार्षिक सेमिनार का अतिथ्य किया। संस्थान में आयोजित आवधिक आन्तरिक कार्यशाला सेमिनारों से संस्थान के अनुसंधानकर्ताओं के बीच परस्पर क्रिया का अवसर प्राप्त हुआ। स्टाफ सदस्यों ने अन्यत्र आयोजित कुछ व्यावसायिक सम्मेलनों और सेमिनारों में भी भाग लिया, जैसे (1) भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा बम्बई में आयोजित

"मुद्रा संबंधी सिद्धान्त और साधम", और (2) ससेक्स में इन्द्रा-फर्म व्यापार संबंधी अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार।

स्टाफ के सदस्यों ने जिन व्यावसायिक सम्मेलनों में भाग लिया उनमें निम्नलिखित सम्मिलित हैं (1) दोहाद में नवां गुजरात आर्थिक एसोसिएशन सम्मेलन, (2) शिलांग में ग्यारहवां आई० ए० आर० एन० आई० डब्ल्यू० सम्मेलन; (3) मद्रास में भारतीय आर्थिक सम्मेलन; और (4) तिरुपति में अखिल भारतीय श्रम अर्थशास्त्र सम्मेलन।

इन सभी सम्मेलनों में स्टाफ सदस्यों ने निबंध प्रस्तुत किए तथा विचार-विमर्शों में सक्रिय रूप से भाग लिया।

डाक्टोरल फैलोशिप सहित प्रशिक्षण/शिक्षण कार्यक्रम

संस्थान ने, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद के तत्वावधान में अनुसंधान रीतिविज्ञान में छः सप्ताह का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया, जिसमें बुनियादी गणिती तकनीकों, अनुसंधान रीतिविज्ञान तथा आर्थिक विश्लेषण के प्रति दृष्टिकोणों पर विशेष बल दिया गया तथा भारत सरकार के कार्मिक तथा प्रशासनिक सुधार विभाग द्वारा प्रायोजित "लघु आयोजना की पृष्ठभूमि के साथ राज्य आयोजना" पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

संस्थान ने, आयोजना में दो वर्षीय डिप्लोमा कार्यक्रम के लिए क्षेत्रीय अर्थशास्त्र, सार्वजनिक वित्त, परिमाणात्मक विधियों, माडल निर्माण तथा संगणक कार्यक्रम में बुनियादी पाठ्यक्रम प्रदान करके आयोजना स्कूल, अहमदाबाद के साथ सहयोग करना जारी रखा।

पी० एच० डी० कार्य

पी० एच० डी० डिग्री के लिए 31 मार्च 1978 को संस्थान के माध्यम से गुजरात विश्वविद्यालय के साथ 42 छात्र रजिस्टर किए गए। इनमें से सात छात्रों को या तो विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद से अथवा संस्थान से फैलोशिप प्राप्त हो रही थी।

इस अवधि के दौरान, अर्थशास्त्री श्री एस० एस० मेहता को, "कुछ बड़े भारतीय उद्योगों में उत्पादकता, उत्पादन कार्य तथा तकनीती परिवर्तन पर उनके निबंध के लिए पी० एच० डी० डिग्री प्रदान की गई तथा प्रोफेसर आर० एल० सिंघवी को, "गुजरात के औद्योगिक विकास में औद्योगिक आस्तियों के योगादन" पर उनके विनिबंध के लिए डिग्री प्रदान की गई।

अन्य महत्वपूर्ण कार्यकलाप

अध्ययन अनुदान योजना : संस्थान, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् की अध्ययन अनुदान योजना के लिए एक केन्द्र के रूप में बना रहा; इस योजना के अधीन पी० एच० डी० के छात्र अपना डाक्टोरल अनुसंधान कार्य करने के लिए संस्थान का दौरा करते हैं। योजना के संचालन के लिए संस्थान द्वारा वर्ष के दौरान 8027.26 रु० के अनुदान का उपयोग किया गया।

आंकड़ा बैंक : संस्थान, अपने आंकड़ा बैंक में, उसके द्वारा शुरू की गई परियोजनाओं से आंकड़े प्राप्त करता रहा। अब तक 14 परियोजनाओं के संबंध में आंकड़ों को कार्डों पर रखा गया है और इनका उपयोग और आगे किसी भी अनुसंधान तथा राष्ट्रीय लेखा सांख्यि की संबंधी विस्तृत अलग-थलग आंकड़ों (1950-51 से 1972-73 तक) के लिए किया जा सकता है। इसमें, उत्पादन, रोजगार, निवेश तथा उद्योग के विभिन्न स्वरूपों के अन्य सम्बद्ध पहलुओं को मिलाकर मशीन यंत्र सेंसस आंकड़े। (मेगनेटिक टेपों पर) शामिल है।

परामर्श सेवाएं : (2) 'अंटाड' कार्य के लिए डा० के० के० सुब्रमण्यन जेनेवा गए, (2) डा० आर० राधाकृष्णन को अन्तर्राष्ट्रीय प्रयुक्त रीति विश्लेषण संस्थान, आस्ट्रिया के खाद्य तथा कृषि कार्यक्रम संबंधी विशेषज्ञों के एक दल में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया गया, और (3) डा० एस० एस० मेहता ने, लिबिया के लिए क्षेत्रीय औद्योगिक आयोजन अध्ययन तैयार करने के लिए राष्ट्रीय औद्योगिक विकास निगम के तत्वावधान में एक विशेषज्ञ के रूप में कार्य किया।

निधियां : संस्थान की आय और व्यय का ब्योरा इस प्रकार है :

(लाख रुपये)

प्राप्तियां		**खर्च**	
भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्	1.90	स्थापना	7.56
		फर्नीचर, उपस्कर	0.22
गुजरात सरकार	7.16	तथा पुस्तकें	
		फुटकर	1.70

अन्य साधन	0.28	सेमिनार, पत्रिकाएं लेखन सामग्री इत्यादि	
परियोजनाएं	5.41	परियोजना खर्च	3.42
		बकाया	1.85
जोड़ :	14.75		14.75

उसके अतिरिक्त, केन्द्र को, संशोधित वेतनमानों तथा छात्रावास के निर्माण संबंधी खर्च को पूरा करने लिए, 2.17 लाख रुपये का अनावर्ती अनुदान दिया गया।

मद्रास विकास अध्ययन संस्थान, मद्रास

संस्थान ने 1971 से एक प्राइवेट अनुसंधान केन्द्र के रूप में कार्य किया तथा इसे भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् द्वारा नियुक्ति एक निरीक्षण समिति की सिफारिश पर, वर्ष 1975-76 में सामाजिक विज्ञानों में अनुसंधान संस्थानों को सहायक-अनुदान की केन्द्र प्रायोजित योजना में शामिल किया गया। भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् तथा तमिलनाडु सरकार ने इस संस्थान को एक राष्ट्रीय संस्थान के रूप में विकसित करने तथा आनुपातिक आधार पर आर्थिक सहायता देने का निर्णय किया। न्यासी तथा संस्थापक-निदेशक डा० एम० एस० आदिशेषय्या ने संस्थान को भूमि तथा भवन, पुस्तकालय फर्नीचर तथा उपस्कर और 3.5 लाख रुपये नगद तथा अपने जीवनकाल के दौरान 60,000 रु० का वार्षिक आवर्ती योगदान दिया। संस्थान के न्यास करार को संशोधित किया ताकि इसे सामाजिक विज्ञानों में एक राष्ट्रीय संस्थान के रूप में कार्य करने के योग्य बनाया जा सके तथा इसके शासी निकाय भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्, तमिलनाडु सरकार, तथा दक्षिणी विश्वविद्यालयों प्रतिनिधियों को प्रतिनिधित्व दिया जा सके। नामजद नए निदेशक प्रो० सी० टी० कुरियन द्वारा कार्य भार संभालने तक प्रोफेसर सी० टी० आदिशेषय्या निदेशक के रूप में कार्य करते रहे।

संस्थान ने वर्ष 1977-78 के दौरान अपने कार्यकलाप आयोजित किए जिनका उद्देश्य इसके कामकाज के पहले छः वर्षों के दौरान शेष कार्यों को

पूरा करना तथा इसे एक राष्ट्रीय संस्थान के रूप में पूर्णत: विकसित करने के लिए तैयारी करना शामिल था। वर्ष 1977-78 के दौरान दो अध्ययन, पहला सेलम जिले में जनजातीय लोगों के विकास में सरकार तथा स्वेच्छिक एजेन्सियों के योगदान" पर, तथा दूसरा "दक्षिण आर्काट जिले के कलराया पर्वतों में जनजातीय कल्याण में सरकार तथा स्वैच्छिक एजेन्सियों के योगदान" पर था, पूरे किए गए। दो नए अध्ययन, अर्थात् "कृषि श्रमिकों के लिए अनौपचारिक शिक्षा" तथा "ग्राम अध्ययन पर एक अन्तर-विश्वविद्यालय परियोजना", शुरू किए गए।

संस्थान ने पांच प्रकाशन प्रकाशित किए, अर्थात् (1) सेलम जिले में जनजातीय कल्याण, (2) तमिलनाडु में बेरोजगार आई० टी० आई० शिल्पकारों का स्तर, (3) कलराया पर्वतों (दक्षिण आर्काट जिले) में जनजातीय कल्याण (4) तमिलनाडु में कड़ी-सड़कें, (5) तमिलनाडु के लिए शिक्षा परिप्रेक्ष्य।

संस्थान ने चार अध्ययनों के संबंध में सातवीं सामाजिक विज्ञान अन्तर-विषयक कार्यशाला आयोजित की तथा दक्षिणी विश्वविद्यालयों के सामाजिक विज्ञान विभागाध्यक्षों की सातवीं वार्षिक साधारण बैठक आयोजित की। इसके अतिरिक्त, संस्थान ने छठी योजना परिप्रेक्ष्यों तथा तमिलनाडु में शिक्षा पर माडलों का पुनरीक्षण करने के लिए सी0 आई० आर० आई० के साथ एक विशेष सेमिनार आयोजित किया गया। मेनचेस्टर विश्वविद्यालय, यू०के० प्रोफेसर टी० शनीन ने, 'रूस में कृषक वर्ग' पर एक चर्चा आयोजित की।

क्रय, आदान-प्रदान अथवा उपहारों के जरिए पुस्तकालय में 673 पुस्तकें शामिल की गई। अनुसंधान की मदद करने के लिए इसकी प्रलेखन सेवाओं का विकास किया गया।

डा० के० ए० जकारिया, एक वर्ष के लिए एक करार के आधार पर संस्थान में शामिल हो गए तथा प्रोफेसर एस० के० इकाम्बरम को सांख्यिकी परामर्शदाता के रूप में नियुक्ति किया गया।

मद्रास विश्वविद्यालय द्वारा एम० फिल तथा पी० एच० डी० के लिए अनुसंधान प्रयोजनों के लिए संस्थान को मान्यता दिए जाने पर, वर्ष के दौरान संस्थान के अनुसंधान मार्गदर्शन कार्यक्रम का विकास करने की दिशा में शुरूआत की गई।

वर्ष 1977-78 के दौरान संस्थान की आवर्ती आय और व्यय का ब्योरा इस प्रकार हैं :

(लाख रुपये)

आय		व्यय	
भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद	0.47	वेतन	0.57
तमिलनाडु सरकार	0.47	सेमिनार तथा पत्रिकाएं	0.23
दान से आय तथा विविध प्राप्तियां	0.66	परियोजनाएं	0.22
		मुद्रण, लेखन सामग्री तथा सामान्य खर्च आदि	0.49
		बकाया	0.03
जोड़ :	1.54		1.54

इसके अतिरिक्त, पूँजीगत खर्च के लिए तमिलनाडु सरकार द्वारा आनुपातिक धन के साथ भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद द्वारा 1.25 लाख रुपये का अनावर्ती अनुदान दिया गया।

भारतीय शिक्षा संस्थान, पूना

वर्ष की महत्वपूर्ण घटनाएं : (i) पूना विश्वविद्यालय ने, शिक्षा संस्थान को शिक्षा में अन्तर-विषयक अनुसंधान के लिए एक स्नातकोत्तर संस्था के रूप में मान्यता प्रदान की; (ii) संस्थान की त्रैमासिक पत्रिका 'शिक्षण अनी समाज' का प्रकाशन आरंभ हो गया, (iii) संस्थान के निदेशक ने (क) शिक्षा के जरिए राजनीतिक समाजिकरण तथा (ख) प्रौढ़ शिक्षा की समस्याओं का अध्ययन करने के लिए सोवियत रूस का दौरा किया; यूनेस्को क्षेत्रीय कार्यालय बैंगकांक द्वारा आयोजित साक्षरता विशेषज्ञों की क्षेत्रीय बैठक की अध्यक्षता की; और शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा नियुक्त प्रौढ़ शिक्षा संबंधी कार्य दल तथा स्कूल शिक्षा के विषय में समिति (ईश्वरभाई पटेल समिति) में कार्य किया; (iv) प्रारम्भिक शिक्षा को व्यापक बनाने के लिए एक प्रयोगात्मक कार्यक्रम शुरू करने के लिए 'यूनिसेफ' से सहायता प्राप्त हुई; (v) संस्थान के पुस्तकालय के तुलनात्मक शिक्षा खण्ड का विकास करने के लिए ब्रिटिश हाई कमीशन ने लगभग 2,100

पो० की कीमत की पुस्तकें और पत्रिकाएं भेंट की ।

अनुसंधान : सन् 1976-77 के दौरान शुरू की गई निम्नलिखित अनुसंधान परियोजनाओं पर कार्य जारी रहा :

(1) शैक्षिक परियोजनाएं
(2) समाजवादी देशों में शिक्षा, बच्चों में राजनीतिक समाजीकरण
(3) भारत में शिक्षा (1966-76)
(4) भारत से शैक्षिक सांख्यिकी (1882-1975) और
(5) महाराष्ट्र में शैक्षिक वित्त (1966-77)

आलोच्य वर्ष के दौरान निम्नलिखित नई परियोजनाएं शुरू की गई :

(1) महिलाएं तथा तलाक : सामाजिक तथा शैक्षिक निहितार्थों पर एक अध्ययन ।
(2) माध्यमिक शिक्षा की समस्याएं, विशेष रूप से :
  (क) एस० एस० सी० परीक्षा के नैदानिक निहितार्थ, और
  (ख) 10+2 पद्धति का कार्यान्वयन ।
(3) समानता, सामाजिक न्याय तथा धर्मनिरपेक्षता की दृष्टि से प्राथमिक स्कूली पाठ्यपुस्तकों का अध्ययन ।
(4) गन्दी बस्तियों । ग्रामीण क्षेत्रों में प्राथमिक शिक्षा को व्यापक बनाना ।

प्रकाशन

संस्थान की त्रैमासिक पत्रिका (मराठी) 'शिक्षण अनी समाज' के दो अंक प्रकाशित किए गए । प्रोफेसर जे० पी० नायक द्वारा **अनौपचारिक शिक्षा के परिप्रेक्ष्य** का मराठी अनुवाद छपने के लिए भेजा गया ।

सेमिनार, सम्मेलन

संस्थान ने, 'भारतीय संदर्भ में शिक्षा के दर्शन' पर आचार्य एस० जे० भगवत सेमिनार आयोजित किया तथा निम्नलिखित व्याख्यान आयोजित किए : (i) "शिक्षा तथा राजनीति", भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के अध्यक्ष प्रोफेसर रजनी कोठारी द्वारा ; (ii) "शिक्षा में कुछ प्रश्न", टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान, बम्बई के निदेशक प्रोफेसर एम० एस० गोरे द्वारा; (iii) "राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम", शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के संयुक्त सचिव श्री अनिल बोर्दिया द्वारा, और (iv) "स्कूल रहित सोसायटी", डा० ईवान इलिच, भ्रमणकारी अध्येता ।

शिक्षण/परीक्षण

संस्थान ने, पूना तथा बम्बई विश्वविद्यालयों को प्रस्तुत करने के लिए शिक्षा के प्रति अन्तर-विषयक दृष्टिकोण के साथ एम० फिल० पाठ्यक्रम शुरू करने के लिए एक योजना तैयार की है । कुछ छात्र शिक्षा में पी० एच० डी० के लिए कार्य कर रहे हैं ।

संस्थान, स्थानीय अनुसंधान संगठनों, राज्य के सभी विश्वविद्यालयों तथा कुछ बाहर के विश्वविद्यालय के साथ भी सम्पर्क स्थापित करने में समर्थ हो सका । अन्तर्राष्ट्रीय शैक्षिक आयोजना संस्थान, पैरिस; अन्तर्राष्ट्रीय प्रौढ़ साक्षरता विधियां संस्थान, तेहरान; विस्कोसिन विश्वविद्यालय, अमरीका, अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र, मिशिगन राज्य विश्वविद्यालय; अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा ब्यूरो, जेदेवा तथा यूनेस्को का एशियाई क्षेत्र कार्यालय बैंगकाक जैसे अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ सम्पर्क स्थापित किए जा रहे हैं ।

महाराष्ट्र राज्य के लिए अनौपचारिक प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के लिए एक संसाधन केन्द्र के रूप में कार्य करने के वास्ते, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, संस्थान को आर्थिक सहातता देती है । इस क्षेत्र में अनुसंधान सम्भावना का विकास करने के लिए, अनौपचारिक शिक्षा विभाग ने, प्रौढ़ शिक्षा में एक क्षेत्रीय कार्यक्रम शुरू किया है । संस्थान के अनौपचारिक शिक्षा संयुक्त तत्वावधान में प्रौढ़ शिक्षा कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण पर एक अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार (यूनेस्को तथा शिक्षा मंत्रालय की आर्थिक मदद से) आयोजित किया गया । प्रोटो-टाइप शिक्षण । अध्ययन सामग्री तैयार करके; शिक्षण/प्रशिक्षण की विधियों का विकास करके और प्रौढ़ शिक्षा कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण देकर, केन्द्र, महाराष्ट्र सरकार को अपनी सेवाएं प्रदान करता है । अब इसे देश के अन्य राज्यों में संसाधन केन्द्रों के स्टाफ को प्रशिक्षण देने के लिए एक राष्ट्रीय केन्द्र के रूप में स्वीकार किया जाता है ।

केन्द्र ने प्रौढ़ शिक्षा तथा अनौपचारिक शिक्षा के संबंध में अनेक सूचनात्मक प्रकाशन प्रकाशित किए हैं तथा प्रौढ़ शिक्षा । अनौपचारिक शिक्षा के संबंध में सेमिनार और सम्मेलन आयोजित किए हैं ।

संस्थान की आय तथा व्यय का ब्यौरा इस प्रकार है :

(लाख रुपये)

आय		व्यय	
भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद	1.95	अनावर्ती	0.50

महाराष्ट्र सरकार	0·17	आवर्ती	1·00
संस्थान का स्वयं का योगदान	1·88	भवन, जीप आदि पर देय खर्च बैंक में	2.50
जोड़ :	4·00		4·00

गिरि विकास अध्ययन संस्थान, लखनऊ

संस्थान को, सन् 1976-77 में सामाजिक विज्ञानों में अनुसंधान संस्थाओं को सहायक अनुदानों की योजना के अधीन लाया गया, जबकि भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, संस्थान को, उत्तर प्रदेश सरकार से आनुपातिक आधार पर अनुदानों के साथ, आवर्ती तथा अनावर्ती व्यय को पूरा करने के लिए नियमित अनुदान देने के लिए सहमत हो गई। संस्थान के प्रभावी कामकाज की दिशा में पहले कदम के रूप में इसके भवन को किराए पर लिया गया, आवश्यक कार्यालय फर्नीचर तथा उपस्कर प्राप्त किया गया तथा एक संदर्भ पुस्तकालय का निर्माण करने की प्रक्रिया आरंभ की गई। वर्ष के अन्त तक संस्थान आवश्यक फर्नीचर तथा टाइपराइटर तथा डुप्लीकेटिंग मशीन जैसे कार्यालय उपस्कर के अलावा, एक माइक्रो कम्प्यूटर कुछ गणन मशीनें तथा विभिन्न सामाजिक विज्ञान विषयों पर लगभग 3,000 पुस्तकें तथा पत्रिकाएं खरीदी तथा लगभग 50 भारतीय और लगभग एक दर्जन विदेशी पत्रिकाएं प्राप्त करना शुरू कर दिया।

डा० टी० एस० पपोला ने संस्थान के निदेशक के रूप में कार्यभार संभाल लिया। संस्थान ने, वरिष्ठ फैलो, फैलो तथा सहायक स्टाफ और परियोजना स्टाफ की नियुक्ति करके अपने अनुसंधान संकाय का निर्माण किया भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद की निरीक्षण समिति के सुझावों को ध्यान रखते हुए, संस्थान का नाम 'गिरि आर्थिक विकास तथा औद्योगिक संबंध संस्थान' के स्थान पर 'गिरि विकास अध्ययन संस्थान' रखा गया ताकि इसे और अधिक सार्थक बनाया जा सके। संस्थान के नियमों में उपयुक्त संशोधन किया गया ताकि इसका सुचारू कामकाज सुनिश्चित किया जा सके और इसके शासी निकाय में भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद और राज्य सरकार को प्रतिनिधित्व दिया जा सके।

अनुसंधान

अपनी अल्पावधि के दौरान संस्थान ने, सर्वप्रथम "शहरी अर्थ-व्यवस्था में अनौपचारिक क्षेत्र पर और फिर भारत में शासक दलों की प्रकृति और कामकाज तथा संघीय नीति कार्यकरण" पर अनुसंधान परियोजनाएं पूरी की तथा सत्रह अनुसंधान अध्ययन शुरू किए और उनमें से कुछ के विषय में काफी प्रगति की ।

संस्थान ने "कृषि विकास की क्षेत्रीय पद्धति" पर एक सेमिनार आयोजित किया, जिसका प्रायोजना योजना द्वारा किया गया था । इसने, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद द्वारा प्रायोजित "भारतीय युवाओं" पर भी एक सेमिनार आयोजित किया ।

अधिकांश अनुसंधान सामग्री, अर्थात् एक अनुसंधान रिपोर्ट, दो सामयिक निबंध, और सत्रह तकनीक निबंध, मिनिओग्राफ कराकर परिचालन के लिए उपलब्ध कर दिए गए हैं और पुस्तकों तथा पत्रिकाओं के रूप में प्रकाशन के भी विभिन्न स्तरों पर है ।

संस्थान को, कुमायूं विश्वविद्यालय, नैनीताल द्वारा अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र में पी० एच० डी० तथा डी० लिट० पाठ्यक्रमों के आयोजन के लिए एक केन्द्र रूप में स्वीकार किया गया है ।

संस्थान को वर्ष के दौरान भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद से सहायक-अनुदान के रूप में निम्नलिखित अनुदान प्राप्त हुए :—

(लाख रुपये)

आय		व्यय	
भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद	2.00	वेतन	2.00
अनावर्ती	0.60	(भत्ते,फुटकर तथा स्थापना आदि)	
		अनावर्ती (फर्नीचर, उपस्कर, पुस्तकें, पत्रिकाएं आदि)	0.60
जोड़	2.60		2.60

नीति अनुसंधान केन्द्र, नई दिल्ली

नीति अनुसंधान केन्द्र को, सामाजिक विज्ञानों में अनुसंधान के लिए

सहायक-अनुदान योजना के भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद के कार्यक्रम में 1977-78 में इस आश्वासन के साथ शामिल किया गया कि इसकी भवन परियोजना के लिए पांच लाख रुपये का अनावर्ती अनुदान दिया जाएगा। उसके बाद से केन्द्र ने उसी आधार पर आवर्ती अनुदान का अनुरोध किया है जिस आधार पर भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद द्वारा अन्य संस्थाओं को सहायता दी जाती है। इसपर विचार किया जा रहा है।

केन्द्र की स्थापना का उद्देश्य, महत्वपूर्ण क्षेत्रों में नीति विषयक प्रश्नों का अध्ययन करना तथा नीति निर्माण के संबंध में ज्ञान का एक निकाय विकसित करने में मदद देना था। केन्द्र की इससे भी बड़ी भूमिका, अर्थात् भारतीय समाज के वर्तमान तथा भावी विकास पर निरन्तर राष्ट्रीय चर्चा के स्पष्टीकरण की दिशा में योगदान करने की परिकल्पना की गई थी। इस उद्देश्य के अनुसरण में, केन्द्र राष्ट्रीय नीतियों पर बल देता है; इसका परिप्रेक्ष्य अन्तर-विषयक है; इसका गठन, नीति पालनकर्ताओं के सहयोग से कार्य कर रहे व्यावसायिक अनुसंधान-कर्ताओं के साथ किया गया है; यह वैकल्पिक नीति विकल्पों के विकास की दिशा में उन्मुख है। नीति अनुसंधान केन्द्र के कार्यकलापों में प्रमुख बल राष्ट्र के सामने प्रस्तुत बुनियादी नीति प्रश्नों की जांच करने तथा विकल्पों के विशिष्ट मार्ग खोजने पर दिया जाता है। इस दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए केन्द्र, जनसंख्या, पोषण, निदेशक, औद्योगकरण बैंक व्यवस्था, निर्यात, आवास, ग्रामीण विकास, आय तथा कराधन नीति, तेल तथा ऊर्जा, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी, सामाजिक विकास, प्रशासनिक तथा भावी दिशाओं से संबंधित नीति मामलों पर अध्ययन कर रहा है।

केन्द्र ने निम्नलिखित परियोजनाओं पर अनुसंधान कार्य किया :

1. परिवार नियोजन में प्रेरणाएं तथा बाधाएं।
2. जनसंख्या नीति : 2000 ए० डी०।
3. सरकारी पद्धतियां तथा विकास।
4. विकास में अफसरशाही निपुणताएं तथा योग्यताएं।

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान पषिद की द्वितीय समीक्षा समिति के कार्य के साथ केन्द्र ने सक्रिय रूप सहयोग दिया।

नीति निर्माण में रूचि को बढ़ावा देने के लिए केन्द्र ने आलोच्य वर्ष के दौरान, अन्य संस्थाओं के सहोग से प्रमुख व्यक्तियों द्वारा अनेक व्याख्यानों का आयोजन किया।

केन्द्र को, सदस्यता शुल्क, परीक्षण तथा परीक्षा शुल्कों और परियोजा

अनुदानों के रूप में 5.86 लाख रुपये प्राप्त हुए । 3.98 लाख रुपये के इसके खर्च में, वेतन, किराये, सम्मेलनों । कार्यक्रमों, प्रकाशनों, पुस्तकालय पुस्तकों तथा पत्रिकाओं, अनुसंधान परियोजनाओं इत्यादि का खर्च शामिल है । इसके अतिरिक्त केन्द्र को भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद से 1.83 लाख रुपये का अनावर्ती अनुदान प्राप्त हुआ ।

वर्ष 1977-78 के दौरान अनुसंधान संस्थानों को की गई अन्तिम अदायगियां

क्रम सं०	संस्थान/केन्द्र	आवंटन		जोड़	जारी अनुदान		
		आ० (1)	अना० (2)	(3)	आ० (4)	अना० (5)	जोड़ (6)
1.	सामाजिक तथा आर्थिक परिवर्तन संस्थान, बंगलौर	7.50	—	7.30	7.50	—	7.50
2.	विकास अध्ययन केन्द्र, त्रिवेन्द्रम	6.00	—	6.00	6.00	—	6.00
3.	सामाजिक विज्ञान अध्ययन केन्द्र, कलकत्ता	5.00	—	5.00	5.32	—	5.32
4.	गांधी अध्ययन संस्थान, वाराणसी	3.50	1.00	4.50	5.71	0.90	6.61
5.	ए० एन० एस० सामाजिक अध्ययन संस्थान, हैदराबाद	3.00	—	3.00	3.00	—	3.00
6.	सार्वजनिक उद्यम संस्थान, हैदराबाद	0.75	—	0.75	0.75	—	0.75
7.	सामाजिक अध्ययन केन्द्र, सूरत	1.00	1.50	2.50	1.00	1.43	2.43
8.	सरदार पटेल आर्थिक तथा सामाजिक अनुसंधान संस्थान, अहमदाबाद	2.00	3.00	5.00	1.90	2.17	4.07
9.	जी० बी० पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान, इलाहाबाद	2.00	—	2.00	2.00	—	2.00

10. मद्रास विकास अध्ययन संस्थान, मद्रास	0.50	1.25	1.75	0.41	1.25	1.72
11. भारतीय शिक्षा संस्थान, पूना	0.50	1.50	2.00	0.50	1.45	1.95
12. गिरि विकास अध्ययन संस्थान, लखनऊ	2.00	0.50	2.50	2.00	0.60	2.60
13. आर्थिक विकास संस्थान, दिल्ली	6.00	—	6.00	5.72	—	5.72
14. विकासशील सोसायटी अध्ययन केन्द्र, दिल्ली	4.00	4.75	8.75	4.00	4.50	8.50
15. नीति अनुसंधान केन्द्र, नई दिल्ली	—	1.25	1.25	—	1.83	1.83
16. सामाजिक विकास परिषद, हैदराबाद	1.50	—	1.50	—	—	—
	45.25	14.75	60.00	45.87	14.13	60.00

परिशिष्ट-XIII

5 जनवरी, 1979

लेखा-परीक्षक की रिपोर्ट

हमने, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली के 31 मार्च, 1978 को समाप्त होने वाले वर्ष की प्राप्तियों और अदायगियों के संलग्न लेखे और 31 मार्च, 1978 को इसकी परिसम्पत्तियों और देनदारियों के विवरण की जांच की है। वे सभी अपेक्षित सूचना और स्पष्टीकरण हमें मिले हैं जो कि हमरी यथा-सामर्थ्य जानकारी और विश्वास के अनुसार आवश्यक थे। आज की तिथि में परिषद के अध्यक्ष को दी गई हमारी निरीक्षण रिपोर्ट को ध्यान में रखते हुए यथा-सामर्थ्य प्राप्त जानकारी तथा हमें दिए गए स्पष्टीकरणों और परिषद के बही-खातों में दिखाई गई स्थिति के आधार पर हमारी राय हैं कि प्राप्तियों और अदायगियों का लेखा सही और इस ढंग से तैयार किया गया है जिससे कि परिषद के लेखों की सही-सही और समुचित स्थिति प्रकट होती है।

मोहर

हस्ताक्षर
चार्टर्ड लेखाकार

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद

31 मार्च 1978 को समाप्त होने वाले वर्ष की प्राप्तियों और अदायगियों का लेखा

प्राप्तियां		अदायगियां	
लेखा-शीर्ष	राशि	लेखा-शीर्ष	राशि
1	2	1	2
1-4-77 को बकाया		**क—प्रशासन**	
(क) मुख्य रोकड़ बही 13 (स्टेट बैंक आफ इंडिया, नई दिल्ली के पास बकाया सहित)		स्टाफ का वेतन और भत्ते	3,38,059.00
		स्टाफ का यात्रा भत्ता	27,990.00
		कार्यालय भवन का किराया, पानी तथा बिजली का प्रभार (कुल)	1,37,192.00
		अन्य प्रभार	3,49,295.00
(ख) डालर रोकड़ बही, स्टेट बैंक आफ इंडिया, नई दिल्ली में रुपयों में रखा गया लेखा	4,86,131.00	आतिथ्य	21,576.00
		छुट्टी तथा पेंशन अंशदान	13,036.00
		परिषद तथा इसके समिति सदस्यों को यात्रा भत्ता	3,36,641.00
		दूसरी पुनरीक्षण समिति पर व्यय	55,000.00
राष्ट्रीय क्षेत्रीय महत्व के समाज-विज्ञान में अनु-संधान कार्य कर		कुल 'क'	12,78,789.00

1	2	1	2
रही चुनी हुई संस्थाओं को भुगतान के लिए भारत सरकार से अनुदान	60,00,000.00	**ख—अनुसंधान अनुदान**	
भारत सरकार से अनुदान		स्टाफ का वेतन और भत्ते	5,60,896.00
(i) योजनेतर	34,48,000.00	स्टाफ का यात्रा भत्ता	24,980.90
(ii) योजनागत	64,99,987.00	अन्य प्रभार	12.00
भारत में समाज-विज्ञानों की प्रौन्नति के लिए फोर्ड फाउंडेशन से पूरक अनुनान	11,91,849.00	परामर्शदाताओं को मानदेय	28,325.00
निम्नलिखितों से प्राप्तियां		अनुसंधान परियोजनाओं के लिए सहायक-अनुदान	28,52,652.00
(क) समूल्य प्रकाशन	31,841.00	प्रायोजित अनुसंधान के लिए सहायक अनुदान	32 434.00
(ख) प्रकाशकों से रायल्टी	1.27,188.00	विशेष कार्यक्रमों के लिए सहायक अनुदान :	
(ग) समूल्य प्रकाशन— यूनियन केटेलाग	21.643.00	(क) सामाजिक सूचक परियोजना	43.746.00
(घ) सरकारी प्रकाशनों की बिक्री	10,822.00	(ख) महिलाओं का कार्यक्रम	2,18,124.00
(ड) विविध प्राप्तियां	2,31,254.00	अनुसंधान सर्वेक्षण	22,495.00
(पिछले वर्षों के दौरान दिए गए सहायक-अनुदान में से खर्च न की गई शेष राशि की		अंशदान	735.00
		कुल 'ख'	37,84,399.00
		ग—अनुसंधान फैलोशिप	
		(i) राष्ट्रीय फैलोशिप	69,675.00

1	2	1	2
वापसी तथा भारतीय शिक्षा संस्थान, पुणे के खाते में यूनेस्कों से प्राप्तियों को मिलाकर)		(ii) भा० सा० वि० अनु० परि० फैलोशिप	4,41,189.00
(च) फोथो प्रतियों से प्राप्तियां	3,316.00	(iii) डाक्टरेट फैलोशिप	8,38,412.00
(छ) पश्चिमी क्षेत्रीय केन्द्र, बम्बई के लिए महाराष्ट्र सरकार से समनुरूपी अनुदान	2,00,000.00	(iv) प्रासंगिक अनुदान	2,37,032.00
(ज) भवन की बिक्री से प्राप्त राशि	1,00,000.00	(v) उत्तर डाक्टरेट फैलोशिप	49,107.00
(झ) बिक्रम साराभाई ट्रस्ट फाउन्डेशन	12,000.00	जोड़ 'ग'	16,35,415.00
(ञ) राष्ट्रीय आयोजन में कल्याण की एक इकाई के रूप में परिवार के संबंध में क्षेत्रीय एशियाई सम्मेलन के खाते में प्राप्तियां	1,70,478.00	**घ—प्रशिक्षण**	
	1,85,34,522.00	प्रशिक्षण कार्यक्रम :	
		(i) सहायक-अनुदान	2,45,415.00
		(ii) प्रत्यक्ष व्यय	14,879.00
		जोड़ 'घ'	2,60,295.00
		ड—अध्ययन अनुदान	
		डाक्टरेट के छात्रों/पुस्तकालयों/प्रलेखन केन्द्रों में जाने के लिए विद्वानों को वित्तीय सहायता :	
		(क) सहायक-अनुदान	5,000.00
		(ख) प्रत्यक्ष व्यय	59,902,00
		जोड़ 'ड'	64,902.00

1		2	1	2
विभागीय वसूली			**च—क्षेत्रीय केन्द्र**	
के० स० स्व० से० वाहन की पेशगी	288.00		क्षेत्रीय केन्द्र, बम्बई को सहायक-अनुदान	2,02,460.00
	5,230.00		क्षेत्रीय केन्द्र, हैदराबाद को सहायक-अनुदान	1,50,685.00
त्योहार पेशगी	2,975.00	8,493.00	उत्तर-पूर्व क्षेत्रीय केन्द्र, शिलांग को सहायक-अनुदान	48,000.00
		1,85,43,015.00	उत्तर-पश्चिम क्षेत्रीय केन्द्र, चंडीगढ़ को सहायक-अनुदान	94,993.00
			उत्तर क्षेत्रीय केन्द्र, नई दिल्ली को सहायक-अनुदान	7,00,000.00
			जोड़ 'च'	11,96,138.00
			छ—प्रलेखन और ग्रन्थ	
			सूची संबंधी सेवाएं : राष्ट्रीय प्रलेखन केन्द्र तथा अनुसंधान सूचना	
			स्टाफ का वेतन तथा भत्ते	2,87,354.00
			स्टाफ का यात्रा भत्ता	5,618.00
			पुस्तकों, पत्रिकाओं आदि का क्रय	7,385.00
			अन्य प्रभार	62,274.00
			छुट्टी तथा पेंशन अंशदान	2,565.00

1	2	1	2
पिछले पृष्ठ से	1,85,43,015.00	पुरानी तिथि से लागू होने वाली अनुक्रमणिका परियोजना	1,49,169.00
		(स्टाफ का वेतन और भत्ते)	3,09,001.00
		संचयी अनुक्रमणिका सहित ग्रन्थ-सूचि और प्रलेखन संबंधी परियोजनाओं के लिए अनुदान (इसमें प्रकाशन अनुदान सम्मिलित नहीं हैं)	
		जोड़ 'छ'	8,23,366.00
		ज—आंकड़ा अभिलेखागार	
		सा० सा० वि० अनु० परि० आधारित आंकड़ा अभिलेखागार	
		स्टाफ का वेतन और भत्ते	1,16,902.00
		स्टाफ का यात्रा भत्ता	213.00
		अन्य प्रभार	27,503.00
		जोड़ 'ज'	1,44,618.00
		झ—प्रकाशन	
		परिषद की प्रकाशन शाखा	
		स्टाफ का वेतन तथा भत्ते	1,35,548.00

1	2	1	2
पिछले पृष्ठ से	1,85,43,015.00	स्टाफ का यात्रा भत्ता	131.00
		मानदेय (पी० एच० डी० थीसीस) सम्पादन और परीक्षण	27,006.00
		अन्य प्रभार (कागज की लागत सहित)	1,71,781.00
		समूल्य प्रकाशन	
		पत्रिकाएं	78,190.00
		अन्य समूल्य प्रकाशन	2,98,679.00
		मूल्य रहित प्रकाशन	
		अन्य मूल्य रहित प्रकाशन :	
		भा० सा० वि० अनु० परि० द्वारा प्रायोजित	26,458.00
		अनुसंधान रिपोर्टों/ डाक्टरेट थीसिसों के प्रकाशन के लिए सहायक-अनुदान :	
		(क) सहायक-अनुदान	5,000.00
		(ख) प्रत्यक्ष व्यय पत्रिकाओं के प्रकाशन के लिए सहायक-अनुदान	1,21,743.00
			13,075.00
		जोड़ 'झ'	8,77,621.00

1	2	1	2
पिछले पृष्ठ से	1,85,43,015.00	**सामाजिक विज्ञानों में अनुसंधान करने वाली अनुसंधान संस्थाओं को अनुरक्षण और विकास अनुदान**	
		1. विकास अध्ययन केन्द्र, त्रिवेन्द्रम	6,00,000.00
		2. सामाजिक तथा आर्थिक परिवर्तन के लिए संस्थान, बंगलौर	7,50,000.00
		3. सामाजिक विज्ञान अध्ययन केन्द्र, कलकत्ता	5,32,292.00
		4. आर्थिक विकास संस्थान, दिल्ली	5,71,634.00
		5. विकासशील सोसायटियों के अध्ययन के लिए केन्द्र, दिल्ली	8,50,248.00
		6. ए० एन० एस० सामाजिक अध्ययन संस्थान, पटना	3,00,000.00
		7. गांधी अध्ययन संस्थान, वाराणसी	6,61.300.00
		8. लोक उद्यम संस्थान, हैदराबाद	75,000.00

1	2	1	2
पिछले पृष्ठ से	1,85,43,015,00	9. क्षेत्रीय विकास केन्द्र, सूरत	2,42,500.00
		10. सरदार पटेल सामाजिक विज्ञान तथा आर्थिक अनुसंधान संस्थान, अहमदाबाद	4,06,584.00
		11. मद्रास विकास अध्ययन संस्थान, मद्रास	1,72,372.00
		12. जी० बी० पन्त सामाजिक विज्ञान अनुसंधान संस्थान, इलाहाबाद	2,00,417.00
		13. गिरि आर्थिक विकास तथा औद्योगिक संबंध संस्थान, लखनऊ	2,59.500.00
		14. भारतीय शिक्षा संस्थान, पूना	1,95,500.00
		15. नीति अनुसंधान केन्द्र, नई दिल्ली	1,82,654.00
		जोड़	60,00,001.00
		ट—अन्य कार्यक्रम	
		समाज विज्ञानियों के व्यावसायिक संगठनों को अनुरक्षण और विकास अनुदान भा०	

1	2	1	2
पिछले पृष्ठ से	1,85,43,015.00	सा० वि० अ० प० द्वारा आयोजित सेमिनार/सम्मेलन	64,952.00
		सहायक अनुदान	1,62,761.00
		प्रत्यक्ष खर्च	64,496.00
		अक्षय निधि के निर्माण के लिए अनुदान	25,000.00
			3,17,209.00
		फोर्ड फाउन्डेशन अनुदानों में से व्यय	
		भारत के बाहर स्टाफ का प्रशिक्षण और विदेश में भारतीय समाज विज्ञानियों तथा भारत आमंत्रित विदेशी समाज विज्ञानियों की अन्तर्राष्ट्रीय यात्रा	7,29,393.00
		पुस्तकों तथा अन्य सामग्री की प्राप्ति सहित क्षेत्रीय तथा राज्य भा० सा० वि० अनु० परि० केन्द्रों, प्रलेखन केन्द्रों का विकास आधार सामग्री अभिलेखागार का विकास	2,91,886.00
		उपस्कर की खरीद	59,275.00
		जोड़ 'ट'	13,97,763.00

1	2	1	2
पिछले पृष्ठ से	1,85,43,015.00	**ठ—ऋण जमा तथा पेशगी**	
		स्टाफ को ऋण :	
		(i) वाहन खरीदने के लिए	8,250.00
		(ii) त्योहार पेशगी	2,500.00
		अन्य पेशगियां	
		अनुसंधान अनुदान पेशगी	42,858.00
		अनुसंधान सर्वेक्षण पेशगी	19,850.00
		अन्य विविध पेशगी (किराए के लिए पेशगी सहित)	1,34,527.00
			2,07,985.00
		निर्वाह निधि :	
		(क) परिषद् का अंशदान	718.00
		जोड़ 'ठ'	2,08,703.00
		ड—पूंजीगत व्यय	
		फर्नीचर तथा उपस्कर	66,906.00
		पुस्तकालय की पुस्तकें	94,821.00
		जोड़ 'ड'	1,61,727.00

1	2	1	2
		ढ—अन्य संगठनों की ओर से भुगतान	
		राष्ट्रीय आयोजन में कल्याण की एक इकाई के रूप में परिवार के संबंध में क्षेत्रीय एशियाई सम्मेलन	96,359.00
		कुल संवितरण (क से ढ तक)	1,79,30,096.00
		ण—अन्त में बकाया (31.3.78)	
		(क) मुख्य रोकड़ बही (स्टेट बैंक आफ इंडियां तथा यूनाइटिड कामर्शियल बैंक में जमा बकाया राशि)	2,00,896.00
		(ख) स्टेट बैंक आफ इंडिया, नई दिल्ली में रुपयों में डालर रोकड़ बही लेखा	4,12,023.00
जोड़	1,85,43,015.00	जोड़ 'ण'	1,85,43,015.00

आज की तिथि को हमारी रिपोर्ट के अनुसार जांचा गया और सही पाया गया ।

हस्ताक्षर
(एन० रामचन्द्रन)
वित्तीय सलाहकार और मुख्य
लेखाधिकारी
भारतीय सामाजिक विज्ञान
अनुसंधान परिषद

हस्ताक्षर
(टी० एन० मदान)
सदस्य सचिव
भारतीय सामाजिक विज्ञान
अनुसंधान परिषद

हस्ताक्षर
(ठाकुर वैद्यनाथ ऐय्यर)
चार्टर्ड लेखाकार

फ्लैट नं० 3, थापर हाऊस
124, जनपथ, नई दिल्ली-1
दिनांक : जनवरी 5, 1979

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

क—प्रशासन का एकीकरण

(अन्य प्रभार-1977-78)

1.	वाहन	4,485.00
2.	डाक-शुल्क और डाक टिकट	73,947.00
3.	टेलीफोन	84,324.00
4.	के० स० स्वा० से०	1,438.00
5.	विज्ञापन	14,539.00
6.	टाइपराइटरों का किराया-खरीद	7,291.00
7.	वर्दियां	2,603.00
8.	धुलाई खर्च	213.00
9.	लेखन-सामग्री	1,02,851.00
10.	एयर कंडीशनर का रख-रखाव	3,528.00
11.	स्टाफ कार	4,783.00
12.	पैट्रोल	21,799.00
13.	दैनिक मजदूरी वाला स्टाफ	4,668.00
14.	बैंक का कमीशन	1,313.00
15.	ढुलाई	713.00
16.	फर्नीचर की मरम्मत	1,917.00
17.	विविध	18,703.00
17.	साईकिलों की मरम्मत	180.00
	जोड़ कुल रु०	3,49,295.00

ख—अनुसंधान अनुदान-अन्य प्रभार 1977-78

1. परामर्शदाताओं को लेखन-सामग्री तथा विधि	12·00
जोड़ रु०	12·00

हस्ताक्षर (एन० रामचन्द्रन्) वित्तीय सलाहकार और मुख्य लेखाधिकारी, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद	हस्ताक्षर (टी० एन० मदान) सदस्य-सचिव भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद

हस्ताक्षर
चार्टर्ड लेखपाल

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसधान परिषद, नई दिल्ली

छ —प्रलेखन-अन्य प्रभार-1977-78

1.	दैनिक मजदूरी	3,718·00
2.	समाचार-पत्र	544·00
3.	पुस्तकों की जिल्दसाजी	1,018·00
4.	वाहन और ढुलाई	1,059·00
5.	कारोबारी जवाबी कूपन	1,185·00
6.	पुस्तिका-बक्से तथा सजावट का अन्य सामान	44,095·00
7.	विविध	10,655·00
	जोड़ रु०	62,274·00

ज—आंकड़ा अभिलेखागार-अन्य प्रभार 77-78

1.	आई० बी० एम० मशीनों का रख-रखाव	20,851·00
2,	कम्प्यूटिंग प्रभार	1,932·00
3.	विविध	4,720·00
	जोड़ रु०	27,503·00

झ—प्रकाशन—अन्य प्रभार—1977-78

1.	कागज की लागत	1,67,772·00
2.	वाहन और ढुलाई	412·00

3.	लेखन सामग्री और विविध	3,597·00
	जोड़ रु०	1,71,781·00

हस्ताक्षर
(एन० रामचन्द्रन)
वित्तीय सलाहकार और
मुख्य लेखाधिकारी
भारतीय सामाजिक विज्ञान
अनुसंधान परिषद

हस्ताक्षर
(टी० एन० मदान)
सदस्य-सचिव
भारतीय सामाजिक विज्ञान
अनुसंधान परिषद

हस्ताक्षर
चार्टर्ड लेखपाल

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

विविध प्राप्तियों का विवरण 77-78

1.	कागज की लागत		6,191.00
2.	अनुदान का अव्ययित शेष विदेशी यात्रा अनुदान का अव्ययित शेष इसमें शामिल है (कुल 21,577.01 रु०)		1,55,015.00
3.	भवन का किराया		21,909.00
4.	छुट्टी वेतन तथा पेंशन के निमित प्राप्ति-अंशदान		7,970.00
5.	गत वर्ष के बेभुनाए चैक		16,492.00
6.	रद्दी कागज की बिक्री		610.00
7.	विविध प्राप्तियां		7,067.00
8.	भारतीय शिक्षा संस्थान, पुणे के लिए यूनेस्को से प्राप्तियां		16,000.00
		जोड़ रु०	2,31,254.00

हस्ताक्षर
(एन० राचन्द्रन)
वित्तीय सलाहकार तथा
मुख्य लेखाधिकारी
भारतीय सामाजिक विज्ञान
अनुसंधान परिषद

हस्ताक्षर
(टी० एन० मदान)
सदस्य-सचिव
भारतीय सामाजिक विज्ञान
अनुसंधान परिषद

हस्ताक्षर
चार्टर्ड लेखपाल

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

31.3.1978 को देयताओं का वितरण

1.	**पूंजीगत अनुदान**		
	(क) शुरू में बकाया	17,27,929	
	(ख) वर्ष में जमा	—	
	(ग) अन्त में बकाया	17,27,926	17,27,926
2.	**अनावर्ती अनुदान**		
	(क) शुरू में बकाया	27,44,161	
	(ख) वर्ष में जमा	2,21,002	
	(ग) अन्त में बकाया	29,65,163	29,65,163
3.	**पेंशन आरक्षित निधि**		
	(क) शुरू में बकाया	1,68,388	
	(ख) वर्ष 1977-78 में अर्जित ब्याज	17,358	
	(ग) अन्त में बकाया (संलग्न अनुसूची-1 के अनुसार)	1,85,773	1,85,773
4.	**निर्वाह निधि**		
	(संलग्न अनुसूची 2 के अनुसार)		3,83,193

5. प्रतिभूति जमा (संलग्न अनुसूची 3 के अनुसार)		1,404
	जोड़	52,63,459

हस्ताक्षर
(एन० रामचन्द्रन)
वित्तीय सलाहकार तथा मुख्य लेखाधिकारी
भारतीय सामाजिक विज्ञान
अनुसंधान परिषद

हस्ताक्षर
(टी० एन० मदान)
सदस्य सचिव
भारतीय सामाजिक विज्ञान
अनुसंधान परिषद

हस्ताक्षर
चार्टर्ड लेखाकार

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसधान परिषद, नई दिल्ली

31-3-78 को आस्तियों का विवरण

1.	**भूमि और भवन**		
	(क) शुरू में बकाया	17,27,926	
	(ख) जमा : वर्ष में व्यय	—	
	(ग) अन्त में बकाया	17,27,926	17,27,926
2.	**वाहन (स्टाफ कार आदि)**		
	(क) शुरू में बकाया	63,910	
	(ख) जमा : वर्ष के दौरान	—	
	(ग) अन्त में बकाया	63,910	63,910
3.	**फर्नीचर और साज सामान**		
	(क) शुरू में बकाया	23,13,618	
	(ख) जमा : वर्ष के दौरान	1,26,181	
	(ग) अन्त में बकाया	24,39,799	24,39,799
4.	**पुस्तकालय की पुस्तकें**		
	(क) शुरू में बाकाया	3,66,632	
	(ख) जमा : वर्ष के दौरान	94.821	

(ग) अन्त में बकाया	4,61,453	4,61,453

5. निवेश

(क) पेंशन आरक्षित निधि (सावधि जमा में)		
(i) शुरू में बकाया	1,64,500	
(ii) जमा : वर्ष के दौरान	—	
(iii) अन्त में बकाया	1,64,500	1,64,500
(ख) भा० सा० वि० अ० प० निर्वाह निधि (सावधि जमा में)		
(i) शुरू में बकाया	3,47,000	
(ii) जमा : वर्ष के दौरान	28,000	
(iii) अन्त में बकाया	3,75,000	3,75,000

6. बचत बैंक खाते में शेष

(क) पेंशन आरक्षित निधि	21,273	
(ख) निर्वाह निधि	8,193	
(ग) कुल जोड़	29,466	29,466

7. समूल्य प्रकाशन

(क) अन्य समूल्य प्रकाशन	
(i) शुरू में बकाया	6,74,838
(ii) जमा : इस वर्ष में विभागी प्रकाशनों की कीमत	2,98,679

(iii) अन्त में बकाया	9,73,517	9,73,517
(ख) अन्य समूल्य प्रकाशन		
(i) शुरू में बकाया	3,58,791	
(ii) जमा : वर्ष में पूरे किए गए	80,292	
(iii) अन्त में बकाया	4,39,083	4,39,083
(ग) समूल्य प्रकाशन जिनके संबंध में कार्य चल रहा है ।		
(i) शुरू में बकाया	26,495	
(ii) जमा : वर्ष के दौरान	—	
(iii) समायोजित राशि को घटाकर	15,840	
(iv) अन्त में बकाया	13,655	13,655
8. छपाई के कागज का स्टाक		
(अनुसूची-4 संलग्न है)		2,02,802
9. स्टाफ को ऋण		
(क) स्टाफ को वाहन के लिए ऋण		
(i) शुरू में बकाया	5,380	
(ii) वर्ष के दौरान की गई अदायगी	8,250	
(iii) जोड़	13,630	
(iv) वर्ष के दौरान समायोजित	5,230	
(v) अन्त में बकाया	8,400	8,400

(ख) त्योहार पेशगी		
(i) शुरू में बकाया	1,880	
(ii) वर्ष के दौरान की गई अदायगी	2,500	
(iii) जोड़	4,380	
(iv) समायोजित	2,975	
(v) अन्त में बकाया	1,405	1,405
(ग) छुट्टी वेतन की एवज में पेशगी		
(i) शुरू में बकाया		
(ii) वर्ष के दौरान की गई अदायगी	1,277	
(iii) वर्ष के दौरान समायोजित	1,277	
(iv) अन्त में बकाया	—	कुछ नहीं

10. **जमा और पेशगी**

क-अन्य पेशगी

(क) शुरू में बकाया	3,06,518	
(ख) जमा वर्ष के दौरान की गई अदायगी	3,92,218	
(ग) जोड़	6,98,736	
(घ) समायोजित को घटाकर	3,71,555	
(ङ) अन्त में बकाया	3,27,181	3,27,181

(ख) क्षेत्रीय केन्द्रों को पेशग ि

(क) शुरू में बकाया	2,26,350	
(ख) वर्ष के दौरान की गई अदायगी	—	
(ग) जोड़	2,26,350	

(घ) वर्ष के दौरान समायोजित	1,89,896	
(ङ) अन्त में बकाया	36,454	36,454

(ग) जमा कार्य के लिए पेशगी

(क) शुरू में बकाया	6,62,300	
(ख) वर्ष के दौरान की गई अदायगी	—	
(ग) जोड़	6,62,300	
(घ) वर्ष के दौरान समायोजित	—	
(ङ) अन्त में बकाया	6,62,300	6,62,300

(घ) प्रकाशकों की पेशगी

(क) शुरू में बकाया	29,495	
(ख) वर्ष के दौरान की गई अदायगी	—	
(ग) जोड़	29,495	
(घ) वर्ष के दौरान समायोजित	15,840	
(ङ) अन्त में बकाया	13,655	13,655

(ङ) शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय की ओर से पेशगी

(क) शुरू में बकाया	346	
(ख) वर्ष के दौरान की गई अदायगी	—	
(ग) जोड़	346	
(घ) वर्ष के दौरान समायोजित	—	
(ङ) अन्त में बकाया	346	346

(च) राष्ट्रीय आयोजन में कल्याण इकाई के रूप में परिवार के संबंध में क्षेत्रीय एशियाई सम्मेलन के निमित पेशगी		
(क) शुरू में बकाया	4,239	
(ख) वर्ष 1977-78 में प्राप्त राशि	1,70,478	
(ग) जोड़	1,74,717	
(घ) राष्ट्रीय आयोजन में कल्याण इकाई के रूप में परिवार के संबंध में सम्मेलन के लिए की गई अदायगी	96,359	
(ङ) अन्त में बकाया	78,358	78,358
11. रोकड़ और बैंक शेष		
(क) बैंक में रोकड़ (मुख्य चालू खाता)	2,00,896	
(ख) बैंक में रोकड़ (डालर, रोकड़ वही भारत में रुपए में खाता)	4,12,023	
(ग) डाक टिकट (टेलीग्राफ कार्यालय में जमा)	1,500	
(घ) अन्त में बकाया	6,14,419	6,14,419
जोड़ रु०		86,33,629

हस्ताक्षर
(एन० रामचन्द्रन)
वित्तीय सलाहकार तथा मुख्य लेखाधिकारी
भारतीय सामाजिक विज्ञान
अनुसंधान परिषद

हस्ताक्षर
(टी० एन० मदान)
सदस्य सचिए
भारतीय सामाजिक विज्ञान
अनुसंधान परिषद

हस्ताक्षर
चार्टर्ड लेखाकार

अनुसूची I

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

1977-78 वर्ष के लिए पेंशन आरक्षित निधि की अनुसूची

1.	शुरू में बकाया	1,68,388
2.	वर्ष 77-78 तक अर्जित ब्याज	17,385
	कुल जोड़ रु०	1,85,773

ब्यौरा

1.	अब तक सावधि जमा रसीदों में लगाई गई निधियां	1,64,500
1.	भा० सा० वि० अ० प० बचत बैंक खाते में पड़ी राशि	21,273
	जोड़ रु०	1,85,773

हस्ताक्षर
(एन० रामचन्द्रन)
वित्तीय सलाहकार और मुख्य लेखाधिकारी
भारतीय सामाजिक विज्ञान
अनुसंधान परिषद

हस्ताक्षर
(टी० एन० मदान)
सदस्य सचिव
भारतीय सामाजिक विज्ञान
अनुसंधान परिषद

हस्ताक्षर
चार्टर्ड लेखाकार

अनुसूची 1.01

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

पेंशन आरक्षित निधि लेखा-77-78 के अन्तर्गत अर्जित व्याज दर्शाने वाला विवरण

क्रम सं०		सावधि जमा रसीद सं०	अर्जित ब्याज
1.	एफ	096306	450 रु०
2.	ए०	232982	700 रु०
3.	एफ	096813	600 रु०
4.	सी	823244	3,000 रु०
5.	सी	011668	2,900 रु०
6.	सी	923980	2,800 रु०
7.	एफ	095951	4,700 रु०
8.	एफ	096323	1,400 रु०
	वर्ष 1977-78 तक बचत बैंक खाते में अर्जित ब्याज		835 रु०
		जोड़ रु०	17,385 रु०

हस्ताक्षर
(एन० रामचन्द्रन)
वित्तीय सलाहकार और मुख्य लेखाधिकारी
भारतीय सामाजिक विज्ञान
अनुसंधान परिषद

हस्ताक्षर
(टी० एन० मदान)
सदस्य सचिव
भारतीय सामाजिक विज्ञान
अनुसंधान परिषद

हस्ताक्षर
चार्टर्ड लेखाकार

वित्तीय वर्ष 1977-78 के लिए निर्वाह भा० सा० वि० अ० प० के निधि खाते की अनुसूची

क्रम सं०	विवरण	अंशदान और धन वापसी परिषद का अंशदान की वसूल		जोड़	विवरण
क	(i) शुरू में बकाया (1.4.77)	—	—	3,83,506	(i) सावधि जमा रसीद में 3,75,000 रु० लगाया गया
	(ii) जमा : वर्ष के दौरान	1,28,429	3,449	1,31,878	
	(iii) नि० नि० बकाया आदि पर ब्याज	—	—	27,908	(ii) बचत बैंक लेखा में 8,193 रु० की राशि
	(iv) नि० नि बकाया पर बोनस	—	—	923	
ख	वर्ष के दौरान की गई अदायगी को घटाकर			5,44,215 रु०	3,83,193 रु०

(i) अंतिम अदायगी	81,348	
(ii) अस्थायी पेशगी	79,674	
	1,61,002	1,61,002
अन्त में बकाया		3,83,193

हस्ताक्षर
(एन० रामचन्द्रन)
वित्तीय सलाहकार तथा मुख्य लेखाधिकारी
भारतीय सामाजिक विज्ञान
अनुसंधान परिषद

हस्ताक्षर
चार्टर्ड लेखाकार

हस्ताक्षर
(टी० एन० मदान)
सदस्य-सचिव
भारतीय सामाजिक विकास
अनुसंधान परिषद

वर्ष के दौरान भा० सा० वि० अ० प० के नि० नि० खाते में से की गई अंतिम अदायगियों का विवरण

क्रम० सं०	खाता संख्या	राशि
1.	एस० आर०/पी० एफ०/50	30 रु०
2.	एस० आर०/पी० एफ०/60	5,712 रु०
3.	एस० आर०/पी० एफ०/77	22,995 रु०
4.	एस० आर०/पी० एफ०/79	39,701 रु०
5.	एस० आर०/पी०एफ०/110	1,723 रु०
6.	एस० आर०/पी०एफ०/149	1,549 रु०
7.	एस० आर०/पी०एफ०/153	1,232 रु०
8.	एस० आर०/पी०एफ०/157	201 रु०
9.	एस० आर०/पी०एफ०/164	1,855 रु०
10.	एस० आर०/पी० एफ०/172	750 रु०
11.	एस० आर०/पी० एफ०/174	5,482 रु०
12.	एस० आर०/पी० एफ०/204	76 रु०
13.	एस० आर०/पी० एफ०/210	42 रु०
	जोड़ रु०	81,348 रु०

हस्ताक्षर
(एन० रामचन्द्रन)
वित्तीय सलाहकार और
मुख्य लेखाधिकारी
भारतीय सामाजिक विज्ञान
अनुसंधान परिषद

हस्ताक्षर
(टी० एन० मदान)
सदस्य-सचिव
भारतीय सामाजिक विज्ञान
अनुसंधान परिषद

हस्ताक्षर
चार्टर्ड लेखाकार

अनुसूची 2.02

वर्ष 1977-78 के दौरान भा० सा० वि० अ० प० के निर्वाह निधि खाते में से की गई अस्थायी पेशगियों का विवरण

क्रम सं०	खाता सं०	राशि
1.	एस० आर०/पी० एफ०/ 2	2,375 रु०
2.	एस० आर०/पी० एफ०/ 9	500 रु०
3.	एस० आर०/पी० एफ०/22	1,000 रु०
4.	एस० आर०/पी० एफ०/27	2,592 रु०
5.	एस० आर०/पी० एफ०/28	300 रु०
6.	एस० आर०/पी० एफ०/32	1,560 रु०
7.	एस० आर०/पी० एफ०/38	1,300 रु०
8.	एस० आर०/पी० एफ०/41	1,800 रु०
9.	एस० आर०/पी० एफ०/42	2,000 रु०
10.	एस० आर०/पी० एफ०/44	3,000 रु०
11.	एस० आर०/पी० एफ०/47	600 रु०
12.	एस० आर०/पी० एम०/52	7,200 रु०
13.	एस० आर०/पी० एफ०/63	1,692 रु०
14.	एस० आर०/पी० एफ०/68	1,503 रु०
15.	एस० आर०/पी० एफ०/73	7,200 रु०
16.	एस० आर०/पी० एफ०/75	711 रु०
17.	एस० आर०/पी० एफ०/91	1,000 रु०
18.	एस० आर०/पी० एफ०/97	1,110 रु०
19.	एस० आर०/पी०एफ०/103	1,200 रु०
20.	एस० आर०/पी०एफ०/104	1,512 रु०
21.	एस० आर०/पी०एफ०/126	217 रु०
22.	एस० आर०/पी०एफ०/129	18,000 रु०
23.	एस० आर०/पी०एफ०/130	2,000 रु०
24.	एस० आर०/पी०एफ०/131	3,625 रु०
25.	एस० आर०/पी०एफ०/135	2,000 रु०

26.	एस० आर०/पी०एफ०/138	500 रु०
27.	एस० आर०/पी०एफ०/143	700 रु०
28.	एस० आर०/पी०एफ०/145	500 रु०
29.	एस० आर०/पी०एफ०/152	2,777 रु०
30.	एस० आर०/पी०एफ०/156	357 रु०
31.	एस० आर०/पी०एफ०/161	5,100 रु०
32.	एस० आर०/पी०एफ०/162	500 रु०
33.	एस० आर०/पी०एफ०/168	2,100 रु०
34.	एस० आर०/पी०एफ०/191	143 रु०
35.	एस० आर०/पी०एफ०/196	1,000 रु०
	जोड़ रु०	79,674 रु०

हस्ताक्षर
(एन० रामचन्द्रन)
वित्तीय सलाहकार और
मुख्य लेखाधिकारी
भारतीय सामाजिक विज्ञान
अनुसंधान परिषद

हस्ताक्षर
(टी० एन० मदान)
सदस्य-सचिव
भारतीय सामाजिक विज्ञान
अनुसंधान परिषद

हस्ताक्षर
चार्टर्ड लेखाकार

अनुसूची 2.03

वर्ष 1977-78 के दौरान नि० नि० खाते के अन्तगत सावधि जमा रसीदों पर अर्जित ब्याज को दर्शाने वाला विवरण

क्रम सं०		सावधि जमा रसीद	अर्जित ब्याज
1.	एफ० ओ०	96302	800.00
2.	एफ० ओ०	96303	200.00
3.	एफ० ओ०	96304	100.00
4.	एफ० ओ०	96305	100.00
5.	एफ० ओ०	96384	100.00
6.	एफ० ओ०	96465	100.00
7.	एफ० ओ०	96575	200.00
8.	एफ० ओ०	96576	200.00
9.	ए०	232915	33.33
10.	एफ० ओ०	96678	200.00
11.	ए०	232977	291.66
12.	ए०	233046	291.66
13.	ए०	233176	1,300.00
14.	ए०	233229	1,083.33
15.	सी० ओ०	11663	1,300.00
16.	बी०	764524	500.00
17.	सी०	823296	1,500.00
18.	सी०	823373	1,500.00
19.	सी०	823497	2,000.00
20.	सी०	823673	5,000.00
21.	सी०	823967	5,000.00
22.	एफ० ओ०	95754	4,000.00
23.	एफ० ओ०	96012	5,000.00

24.	एफ० ओ०	96322	3,500.00
25.	एफ० ओ०	96753	250.00
26.	एफ० ओ०	96956	250.00
		जोड़ रु०	34,799.98

हस्ताक्षर
(एन० रामचन्द्रन)
वित्तीय सलाहकार और
मुख्य लेखाधिकार
भारतीय सामाजिक विज्ञान
अनुसंधान परिषद

हस्ताक्षर
(टी० एन० मदान)
सदस्य-सचिव
भारतीय सामाजिक विज्ञान
अनुसंधान परिषद

हस्ताक्षर
चार्टर्ड लेखाकार

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली
31.3.1978 प्रतिभूति जमा की अनुसूची

शुरू में बकाया	1,404.00
वर्ष के दौरान प्राप्तियां	—
जोड़	1,404.00
वर्ष के दौरान की गई अदायगियां	—
अन्त में बकाया	1,404.00

बकाया प्रतिभूतियों की जमा का विवरण

(i) मैसर्स एल० एस० डेम्बले बदर्श	350.00
(ii) एस्टेट आफिस, नई दिल्ली	54.00
(iii) मैसर्स राम बुक बाईंडिंग हाउस	500.00
(iv) मैसर्स विकास बाईंडिंग हाउस	500.00
जोड़ : रु०	1,404.00

हस्ताक्षर
(एन० रामचन्द्रन)
वित्तीय सलाहकार और मुख्य लेखाधिकारी
भारतीय सामाजिक विज्ञान
अनुसंधान परिषद

हस्ताक्षर
(टी० एन मदान)
सदस्य सचिव
भारतीय सामाजिक विज्ञान
अनुसंधान परिषद

हस्ताक्षर
चार्टर्ड लेखाधिकारी

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

31 मार्च 1978 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए छपाई के कागज के स्टाक की अनुसूची

शुरू में बकाया		1,15,323.00
वर्ष 1977-78 के दौरान खरीद		1,67,771.00
जोड़	रु०	2,83,094.00
वर्ष 1977-78 में हुई खपत को घटा कर		80,292.00
अन्त में बकाया	रु०	2,02,802.00

हस्ताक्षार
(एन० राजन्द्रन)
वित्तीय सलाहकार तथा मुख्य लेखाधिकारी
भारतीय सामाजिक विज्ञान
अनुसंधान परिषद

हस्ताक्षर
(टी० एन० मदान)
सदस्य सचिव
भारतीय सामाजिक विज्ञान
अनुसंधान परिषद

हस्ताक्षर
चार्टर्ड लेखाधिकारी